कियो करए आप ले
माए ले ने बाप ले

जगदीश प्रसाद मण्डलक विचारोत्तेजक गद्यांश

चयन एवम् सम्पादन

डॉ. उमेश मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

कियो करए आप ले माए ले ने बाप ले (विचारोत्तेजक गद्यांश) संकलन/सम्पादन : डॉ. उमेश मण्डल पल्लवी प्रकाशन

कियो करए आप ले माए ले ने बाप ले

(जगदीश प्रसाद मण्डलक विचारोत्तेजक गद्यांश)

कियो करए आप ले माए ले ने बाप ले

(जगदीश प्रसाद मण्डलक विचारोत्तेजक गद्यांश)

सङ्कलन एवम् सम्पादन

डॉ. उमेश मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

बेरमा/निर्मली

KIYO KARE AAP LE MAE LE NE BAP LE

Compilation by Dr. Umesh Mandal of Select Thoughtful passage of Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN : 978-93-93135-44-5
दाम : 199/- (भा.रू.)
सर्वाधिकार © श्री जगदीश प्रसाद मण्डल
पहिल संस्करण : 2023

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 6200635563; 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार : 847452
अक्षर संयोजन : डॉ. उमेश मण्डल
फोण्ट सोर्स : https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। प्रकाशक अथवा काँपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

भूमिका

'कियो करए आप ले माए ले ने बाप ले', ई कहबी रूपमे अपना ऐठाम चलैत आबि रहल अछि। ऐ कहबीकेँ सुनैत रहल छी बहुत दिन पहिनहिसँ मुदा एकर मर्मकेँ जेना एमहर आबिकऽ बुझि रहलौं अछि तेना पहिने नहि बुझि पेने छेलौं। से ओहिना जेना पैछला दसकमे पढ़ल 'किरदानी' कथाक विषय-वस्तुक हिलोर एमहर आबिकऽ हमरा मनमे उठल। 'किरदानी' कथाकेँ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी प्राय: 2012-13 इस्वीमे लिखलैन। उक्त कथा 'रटनी खढ़' नामक संग्रहमे आरो चारि गोट कथाक संग संग्रहित छैन। ई पाँचो दीर्घ कथा छी। मण्डलजीक दू गोट दीर्घ कथा संग्रह प्रकाशित छैन। प्रथम 'शम्भुदास' जे 2013 इस्वीमे श्रुति प्रकाशन, दिल्लीसँ प्रकाशित भेल छैन आ द्वितीय 'रटनी खढ़', जे 2014 इस्वीमे पल्लवी प्रकाशन, निर्मलीसँ प्रकाशित भेल छैन। 'किरदानी' कथामे समाजक बीचक ओहन किरदानीकेँ उजागर करैत कथाकार सचेत करबाक कोशिश केलैन जे तात्कालिन समयमे अपना समाजकेँ कुबाटपर चढ़ौल जा रहल छल आ चढ़ौलो गेल। नीक जकाँ मोन हएत, आइसँ 10-12 वर्ष पूर्व अपना ऐठाम केतेक जोर-सोरसँ सागवान, महोगनीक वृक्षारोपण, अभियान जकाँ चलि रहल छल। समाज सत्तासँ राज्यसत्ता धरिक स्वर रहै जे उक्त पौघरोपणसँ काफी अर्थोपार्जन होएत। तँए रोपै जाउ। जे कियो रोपए लगला हुनका सभकेँ सरकार दिससँ सहायता सेहो प्रदान कएल जाइन। एक तँ सरकार दिससँ सहायता आ तहूसँ बेसी महत्व रखलक पैघ-पैघ लोकक मुँहक प्रशंसा आ प्रोत्साहन..। सागवानक प्रशंसा, खास लोक सभक मुहसँ विश्वासक एकसंग स्वर बहराइत छल 'मात्र दुइए-चारि वर्षमे पचीस-पचास लाखक लकड़ी होएत.!' एहेन स्थितिमे किए ने लोक हलैस कऽ ओ काज करत। करबो केलक। कएटा

बिडीओ साहैब सभ तँ दू-दू बीघामे सागवानक खेती केलैन। अपनो मन भेल जे किछु गाछ सागवानक लगाबी। मुदा पिताजी मना केलैन। कहलैन जे ऐ चक्करमे नहि पड़ी।

पिताजीक मुहसँ 'चक्कर' सुनि अपने चकरेलौं नहि बल्कि सिकुड़िये गेलौं। किएक तँ एकदिस काबिल लोक सभकेँ देखिऐन जे विश्वासक संग सागवान लगा रहल छला आ दोसर दिस ठाँइ-पठाँइ मनाही.! स्वभाविक रूपमे द्वन्द्वमे पड़ि गेल रही।

ई प्राय: 2007-10 इस्वीक बीचक बात छी। किछुए दिनक पछाइत 'किरदानी' कथा लिखलैन। जइमे 6 गोट पात्र अछि- 1. फुसन काका, 2. रामरूप बाबू, 3. कादम्बरी, 4. इंजीनियर साहैब, 5. डायरेक्टर साहैब आ 6. डॉक्टर साहैब। पात्र सभकेँ देखि बुझि पड़ल जे मात्र गामे-घरक बात नहि, ऐ कथामे गाम-घरसँ बाहरोक बात सभ आएले हएत। ओना ई हमर बचपना कहियौ कि नादानी, छल। तथापि आकर्षित होइत कथाकेँ मनोयोगसँ पढ़लौं। पढ़िते देरी कथाक विषय-वस्तुसँ प्रभावित भऽ अपन द्वन्द्वसँ जेना निकैल कऽ थोड़ेक कात हुअ लागल रही। ओना, सोल्होअना कात नहि भऽ पाबी। घुसैक-फुसैककऽ दसअना-छहअना भऽ जाइत रही।

बीचमे समय निकलल, करीब बारह वर्ष समय आगू बढ़ल। आब बुझबामे आबिए गेल जे केहेन सागवान आ केहेन महोगनीसँ लोक केतेक लाभान्वित भेला अछि। खाएर आर जे भेल से भेल, मुदा अप्पन आत्मविश्वास दसअनासँ बढ़िकऽ सोलहअनापर आबिए गेल।

अहिना मोन पड़ैत अछि हुनक, माने जगदीश प्रसाद मण्डलजीक लिखल 'पछताबा' कथा। ऐ कथाकेँ तक़रीबन 2007-08 इस्वीमे लिखलैन। जे 'गामक जिनगी' पोथीमे संग्रहित भऽ कऽ, श्रुति प्रकाशन, दिल्लीसँ 2009 इस्वीमे प्रकाशित भेल छैन। मण्डलजीक ऐ पोथीमे 18 गोट कथा संग्रहित छैन। सभ कथा अपने-आपमे महत्वपूर्ण छैन। अही पोथी लेल साहित्य अकादेमी, भारत आ साउथ कोरियाक राजदूतावास (स्पॉन्सर सैमसंग इण्डिया लि.) द्वारा 2011 इस्वीमे जगदीश प्रसाद

मण्डलजीकेँ ‘टैगोर साहित्य पुरस्कार’सँ पुरस्कृत कएल गेल छैन।

आजादीक लड़ाइमे योगदान देबएबला, गोली खेलहा परिवारक कथा छी ‘पछताबा’। कथामे पिता शिवनाथ आ पुत्र रघुनाथ मुख्य पात्र छैथ। शिवनाथक पुत्र- पढ़ि-लिखि कऽ इंजीनियर बनला। इंजीनियर रघुनाथ नोकरी करए अमेरिका जेबाक हेतु तैयार होइ छैथ। सासुर पक्षसँ ऐ तरहक निर्णय लेल रघुनाथकेँ प्रोत्साहन भेटै छैन। बेटाकेँ अपन देश छोड़ि आन देश जेबाक निर्णयसँ शिवनाथकेँ दु:ख होइ छैन। दु:ख एतबे नहि होइ छैन जे बेटा आनठाम जा रहल अछि, दु:ख ईहो होइ छैन जे जइ देशक खातिर गोली खेलौं, खून बहौलौं तेकर मोजर बेटाक नजैरमे किछु नहि..। पुछै छथिन- “किए? तोरा-जोकर काज अपना ऐठाम नइ छइ?”

मुदा रघुनाथ किछु ने बाजल आ ने अपना निर्णयमे संशोधन केलक। उच्च शिक्षा प्राप्त रघुनाथक निर्णयकेँ पिता शिवनाथ स्वीकार करैत चुप रहि सकदम्म भऽ गेला। कथाक मूलमे यएह अछि।

मुदा मण्डलजीक लेखन-शैलीक जे विशेषता छैन ओ बुझनिहार बुझिये रहला अछि जे कोनो विषय कि कोनो समस्याकेँ ओ मात्र वर्णन कए पाक-साफ नहि भऽ ओकर कारणकेँ सेहो इमानदारीसँ सोझमे आनै छैथ आ तहिना ओकर निदानक मार्गकेँ, परिस्थिति अनुकूल तात्कालिक दिशा देबाक प्रयास सेहो करिते छैथ। उपरोक्त कथाक जे समस्या अछि तेकर कारणक कड़ीमे निम्न पाँति, जे उक्त कथाक पोथी ‘गामक जिनगी’क पृष्ठ संख्या: 189म सँ उद्धृत अछि-

“नव टेकनोलौजी एने नव जुगक आगमन भेल। नव मशीन नव इंजीनियरकेँ जन्म देलक। मुदा पुरना तकनीको आ इंजीनियरो, अछैते औरुदे, फाँसीपर लटकए लगला। जहिना गामक-गाम हैजासँ मरैए तहिना इंजीनियरक जमात पटपटाए लगला। मुदा दबाइक करखन्ने नहि, जे दबाइ बनौत..!”

प्रसंगक मूल बात ई छल जे जहिना सागवानक नीक-बेजाकेँ मण्डलजी ‘किरदानी’ कथामे जिक्र केलैन, से ओही समयमे जहिया

ओकर खेती लेल अपना ऐठाम घनघोर चहल-पहल छल। तहिना इंजीनियरिंग पढ़ाइक कहियौ कि बदलैत टेकनोलॉजीक परिणाम, एकरो ओही दिनमे रेखांकित केलैन जहिया प्राय: लोकक झुकाउ ओम्हरे छल। रहबो किए ने करत। अपना ऐठामक धारणामे मेडिकल आ इंजीनियरिंगक महत्व बरबैर रहल अछि। जहिना डॉक्टरकेँ लोक महत्व दैत रहैथ तहिना इंजीरियरकेँ सेहो मुदा आइ की अछि? कथाकारक उक्त विचार, अपनो नजैरमे ओतेक विश्वासपरक, ओइ दिनमे, नहि बुझि पड़ै छल। मुदा जहिना उपरोक्त प्रसंगमे दस-बारह वर्षक पछाइत दसअनासँ सोलहअनापर आबि मन मानि गेल, तहिना भेल।

प्रस्तुत पोथीक नामकरण बेर सेहो अहिना भेल। मोन पड़ए लगल दाइक (दादीक) मुँहक सुनल ओ कहबी जे प्राय: ओ बजैत रहैथ। 'कियो करए आप ले' बस एतबए कहि चुप रहि आगू बजै छेली- 'जो, अपन-अपन काज कर गे'। खास कऽ काजक समयमे एना बाजैथ। आ जखन से समय नहि रहै छल, मतलब बैसारी समय रहै छल, तखन बाजैथ- 'कियो करए आप ले माए ले ने बाप ले'। बेस निष्पक्ष स्वभाव हुनक रहैन आ बेस करेजियस रहैथ। नाओं रहैन मकोबती। प्रस्तुत पोथीक नामकरण हुनकहि स्मृतिमे कएल अछि। अत: ऐ पोथीक सेवा हुनकहि समर्पित छैन।

आजुक जे समय बनि गेल अछि, मतलब एक-दोसराक प्रति हमर-अहाँक जे व्यवहारिक क्रिया-कलाप अछि। ओ एहेन भइये गेल अछि जे अहाँसँ हमरा की मतलब। ओना, एहेन परिस्थिति गाम-घरमे तेना भऽ कऽ अखनो नहियेँ बनल अछि। मुदा जखन मनुक्खेक क्रिया-कलापक बात छी, तँ कि गाम-घरकेँ मनुक्खसँ कात करिकऽ देखब, सेहो उचित नहियेँ होएत।

तथापि गाम-घरक परिस्थित दोसर अछि। तहूमे ओइ समयमे, जहिया दादी जीबैत रहैथ। 1998 इस्वीमे 7 मार्चकेँ ओ अपन जीवन यात्राकेँ पूर्ण केलीह। दाइकेँ देखिऐन जे सदिखन हुनकर कान जेना ठाढ़े रहैन। के आएल, के गेल। केकरो जँ कोनो जिनिसक खगता छै आ ओ

अपना लग अछि तँ लाथ किए करबै, मनुक्खक काज मनुक्खकेँ पड़िते छइ.. आदि-आदि। एहेन अनेको चीज हुनकर हमरा मोन पड़ैत रहैए। गाममे केतए की भेल, ऐ सभपर हुनकर धियान सदिखन रहिते छेलैन। कियो अपन कर्तव्यकेँ नहि बुझैथ। आकि कियो सार्वजनिक संसाधनकेँ व्यक्तिगत विकासमे लगा अपनाकेँ काबिल मानैथ। एहेन परिस्थितिक कोनो समाचार सुनिते-देरी दाइक मुहसँ अनायासे निकैल जाइन, 'कियो करए आप ले'। ऐठाम ई नहि बुझब जे हुनका मुँहमे उक्त पाँति लब्ज बनि गेल रहैन। एहेन बात नहि। बात-बातमे कोनो-ने-कोनो कहबी, कोनो-ने-कोनो फकरा, हुनका मुहसँ अहाँ सुनि सकैत रही। अनेको पाँति जेना हुनकर कण्ठमे बैसल रहैन। तइ दिनमे तँ नहि मुदा आब बुझबामे आबि रहल अछि जे हुनकामे मनुक्ख आ समाजक प्रति की सरोकार छेलैन।

अप्पन बचपनाक सम्बन्धमे किछु बात कहए लागल रही। शुरूमे जहिया ऐ क्षेत्रमे माने साहित्य लेखनक क्षेत्रमे आएले रही, ओना, अपने कोनो साहित्यकार नहि, साहित्यकारक एकगोट अदना सेवक छी। सेवक रूपमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक संग ऐ क्षेत्रमे प्राय: 2005-6 इस्वीसँ छी, मुदा गप कहए चाहै छी 2009 इस्वीसँ 2011 इस्वीक बीचक। ओइ समय मण्डलजीक प्रसंग बहुतो रंगक ओहन विचार आगूमे आबए, माने कए गोटाक मुहेँ सुनै छेलिऐ, जेकरा नीक जकाँ बुझिये ने पबैत रही। जेना, 'मण्डलजी खाली गामे-घरक बात रचै छैथ'।

गौर केलाक बाद आब बुझिये रहल छी जे गामेक तँ देश छी। तखन गामक बात मात्र गामेक भेल आकि देशोक भेल। मानि लिअ, कियो रचनाकार वृद्धजनक सघर्षकेँ लिखलैन, माता-पिताक संग सन्तानक बीचक दूरीपर प्रकाश देलैन, किसानक वास्तविक जीवन-संघर्ष आ किसानक नामपर लच्छेदार मिथ्या वाचनकेँ अपन रचनामे समाहित करैत ओकर नीक-बेजाकेँ चिह्नित केलैन। तँ कि हुनका मात्र गाम-घरक बात लिखनिहार कहब कि बुझब बचपना नहि भेल। मुदा ई चीज आब बुझिमे आबि रहल अछि जे वृद्धजन खाली गामेमे नहि, शहरमे सेहो छैथ। माता-

पिता मात्र गामे-घर टामे नहि अपितु शहरमे सेहो छैथ। किसान खाली गामे-घरमे नहि, समुच्चा देशमे छैथ। मुदा ईहो बात सत्य अछिए जे जहिना बुझनिहार-देखनिहार सभ कालखण्डमे सभ रंगक रहलैथ तहिना आइयो छथिए आ आगूओ रहबे करता। ई बात अलग जे बहुत ओहनो लोक सभकालखण्डमे रहबे केलाह अछि जे बुझितो नहि बुझैक टाटक कए सार्वजनिक संसाधनकेँ व्यक्तिगत विकासमे लगा समाजमे मैनजनी करए चाहैत रहला अछि। मुदा तइसँ कोनो एक व्यक्तिकेँ केतेक मतलब। एतबे ने जे 'कियो करए आप ले माए ले ने बाप ले'।

'कियो करए आप ले माए ले ने बाप ले' अर्थात् श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक रचना संसारसँ संकलित विचारणीय गद्यांशक समुच्चय, अपनेक हाथमे अछि। हमर जे कियो फेसबुक मित्र छैथ, सम्भव जे हुनका सभकेँ ऐ पोथीक बहुत अंश देखबामे आबि चुकल होनि। तथापि किछु परिवर्तित स्वरूपक दर्शन पोथीमे अबस्स होएत से आश विश्वासपूर्वक कहि रहल छी।

उक्त विधामे अप्पन ई पाँचम पोथी छी। प्रस्तुत पोथीमे अन्य पोथीक अपेक्षा एक खास अन्तर अछि। अन्य पोथीमे अनेको ठामसँ, माने जगदीश प्रसाद मण्डलजीक अनेको पोथीसँ विचारणीय गद्यांशकेँ संकलित केने छी मुदा ऐ संग्रहमे से नहि, मोटामोटी मात्र दू गोट पोथीसँ संकलित कएल अछि। पहिल 'बासभूमि' आ दोसर 'टकुआटान'सँ। उक्त दुनू पोथीमे 10-10 गोट कथा संकलित अछि। कथा विधामे जगदीश प्रसाद मण्डलजीक क्रमश: ई दुनू 63म, 64म पोथी छिऐन। ओना, जँ सभ विधा मिलाकऽ गप करी, माने जतबा विधामे मण्डलजी लिखलैन अछि, तखन ई दुनू पोथी प्राय: 110-111म स्थानपर होएत।

उपरोक्त दुनू पोथीकेँ मण्डलजी एकलखाइत 31 मार्च 2023सँ 19 जून 2023क बीच लिखलैन अछि। 'बासभूमि'क पहिल कथा 31 मार्च-के लिखलैन आ 'टकुआटान'क अन्तिम कथा 19 जून-के लिखि सम्पन्न केलैन अछि। संयोग एहेन जे तीनू पोथी संगहि-संग 'सगर राति दीप

जरय’क आगामी कथा गोष्ठीक अवसरिपर, नहरी (लौकहा)मे 24 जून 2023क शनि दिन लोकार्पण सेहो होमए जा रहल अछि। अर्थात् ‘बासभूमि’, ‘टकुआटान’ आ ‘कियो करए आप ले माए ले ने बाप ले’। ओना, आरो-आर पोथी सभक लोकार्पण उक्त अवसरिपर होएत, जेना- ‘सल्हैता-गुरुमैता’, ‘सप्तपर्ण’, ‘दिव्य दृष्टि’, ‘मैथिल भैया करू विचार’ आदि-आदि।

मैथिली साहित्य जगतमे ‘सगर राति दीप जरय’ एक ओहन मञ्च अछि जेकरा अहाँ सम्पूर्ण मिथिला कि सम्पूर्ण मैथिलीक मञ्च हृदयसँ कहि सकै छी, जैपर सभ वर्गक, सभ समाजक रचनाकार लोकनि अप्पन मंच बुझि भाग लैत रहला अछि। अत: ई सर्वहारा साहित्यिक-मञ्चक रूपमे सेहो प्रसिद्ध अछि। कतोक विद्वान ऐ तरहक विचार अप्पन उद्बोधनमे व्यक्त करैत रहला अछि।

‘सगर राति दीप जरय’ भरि राति चलएबला कथा गोष्ठीक नाओं छी। प्रसिद्ध साहित्यकार प्रभाष कुमार चौधरीजीक संयोजकत्व आ रमानन्द रेणुजीक अध्यक्षतामे ऐ मञ्चपर पहिल कथागोष्ठीक आयोजन, 1990 इस्वीमे 21 जनवरीक शनिदिन मुजफ्फरपुरमे भेल छल। तहियासँ प्रत्येक तीन मासपर निरन्तर, प्राय: दिसम्बर, मार्च, जून आ सितम्बर महिनाक अन्तिम पहिल-दोसर शनि-के, आयोजित होइत आबि रहल अछि। वर्तमानमे श्री नारायण यादवजीक संयोजकत्वमे आ श्री ललन सल्हैताजीक आयोजकत्वमे आगामी गोष्ठी 24 जून 2023क शनि दिन होबए जा रहल अछि। स्थान- 'श्री सच्चिदानन्द सल्हैता केर निज आवास, नहरी (लौकहा, मधुबनी)

भरि राति चलैबला ऐ गोष्ठीक आरम्भ पोथी लोकार्पणसँ होइत अछि। पछाइत कथा पाठ आ समीक्षाक पाली चलैत अछि। कथाकार लोकनि अप्पन-अप्पन नूतन कथाक पाठ करै छैथ आ तैपर समीक्षक लोकनि त्वरित टिप्पणी करै छथिन। जइसँ अनेको चीज लेखक-सँ-पाठक धरिक नजैरपर अबै छैन। एकसंग केतेको रंगक कथा माने केतेको विषय-

वस्तुक संग आकार-प्रकारक रचना, सभक सोझसँ गुजरैत अछि। सभसँ बेसी लाभ कथाकारकेँ होइ छैन। नीक-बेजा अनेको चीजसँ भेँट होइ छैन जइसँ हुनका कथा लिखैमे जहिना सहायक सिद्ध होइ छैन तहिना मनोबल सेहो बढ़ै छैन। तेतबे नहि, ऐ बहन्ने कथाकारकेँ नियमित रूपेँ कथा सेहो लिखा जाइ छैन। एकर अलावे आरो केतेको लाभ एक-दोसरकेँ होइत अछि।

मैथिली साहित्यमे यएह ओ मञ्च अछि जैपर अनेको श्रोता/पाठकक बीच कथाकार ओ समीक्षक आमने-सामने होइ छैथ। श्रोता/पाठककेँ सेहो टिप्पणी करबाक अवसरि देल जाइ छैन। तँए, ऐ मञ्चकेँ मैथिली कथा-साहित्य-लेखनक वर्कशॉप सेहो कहल जाइत अछि। मञ्चक सभसँ पैघ खासियत ईहो अछि जे ऐठाम उपस्थिति होबए लेल हकार अनिर्वायता नहि अछि। इच्छुक साहित्य प्रेमीकेँ मात्र स्थान ओ दिनांकक जानकारी रहक चाहिऐन, ओ जहीठाम सुनला ओहीठामसँ विदा भऽ गोष्ठीमे भाग लइ छैथ।

राति भरिक ऐ आयोजनसँ केतेको नवांकुर कथाकार सभ धीरे-धीरे नीक-सँ-नीक कथा लिखए लगला अछि। परिणामत: ओ नीक कथाकारक रूपमे जानल-मानल जाइत रहला अछि। ऐठाम एकटा बात महत्वपूर्ण अछि। ओ ई जे नीक कथाकारक माने प्रिय कथाकार मात्र नहि, सर्वजनप्रिय विषय-वस्तुक संग सरोकार रखनिहार कथाकार अछि। मुदा ऐ लेल मंसा-वाचा-कर्मणामे एक-सतहपनक खगता होइत अछि। जइसँ व्यक्तिमे नियमितता अबैत अछि। सगर राति दीप जरय नामक ऐ मञ्चपर नियमित सहभागिता लेल ई अनिवार्य भऽ जाइत अछि।

जय मैथिली.! जय साहित्य.!! आजुक जीवन आजुक साहित्य!!!

- उमेश मण्डल

तुलसी भवन, निर्मली (सुपौल)

22 जून 2023

जाँतक तरौटा जकाँ अखनो ओहिना मिथिला गाड़ल अछि जेना पूर्वजक बीच छेलैन। दुनियाँक नामी आम मालदह, पार्वतीक छाती स्वरूप बेल, लक्ष्मी-सरस्वतीक दाँत सन दानादार दारीम आ कागज सन कागजी नेबो इत्यादि-इत्यादिक रूप-गुणमे की नवपन आएल आकि ओ उपैट रहल अछि.!

बाबाक अमलदारीमे जखन अप्पन जन्म भेल तखन बाबा गार्जन छला। हुनके विचारे परिवार चलै छल। जहिना माए छेली तहिना बाबूओ छला। दादीक परम भक्त माए छेली आ बाबाक भक्त बाबू। जहिना भगवानक भक्त सोल्होअना भगवानपर ओङ्गैठ जाइ छैथ तहिना पितोजी आ माइयो बाबा-दादीपर ओङ्गठल रहैथ। ऐठाम ई नइ बुझब जे द्वापर युगमे महाभारतक लड़ाइयक दुनू खेमामे माने कौरवो आ पाण्डवोक खेमामे रणनीतिपर विचार चलि रहल छल आ अर्जुन नीन भेल सुतल छला तहिना पितोजी आ माइयो सुतल रहैथ। जहिना अर्जुन कृष्णपर ओङ्गठल छला तहिना माता-पिताजी बाबा-बाबीपर, माने कर्म जहिना ज्ञानपर ओङ्गैठ जाइए तहिना।

किसान परिवारमे जन्म भेल अछि। अप्पन वंशक इतिहास तँ बेसी बुझल नहि अछि जे गाममे कहियासँ बास भेल, केना परिवार बनल आ केना कोन रूपक जिनगी बना पूर्वज अप्पन परिवारकेँ ठाढ़ केलैन, मुदा तीन पीढ़ीक तँ बुझल अछिए।

माता-पितासँ बच्चामे ओते सम्बन्ध नहि बनल छल जेते बाबा-दादीसँ रहल। परिवारसँ निकैल खेत-पथारमे माइयो आ बाबूओ काज करए जाइ छला। जहिना दादी परिवारक काज सम्हारै छेली तहिना बाबा खेती-पथारीसँ लऽ कऽ दुआरो-दरबज्जा आ खुट्टा परक मालो-जालक तकतियान करै छला। बाबूकेँ जे काज सुमझा दइ छेलखिन ओ काज बाबू अप्पन अभ्यासानुसार करैत रहैथ। तँए मनमे

एहेन कोनो चिन्तो ने रहै छेलैन जे कोन धानक बीआ कोन नक्षत्रमे पाड़ल जाएत आ कोन रूपक फलक गाछ कोन मासमे जनमबो करत आ ओकरा रोपलो जाएत। तहिना तीमनो-तरकारीक आ दरबज्जापर लगल फूलोक छेलैन।

आने-आन मनुक्ख जकाँ माइयो-बाबूकेँ एहेन भ्रम छेलैन्हे जे जहिना अखन माता-पिताक देख-रेखमे छी तहिना सभ दिन रहब। सभ दिन ओहो रहबे करता आ अपनो रहबे करब। ओना, बर-बेमारीक संग आन-आन माए-बापकेँ मरितो देखिते छेलखिन मुदा तैयो तहिना बुझै छला। भ्रमक कारण ई छेलैन जे कियो साँप कटलासँ जँ मरैए आकि केंसर सन रोगसँ, जेकरा साँप काटत आकि जेकरा केंसर हएत ओ ने मरत। आ जँ अपना ने साँप काटए, ओते सहचेत रही, आ ने केंसर हुअए, तखन मरब किए।

तीन बीघा खेतक किसान बाबा छला। दू बीघा अन्नक खेती करैत रहैथ, बाँकी एक बीघामे घर-घराड़ी, दुआर-दरबज्जासँ लऽ कऽ मालक थैर, अन्नक खरिहाँन, खढ़क खरहोरि, गाछी-कलम सभ मिला कऽ छेलैन।

ऐठाम एकटा बात अछि। गाछी-बिरछी, कलम-बाग, गाछ-बिरीछ आ कलम-गाछक बीचक अन्तर, माने दूरी। जैठाम गाछक समूह भेल ओ भेल गाछी, ओना, आनो-आन माने एकसँ अधिक किस्मक गाछक समूह सेहो गाछी भेबे कएल। मुदा बाबाक अमलदारीमे जे अपना परिवारमे छल, से कहै छी। आमक मासकेँ गुनि, तीन मासक फल आमकेँ मानि नेने छला। तीनू मासक हवा-पानि-ताप तीन रंगक अछिए। तीन हिस्सामे आमक मासकेँ मानि तीन रंगक तीनटा आमक गाछ रोपने रहैथ। बुझल अछिए जे जहिना आम-लोक आमक राजा होइए तहिना आमक फल सेहो फलक राजा छीहे। समय पकड़ाएल तँ खूब फड़त, जँ से नहि पकड़ाएल तँ सपतो खाइले नहि रहत। खाएर जे से, बाबाक समटल परिवार छेलैन। जाबे धरि अपने जवान भेलौं, माने दुरागमन भेल, ताबे धरि पाँचे-छह गोटेक परिवार छल। मुदा अपना अमलदारीमे परिवारमे लोकक बाढ़ि आबि गेल। दुनू परानीक मन मानिते अछि जे बेटा रत्न छी, मुदा भेटैए केकरो-केकरो। फेर अपने मनमे ईहो हुअए जे रत्न तँ बनौलो जाइये सकैए। नमहर आशा मनमे छेलए-हे। बाबाक जहिना अपने तेसर पीढ़ी भेलौं तहिना परिवार सेहो तीन गुणा बढ़िकऽ भऽ गेल अछि।

अप्पन सम्पैतकेँ माने खेतकेँ बाबा अप्पन जीवनमे बान्हि चलबै छला। छोट परिवार छेलैन्हे, जहिना खेबामे शौकिन रहैथ तहिना उपजबैयोमे रहबे करैथ। भाय, जखन अपना हाथे खेती करब तखन अप्पन मनोनुकूल किए ने करब। बाबा अप्पन जीवनकेँ काटि-छाँटिकऽ अप्पन पारिवारिक जीवन बनौने छला। माने ई जे सइयो रंगक अगहनी धानमे मात्र दुइये रंगक धान उपजबै छला। चूड़ा ले वासमती आ भात ले तुलसीफुल। भाय, अपना सभ मैथिल छी किने। मैथिल परिवार ओहन परिवार अछिए, जइमे एक साँझ चूड़े खेबाक चलैन अछि। ई दीगर जे दहीक संग चूड़ा कि दालि-तरकारीक संग चूड़ा आकि भुजल-भिजौल चूड़ा।

बाबाक देखा-देखीसँ अपनो जीवन ओहने बनेबाक विचार मनमे रोपि ओइ पाछू लागि गेलौं। हुनके अमलदारीकसँ माने बाबाक अमलदारीक अन्नो, फलो-फलहरी आ तीमनो-तरकारीक बीआ-बाइल अपने बनबै छी आ साले-साल खेती करै छी। ऐठाम ई नइ बुझब जे मिथिलामे साग-पातसँ लऽ कऽ फलो-फलहरी आ अन्नो-पानिक चर्च दुनियाँक वायुमण्डलमे नइ गनगनाइए, सेहो तँ गनगनाइते अछि। मुदा बाबाक अमलदारीमे जे रूप-गुण आ सोभाव ओइ सभक, माने अन्नो आ फलो-तरकारीक छल, तइमे मिसियो भरि सुधार नइ भऽ सकल। जाँतक तरौटा जकाँ अखनो ओहिना मिथिला गाड़ल अछि जेना पूर्वजक बीच छेलैन। दुनियाँक नामी आम मालदह, पार्वतीक छाती स्वरूप बेल, लक्ष्मी-सरस्वतीक दाँत सन दानादार दारीम आ कागज सन कागजी नेबो इत्यादि-इत्यादिक रूप-गुणमे की नवपन आएल आकि ओ उपैट रहल अछि.!

❑ वाह रे हम

1947 इस्वीक पूर्व जे पशुपालनक स्थिति छल ओ अखनो मिथिलामे जीवित अछि। पानिक अव्यवस्थासँ माने धार-धूरक अनियंत्रित व्यवस्था रहने मिथिलाक ओ स्थिति अखनो बरकरार अछिए जे पूर्वसँ चलि आबि रहल अछि। गाए पालनक लेल हरियर चाराक जरूरत पड़ैए जे खेतमे उपजैए। खेत पानिमे डुमल रहैए, तखन हरियर चारा औत केतएसँ? जखन चारा नहि तखन पशुपालन केना?

मिथिलाक भूमि आइये नहि, अदौसँ पशु-पालन करैत आबि रहली अछि। ओना, पशु सेहो अनेको रूपो आ रंगोक अछिए, कमो-बेस सभ तरहक जानवरक पालन ऐठाम सर्कसक बाघ-सिंहसँ लऽ कऽ बकरी तक होइते आबि रहल अछि। केतबो बाघ बकरीकेँ खाइए वा बघुआएल रहैए तैयो बकरीक वंश कहाँ उपटल अछि। गाइक पालन भेने गाए अप्पन खाँढ़ बनाइये नेने अछि जे मिथिलाक धरोहर छी। बाध-बोनमे भरि-भरि दिन गाए-महींसकेँ चरा किसान खेबाक दूधो आ हर जोतैक बच्छो-बरद बनबैत भोजनसँ उपार्जन तकक ओरियान कइये नेने छला। गौ पालनमे बुद्धदेव यएह चेतौनी देलैन जे ‘भाय, बच्छासँ बरद होइए, जे खेतीक मुख्य साधन छी, तँए गाएकेँ सुरक्षित रखैक अछि।’

अनेको फल-फलहरी, अनेको पशु-पक्षीक पालन, अनेको रंगक अन्न, फूल, फल इत्यादिक सेवा मनुक्ख अप्पन स्वरूपमे करैत आबि रहला अछि, तइमे जे उन्नति हेबा चाही से नहि भऽ कुभेला भेले अछि। गाइक ओहन नस्ल बनि गेल अछि जेकर दूध फुच्चीक नापसँ नापल जाइए। कहब जे अपना ऐठाम फुच्ची छोड़ि दोसर कोनो नाप नइ अछि? से तँ एहेन नापक डोलो-बाल्टीन अछिए जे दस-बीस

किलो एकबेरमे नापि सकै छी। मुदा नपने रहत आ वौउसे ने रहत तँ नापब कथी? खाएर किछु अछि तैयो तँ गाइयेक दूध अछि, जँ खुरचनो भरि गाइक दूध कण्ठतर पहुँचत तँ ओ अमृत पाने भेल किने जे गाइये-महींससँ भेटैए।

गाइयक पालन अपना ऐठाम सतयुगेसँ होइत आबि रहल अछि। जाबे धरि परिवारक गठन नइ भेल छल, ओना अहूमे कहले जा सकैए जे राता-राती परिवारक गठन भेल आ समाजक संग दुनियाँक निर्माण भेल? परिवारक गठनक हजारो बर्खक इतिहास रहले अछि। छिट-फुट रूपमे अखनो अछिए। खाएर अखन से नहि, अखन बस एतबे जे जखन मनुक्ख जंगली रूपमे छला तँ गाइयक शिकार करै छला आ खाइ छला। ओना, आजुक परिवेशमे सेहो एकटा प्रश्न उठिये रहल अछि जे गाए (दूध दइवाली) आ बरद (हर-गाड़ी खिंचैबला) दुनू एक्के वंशक पेटसँ जन्मैए। गाइयक वंश दूध देत, मुदा बरदक वंश की करत? जखन कि गाड़ी-सवारीक रूपमे इंजन-गाड़ी आ खेत जोतैक रूपमे अनेको रंगक इंजन आबि रहल अछि, जेकर गति पशुसँ बहुत बेसी अछि। ऐठाम एकटा प्रश्न विचारणीय अछि।

अपना ऐठाम गाइयक सेवा हजारो बर्खसँ भऽ रहल अछि, तइ वंशमे केतेक सुधार भेल अछि? हजारो बरख पूर्वमे जे फुच्चीक नापसँ गाइयक दूध नापल जाइ छल से अखनो जीवित अछि आकि ओकर परिवर्तित विकसित रूप आबि गेल अछि? जे मालदह आम हजारो बरख पूर्व अपन रूपमे छल ओकर आजुक परिवर्तित-विकसित रूप की अछि? एक नहि अनेको प्रश्न अछि। मिथिलाक जे धरती ऋषि, मुनि, तत्त्ववेत्ताक जन्मभूमि सभ दिनसँ रहल अछि आ अखनो अछिए। गाम-गाममे पैघ-पैघ वैज्ञानिक, दार्शनिक, राजनेता पैदा लइये रहला अछि आ आगूओ लइत रहता। की हुनकर दायित्व मातृभूमिक प्रति किछु ने छैन? ओना, मूल प्रश्न अछि समाज सत्तासँ। समाजक गठनक जे प्रक्रिया अछि ओ एहेन सघन अछि जे एकसूत्रमे आनब जटिल अछिए। दुनियाँक दृष्टिपटलपर मिथिलाक भूमि अखनो ओ रूप धेनहि अछि जे हजारो बरख पूर्वमे रहल। ओना, गाइयक पालनक सेहो अनेको रूप अछि। सुभ्यस्त परिवार, राज्यसत्तासँ जुड़ल जे छला ओ नीक-नीक नस्लक गाए जरूर पोसै छला। मुदा समाजक बहुसंख्यजनक खुट्टापर वएह वंश (गाइयक वंश) जीवित अछि जे हजारो बरख पूर्वमे छल। नीक नस्लक गाए, हुनका सभकेँ माने सुभ्यस्त लोककेँ दू रूपमे उपलब्ध होइ छेलैन, पहिल आन-आन क्षेत्रसँ अनै छला जइसँ अपना खुट्टापर ऐगला वंश तैयार होइ छेलैन, तैसंग दोसर

ईहो छेलैन जे गाम-गाममे केतौ-केतौ दोगला गाए भेने सेहो उपलब्ध होइ छेलैन।

देश स्वतंत्र होइसँ पहिने, माने 1947 इस्वीक पूर्व जे पशुपालनक स्थिति छल ओ अखनो मिथिलामे जीवित अछि। पानिक अव्यवस्थासँ माने धार-धूरक अनियंत्रित व्यवस्था रहने मिथिलाक ओ स्थिति अखनो बरकरार अछिए जे पूर्वसँ चलि आबि रहल अछि। गाए पालनक लेल हरियर चाराक जरूरत पड़ैए जे खेतमे उपजैए। खेत पानिमे डुमल रहैए, तखन हरियर चारा औत केतएसँ? जखन चारा नहि तखन पशुपालन केना? तहिना माछक स्थिति सेहो अछि। गाम-गामक पोखैर बाढ़िक पानिमे भँसिया जाइए.!

देश स्वतंत्र भेलोपरान्त जहिना मिथिलांचलक आन-आन गामक किसान अधनीनू सुतल छला तहिना किसानक देश भारतक सत्ता किसानक जिनगीक लेल तीन-चारि दशक तक सुतल रहल।

जहिना आजादीक पूर्वक किसानक रूप छेलैन तहिना आजादीक पछातियो एक नमहर अन्तराल तक रहलैन। ओना, देश आजाद भेल मुदा देशक शासन सूत्र खण्ड-पखण्ड छल। हजारो देशी राजा आ राजाक छोट भाए जमीन्दार छेलाहे। ओना, किछु सूत्र एहेन छेलैहे जे पूरा देशकेँ एकमे बन्हने छेलाएहो आ अखनो बन्हने अछि।

समाजमे वैचारिक रूपमे जहिना अनेको धारा प्रवाहित भऽ रहल छल तहिना किसानक जीवनमे सेहो छेलैन्हे। देशक पहिल पंचवर्षीय योजनाक समय पानिक लेल जहिना पंजाबक किसान जगला तहिना केरल आ बंगालक किसान खेतक अधिकारक विषमताकेँ मेटबैक दिशामे बढ़ला। ओना, मिथिलांचलक किसान सेहो खेतक विषमताक अधिकारक सम्बन्धमे उठिकऽ ठाढ़ भेला। जेतेटा देश अखन अछि तेतेटा आजादीक समय सेहो छल, मुदा खेतीक समुचित बेवस्था नइ रहने, आन-आन देशसँ अन्नो कीनए पड़िते छल। तैसंग लोकक एहेन स्थिति छेलैन जे भरि पेट कुअन्नो ने भेटै छेलैन। साँझक-साँझ दिनक-दिन भूखल रहै छला। जखन कि अखुनका जकाँ ने एते लोके (जनसंख्या) छल आ ने अन्नक खरचे।

❑ गामसँ गाए उपैट गेल

“परिवारोक ने इज्जत अछि, बौआ।
तुलसीफूल चाउरक भात आ आमिल देल
राहड़िक दालिक जे इज्जत रहल अछि
ओ मड़ुआ रोटी पुरौत।”

नोकरी शुरू केलाक पछाइत माने लाल भायकेँ नोकरी भेला पछाइत, कहियो पत्नीक संग मिलान नइ रहलैन। कम दरमाहाक नोकरी, तैपर पछबा हवाक तेहेन झोंकी उठि गेल अछि जे खेबा-पीबा, ओढ़बा-पहिरबाक संग घरेलू औजार सेहो, माने मसल्ला-पीसैसँ लऽ कऽ तरकारी काटै धरि, तैपर गोरहा-चिपड़ीक जरनाक बदला गैस चूल्हि तक, आबि गेल अछि। रंग-बिरंगक मोबाइल सेहो आबिये गेल अछि। सदिकाल पत्नी माने सुरूचि भौजी, कण्ठपर सवार भऽ कहए लगलैन- “गाममे आनो-आन शिक्षक छैथ कि नहि। हुनका सभक पत्नी-बच्चा आ परिवारकेँ नइ देखै छिऐ।”

थाकल-ठेहियाएल बटोही जकाँ लाल भाय बाजैथ-

“किए ने देखब। कोनो कि आँखि नहि अछि। बाट-बटोही जकाँ आनो-आन गामक लोको आ लोकक किरियो तँ देखिते छी।”

सुरूचि भौजी- “जँ आँखिमे धार रहैत तँ आनो-आनकेँ देखि अपनो करितौं किने?”

पत्नीक प्रश्नक आगूक उत्तर देब लाल भाय उचित नइ बुझलैन। मन मानि गेल छेलैन जे बैसारी लोकक खगता केतौ कमासुत बुते पुरौल हुअए। एक तँ ओहुना लाल भाय जीवनक अनुभवी लोक छैथ तैसंग बी.ए. ऑनर्सक डिग्री सेहो प्राप्त केने छैथ आ तैपर पैंतालीस बर्खक उमेरो बीता नेने छैथ, तँए जिलाभरिक शिक्षक जे एकसंग बहाल भेल रहैथ, सबहक बीच प्रतिष्ठित मानले जाइ छैथ। जिला भरिक शिक्षकक संघ बनले अछि। ओही संघक जवाबदेह पदाधिकारी लाल भाय छैथ। वएह शिक्षक सभक मांगक लेल जे ‘जेल भरो’ अभियान चलि रहल अछि ओही अभियानमे जहल गेल छला जे पनरह दिन जहलमे रहला पछाइत गाम

एला अछि।

एकाएक मनमे उठल जे लाल भाइक लगमे पहुँचला पछाइत ने देखब जे लाल भाइक मुँहक थूथुन लटकल छैन आकि घोघ। मन लटकल छैन आकि नजैर? मुदा दू लग्गा हटलसँ जँ किछु बाजब तँ ओ लगक बात नइ ने भेल। कनी फरिक्केसँ बजलौं-

“भाय, जिनगीक रोहानी मुँहकेँ हरिया देलक हेन।”

अपना जनैत नीके बात बाजल छेलौं, मुदा जहिना चन्दा करैक ढाठ बड़का स्थानक होइए तहिना छोटको स्थानक तँ होइते अछि, तँए बड़का ढाठक कात चेरापूँजी जकाँ बेसी बरखा होउ आकि मधुबनी-दरभंगा जकाँ कम, मुदा किछु-ने-किछु तँ झड़िते अछि। तहिना आन्दोलन छी, किछु-ने-किछु आन्दोलनीकेँ भेटबे करै छैन। लाल भाइक मन, रंग-बिरंगक पोथी रखैक आलमारी जकाँ भइये गेल छैन। मुँह लटकल ऐ दुआरे रहैन जे अबिते अँगनामे पत्नी आ बेटाकेँ मुँहा-मुँही करैत सुनलैन।

ओना, लाल भाइक बोलीमे ओहन टाँस नहियेँ छेलैन जेहेन तेज आगिपर घी टहकौला पछाइत होइए। भाय, ऐठाम ई नइ कहै छी जे काँच घी हुअ आकि पाकल-पकाएल, घी तँ घीबे भेल। मध्यम स्वरमे लाल भाय बाजब शुरू करबे केलैन, तैबीच अपने लगमे पहुँच गेलौं। पएर छुबि प्रणाम केलिऐन। पएर छुबि प्रणाम करैक मतलब अछि ओहन सम्बन्ध अछि, माने एक पथक पथिक, जे जीवनक संगी बनि चलैत रहए। पएर छुलाक असीरवादक रूपमे आकि अप्पन समाजक रूपमे बजला, से लाल भाय जानैथ मुदा मुहसँ निकललैन-

“बौआ, परिवारक लीला देखि-सुनि तंग छी.!”

जहिना हितैषी हित बनि सदिकाल हितौंस दइ छैथ, तहिना अपनो बजलौं-

“भाय, छी तँ गामे-समाजमे ने, तखन जे आमक अँचार जकाँ कुम्हारक कोहीमे नुकाएल रहब, सेहो तँ नीक नहियेँ ने हएत। हमसभ कोन दिन-ले छी।”

हम्मर विचार सुनि लाल भाय नमहर साँस छोड़लैन। एकाएक जेना मनक सभ विकारक हवा निकैल गेलैन। बजला- “आँगन चलह आ दुनू माए-बेटाक बीच

टना-टनीकेँ मेटा दहक।”

ओहुना देखिते छी जे पंच बनैले सेहो घूस दिअ पड़ैए आ सन्त-महात्मा बनैले सेहो देले जाइए, तैठाम जँ अपनाकेँ पंच बनि पनचैती करैक अधिकार लाल भाय अपन परिवार सुमझा देलैन, तखन एहेन गैखौक नइ ने हएब जे नीक छोड़ि अधला करबैन। लाल भाय आगूमे बैसला, सुरूचि भौजी आ मनमोहन माने बेटा सेहो दुनू दिससँ दुनू गोरे ठाढ़ भेल। मनमे उठल जे जँ पहिने मनमोहनकेँ बजैक समय नइ देब आ सुरूचि भौजीकेँ दऽ देबैन तँ कहीं बिच्चेमे ने मनमोहन कण्ठ पकैड़ बकारे बन्न कऽ दइन। तँए पहिने मनमोहनेक मनक विकारकेँ निकालब नीक बुझि बजलौं-

“मनमोहन, किए अनेरे परिवारमे विवाद ठाढ़ करै छह।”

अप्पन पक्ष रखैत मनमोहन बाजल-

“चाचाजी, जखन मड़ुआ रोटीक महत्व, माने मोट अन्नक भैलू बढ़ि गेल अछि तखन पाहुन-परक केँ किए ने खाइले देबैन?”

बिना किछु बजने भौजीकेँ पुछलयैन। भौजी बजली- “परिवारोक ने इज्जत अछि, बौआ। तुलसीफूल चाउरक भात आ आमिल देल राहड़िक दालिक जे इज्जत रहल अछि ओ मड़ुआ रोटी पुरौत।”

बजलौं-

“लाल भाय जहलसँ एला अछि, तँए आइ भरि शान्त रहू। काल्हि भोरमे निचेनसँ सभ बात हेतइ।”

❑ इज्जतपर पड़ि गेल

“भोरू पहर-के जखन खेतीक समाचार सुनबहक, तखन सुनबहक जे कोनो अन्नक खेतीक जखन शुरूआती अवस्था रहैए तखन ओकर भण्डारण केना हएत। यहए तँ छी रेडियो स्टेशनक मरजाद।”

“भाय, जखन रेडियो स्टेशनसँ बैंगन-खेतीक चर्च निसचित रूपेँ सुनए लगलौं तखन मन एते उताहुल भऽ गेल जे बैंगनक खेती छोड़ि दोसर किछु ने करब। एते दिन ने एक फसिला, माने एक सीजनक फसल, बैंगनक उपज छल, आब तँ बारहो मासक भऽ गेल अछि, तखन किए ने सालो भरि एक्के रूपक कर्म करी।”

गम्भीर विचारक ललित भाय छथिए। बजला- “मकशूदन, पहिने रेडियो स्टेशनक विचार कऽ लएह। अखन तक भलेँ तूँ नइ मुहसँ निकाललह हेन जे बैंगनक खेतीमे की सभ समस्या भेलह। केतए कोन काज करक चाही आ बुझै बिना करबे ने केलह।”

ललित भाइक विचार मनमे गड़ल। मुदा करितौं की, पैछला सालक खेती बित गेल। बजलौं-

“पैछला सालक खेतीमे सएह भेल भाय, खेतक उपज तँ गेबे कएल जे अप्पन मेहनतो आ खरचो सभ बुड़ि गेल!”

ब्रह्मज्ञानी जकाँ ललित भाय बजला- “मकशूदन, अज्ञान बड़का पाप सेहो छी आ धर्मक जनक सेहो छीहे। अज्ञानेसँ ज्ञानक जन्म होइए, तँए सृजनकर्ता सेहो छी। लोक कृष्णकेँ माने कारीरूप—अज्ञान—केँ सभ देवतासँ ऊपर अही कारणेँ ने बुझै छैथ।”

रेडियो स्टेशन सुनिते ललित भाइक नरसिंह जेना हुमरलैन, जइसँ बोलीमे कर्कशपन एलैन। बजला- “बौआ मकशूदन, अपना ऐठाम माने अपना देशमे नब्बेसँ ऊपर रेडियो स्टेशन ओहन अछि, जइसँ खेती-पथारीक समाचार हिन्दी वा

अन्य क्षेत्रीय भाषामे प्रसारित होइए, मुदा तोहीं कहह जे आधुनिक ढंगसँ जेहेन खेती हेबा चाही तैबीच दूरी अछि कि नहि?”

अपने तँ दरभंगा रेडियो स्टेशन छोड़ि दोसर स्टेशन सुनै नइ छी तखन देशक आन रेडियो स्टेशनक बात बुझब केना। बजलौं-

“भाय, अहाँक विचार नीक जकाँ नइ बुझलौं।”

तैबीच मने-मन जेना ललित भाइक नरसिंह आरो ऊपर चढ़ि गेलैन। मुँह बिजकबैत बजला-

“भोरुपहर-के खेतीक समाचार सुनै छह?”

अपने तँ मात्र समाचर सुनैले रेडियो सुनै छी जे चाहे राजधानी दिल्लीक समाचार होउ आकि पटनाक, खेल-कूदक समाचार होउ आकि नाच-तमाशाक, सभकेँ समाचार बुझि सुनि लइ छी। ई थोड़े बुझै छी जे मुख्य समाचारमे खेती-बारीक समाचार अखनो धरि नइ आएल अछि तँए ओकर हाल-चाल के बुझत। बजलौं-

“नइ।”

ठोह फाड़ि ललित भाय बजला-

“भोरू पहर-के जखन खेतीक समाचार सुनबहक, तखन सुनबहक जे कोनो अन्नक खेतीक जखन शुरूआती अवस्था रहैए तखन ओकर भण्डारण केना हएत। यहए तँ छी रेडियो स्टेशनक मरजाद।”

ललित भाइक मनक वेग देखि बुझि पड़ल जे कोसी-कमला धारक बाढ़ि जकाँ कहीं रस्तेपर ने मोइन फोड़ि दैथ, तँए विचारमे मोड़ दैत बजलौं-

“भाय, सुनै छी जे बैंगनक तीमन-तरकारी आकि भुरता-तरूआ खेने हौहैट-कलकैल भऽ जाइए, तखन तँ लोक अनेरे ने बैंगनक खेती करैए।”

खेबा-पीबाक बीह बुझनिहार डॉक्टर जकाँ ललित भाइक विचार सेहो जगलैन। बजला-

“मकशूदन, बैंगनमे की गुणधर्म अछि से सुनि लएह। प्रति सौ ग्राम, खेबा-जोकर बैंगनमे, 2.2 मिलीग्राम विटामिन- ‘सी’, 0.3 मिली ग्राम विटामिन ‘ई’,

3.5 माइक्रो ग्राम विटामिन ‘के’, 0.039 मिलीग्राम विटामिन- बी1 ‘थायमिन’, 0.036 मिलीग्राम विटामिन- बी2 ‘रिबोफ्लेविन’, 0.649 मिलीग्राम विटामिन- बी3 ‘नियासिन’, 0.281 मिलीग्राम विटामिन- बी5 ‘पैन्टोथेनिक एसिड’, 0.084 मिलीग्राम विटामिन- बी9 ‘फॉलेट’, 0.023 मिलीग्राम ‘लौह’, 9 मिलीग्राम ‘कैल्शियम’, 14 मिली ग्राम ‘मैग्नेशियम’, 0.232 मिलीग्राम ‘मैंगनीज’, 24 मिलीग्राम ‘फॉस्फोरस’, 239 मिलीग्राम ‘पोटेशियम’, 0.16 मिलीग्राम ‘जिंक’, 0.9 ग्राम ‘प्रोटीन’, 0.18 ग्राम ‘बसा’, 5.88 ग्राम ‘कार्बोहाइट्रेट’, 3.53 ग्राम चिन्नी, 1.3 ग्राम ‘रेशा’ आ 25 किलोकैलोरी ऊर्जा भेटैए।”

ललित भाइक विचार सुनि मन तेना हरिया गेल जे हरहराइत मुहसँ बजा गेल- “भाय, उजरा बैंगन छोड़ि कऽ कहै छी आकि लगा कऽ?”

अपना ऐठाम एकटा कहबी अछिए जे ‘अनका लोक उजरा बैंगन खाइसँ मनाही करैए आ अपने खाइए’।

तैबीच ललित भायकेँ देवकान्त आँखिक इशारासँ कहलकैन जे जइ काजे आएल छी, तेकर चर्चे ने कऽ रहल छी आ दुनियाँ-दारीक गप-सप्पमे मतंग भऽ गेल छी। बेटाक इशारा पेब ललित भाय बजला- “एकटा काजे आएल छी, मकशूदन।”

ललित भाइक विचार सुनि मन ठमैक गेल। ठमकैक कारण भेल जे जे ललित भाय अपने ओहन जीवनानुभवी छैथ जे एक नहि अनेको रंगक जीवनकेँ रग-रग बुझै छैथ, तैठाम किए पुछए एला? मुदा सुहरदे मुहेँ केना कहितिऐन जे अपने तँ ओहन अनुभवी बेकती छी जे अनको जीवन दान करै छी आ...। तँए मनक विचारकेँ मनेमे दाबि ललित भाइक विचारकेँ खोधियबैत बजलौं-

“केहेन काजे आएल छी, भाय साहैब?”

❑ बासभूमि

“नवका शब्दक विचारसँ नइ बुझबहक। पुराणक कथा कहै छिअ। सभटा बुझि जेबहक। महाभारत जखन शुरू करैक विचार कृष्णक मनमे भेलैन तखन नेतृत्वकर्ता ताकए लगला। तइमे अर्जुन, अभिमन्युक संग बड़बड़ी सेहो देखि पड़लैन। वएह बड़बड़ीक समाजो आ सत्तो बनि गेल अछि।”

“दिनेश, की कहियह! बड़बढ़िया आमक भाँजमे पड़ि गेलौं हेन.!”

सुकदेव भाइक मुहसँ ‘बड़बड़िया आम’ सुनिते अप्पन मन सनसना कऽ ओइ खच्चा लग पहुँच गेल, जइ खच्चामे गाए-महींसिक कोन बात जे हाथियो लसैक जाइए। अपने मनमे भेल जे दुनू परानी बीचक बात सुकदेव भाय केना बुझि गेला। माने ई जे अप्पन सासुरक घटना ने भारक बड़बड़िया आमक छल जेकरा गुप्त रखने छेलौं, मुदा से सुकदेव भाय केना बुझि गेला। हारल विचारकेँ मनमे ओहिना गीरह बान्हि रखलौं जहिना सिन्ह पर पकड़ाएल चोर बेसहारा भेलो पछाइत, माने झूठ बजैक सहारासँ वंचित भेलाक बादो जीबैक आशा तँ मनमे रखनहि रहैए, तहिना अप्पन जिनगीक आसकेँ विश्वासक डोरीमे बान्हि बजलौं- “से की, भाय साहैब?”

तीन बर्खसँ थाकल-ठेहियाएल विचार सुकदेव भाइक रहबे करैन, तँए मनो पीताएल छेलैन्हे, बजला- “दिनेश, जहिना परिवार तहिना समाजक लोकेटा किए सत्तो बड़बड़िया आमक कान काटि रहल अछि।”

सुकदेव भाइक विचार सुनि अप्पन मनमे जे सासुरक बड़बड़िया आम छल ओ तर पड़ि गेल। जइसँ मनमे नव विचारक जमीन तैयार भऽ गेल। जमीन तैयार होइते विचार फुटल- “से की, भाय साहैब?”

जहिना धानक खेतमे सोड़ेक-सोड़े धानक बोझ वा आमक गाछीमे रंग-रंगक आमक ढेरी देखि उघनिहारक मन हारिकऽ हेरा लगैए जे केना एते उघब, तहिना सुकदेव भाइक मनमे अनेको विचार प्रश्नक रूपमे ठाढ़ भऽ गेलैन। बजला- “की

कहबह आ केते कहबह.!”

सुकदेव भाइक मनक उद्वेगसँ बुझि पड़ल जे भरिसक कोनो गूढ़ रहस्य हिनका मनमे छैन, जे बाजए तँ चाहि रहला अछि, माने पेटमे तँ छैन, मुदा कण्ठ लग आबि लसैक गेल छैन, तँए बाजि नहि रहला अछि। चुल्हिमे जहिना खोरना वा खोरनीसँ गोइठा वा लकड़ीक जरनाक आगिकेँ खोरल जाइए तहिना खोरैत बजलौं-

“भाय साहैब, नइ बुझि पेब रहल छी।”

मनक बेथा-कथा जहिना सुविज्ञ सुननिहारकेँ सुनबैकाल रसक धार बहबैए तहिना सुकदेव भाइक मनमे सेहो प्रवाहित हुअ लगलैन। बजला- “दिनेश! परिवार, समाज आ सत्ताक जंजाल छोड़ह। अनेरे अपनाकेँ जंजालमे फँसा महजालमे फँसि जाइ सेहो नीक नहियेँ छी।”

इशारा तँ इशारा छी, एक इशारामे एकोटा वस्तु देखौल जाइए आ हजारोटा सेहो देखौले जा सकैए, तैठाम की बुझब। बजलौं- “भाय, अहाँक पेटक बात अपना पेटमे नइ आबि रहल अछि।”

हँसैत सुकदेव भाय बजला- “अखन अप्पन मन ओते थीर नइ अछि जे विहिया-विहियाकऽ कहबह। अखन एतबे बुझह जे जैठाम कानूनक व्याख्या होइए तैठाम शायर-सैरी चलैए आ जैठाम सत्ताक व्याख्या होइए तैठाम यज्ञ-योग-जाप होइए।”

सुकदेव भाइक विचारक गुद-गुदीसँ अपनो मन गुदगुदा गेल। तँए मुहसँ मुस्कान निकलल। बजलौं- “भाय साहैब, नीक जकाँ नइ बुझि पेब रहल छी।”

सुकदेव भाय बजला- “नवका शब्दक विचारसँ नइ बुझबहक। पुराणक कथा कहै छिअ। सभटा बुझि जेबहक। महाभारत जखन शुरू करैक विचार कृष्णक मनमे भेलैन तखन नेतृत्वकर्ता ताकए लगला। तइमे अर्जुन, अभिमन्युक संग बड़बड़ी सेहो देखि पड़लैन। वएह बड़बड़ीक समाजो आ सत्तो बनि गेल अछि।”

बजलौं- “सएह.!”

❑ भारक बड़बड़िया

अप्पन परिवारो आ मालो-जालक थीरी-
थमन देखि मनमे उठल जे अपनासँ केतेको गुणा बेसी
सुधीर काकाकेँ परेशानी होइत हेतैन। अपने तँ ओहन
लोक छीहे जे 'हर मे जएह-सएह मुदा चौकीमे बिहाड़ि'।
जैठाम गामक अधिकांश लोक गृहविहीन भऽ गेलैथ,
तीन-चारि टा माइयो, बच्चाकेँ पानिमे डुबने, सन्तान
विहीन भऽ गेल छैथ, तैठाम अप्पन
दूटा टटघर तँ ठाढ़ अछिए।

बाढ़िक वेगक जे प्रवाह छल तइसँ बुझि पड़ल जे कोसिकन्हे जकाँ भरिसक कोसीक मुँह गाम होइत बनत। जेकरा धारक नासी सेहो कहै छिऐ आ भविष्यमे धारक मुँहक अनुमान सेहो करिते छी। मुदा से भेल नहि। भेल एतबे जे पाँचटा जे बोरिंग गाममे छल ओ माटिसँ भरि गेल। तैसंग चापाकल आ इनारक सेहो भथान भऽ गेल। साल लगैत-लगैत गाम गृहविहीन तँ भइये गेल जे तैपर खेती-बारी तकक उजार सेहो भऽ गेल। गामक सोल्हन्नी लोक निहत्था बनि गेला। जेना कोनो देशक शासन बदलने वा भूकम्प एने गामक जेहेन रूप-रेखा बनैए तहिना सीतापुर गामक शकल-सूरत बनि गेल। गाममे ने एकोटा आम, जामुन, लताम इत्यादि फल-फलहरीक गाछ बँचल आ ने घरमे अप्पन अन्न-पानि कि बीआ-बालि बँचि सकल।

एकसंग अनेको समस्या गामक लोकक सोझामे आबि गेलैन। गाम-गामक अधिकांश नवयुवक गाम छोड़ि परदेश चलि गेला। ओना, वएह युवक लग मुँह उठा कऽ कहता जे 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'। स्वर्गोसँ पैघ अपन जन्मभूमिकेँ दुहाइ देता, से ओहिना जेना शिकारी एला-पछाइत चिड़ैसभ बजैए, 'शिकारी औत, जाल बिछौत, दाना छीटत लोभसँ ओइमे फँसब नहि'। मुदा फँसि जाइए सभ.! यएह तँ समाजक लीलाभूमिक खेल छी। जैठाम विचार-जगतमे जन्मभूमिकेँ स्वर्गोसँ ऊपर मानल जाइए, तैठाम जन्मभूमि तियागि दी, ई केतेक हास्यास्पद अछि.! हँ, ई बात जरूर जे शहर-बाजारमे हजारो रंगक उपार्जनक

साधनो अछि आ जीवनक मूल आवश्यकता—भोजन, वस्त्र, शिक्षा, स्वास्थ्य—क सुविधा सेहो अछि, जइसँ जीवनकेँ आगू मुहेँ बढ़ैक रास्ता सेहो बनल अछि। जे गाम-समाजमे नइ अछि। मुदा ओ माने आगू बढ़बैक, भार किनकर भेलैन? आइ अहाँ करी वा काल्हिले राखी, माने अप्पन ऐगला पीढ़ी-ले छोड़ी, करए तँ पड़त अपने। स्वर्गक कल्पना कहियौ कि सपना, सभक मनमे छैन्हे। वाल्मीकि बाबाक हाथे सेहो लिखल पेबिये रहलौं अछि जे जन्मभूमि स्वर्गोसँ नीक होइए। मुदा एहेन रहस्यमयी विचारक साकार दृश्य जगबे ने करैए जे जेकर सपना देखै छी माने स्वर्गक सपना, तेकर साकार आकार बनबैक कला अपनेमे अछि। भलेँ कलाकारी करैक कला मनमे सुतले किए ने हुअए।

गाममे बहुतो लोक छैथ मुदा सुधीर काकासँ अप्पन आत्मीय सम्बन्ध अछि। ओना, दुनू गोरे दू जाइतिक सेहो छी आ दू रंगक ओकाइत, ओकाइत माने आर्थिक साधन, सेहो अछि मुदा दुनू गोरेक बीचमे एहेन जीवनधारा रहल अछि जे एक-दोसराक सुख-दुखमे, जीवन-मृत्युमे एक-दोसरा लेल एक-दोसर ओहिना ठाढ़ रहै छी जेना लोक अपना-ले ठाढ़ होइए। दुनू गोरेक उमर एकरंगाहे अछि मुदा समाजक अधिकांश लोक हुनका ‘कक्के’ कहै छैन माने ‘सुधीर काका’, तँए अपनो ‘कक्के’ कहै छिऐन।

बाढ़िक तेसर दिन, जखन बाढ़िक पानि घटैक कोन बात जे बढ़िये रहल छल, बीतसँ ऊपर हाथक लगभग पानि बढ़ि गेल, जेकरा देखि मन मानि गेल जे कोसी-कमलाक पहुनाइ अढ़ाइये दिनक नहि तइसँ बेसियो दिनक होइए। अप्पन परिवारो आ मालो-जालक थीरी-थमन देखि मनमे उठल जे अपनासँ केतेको गुणा बेसी सुधीर काकाकेँ परेशानी होइत हेतैन। अपने तँ ओहन लोक छीहे जे ‘हर मे जएह-सएह मुदा चौकीमे बिहाड़ि’। जैठाम गामक अधिकांश लोक गृहविहीन भऽ गेलैथ, तीन-चारि टा माइयो, बच्चाकेँ पानिमे डुबने, सन्तान विहीन भऽ गेल छैथ, तैठाम अप्पन दूटा टटघर तँ ठाढ़ अछिए। एकटामे अपने सभ रहब आ दोसरमे दुनू गाए-बरदकेँ बान्हब। अपना बाँस-काठ रहने गहुमोक भूसी रखैक मचान बनौने छी आ नारक टाल सेहो मचानेपर बनौने छी, सुधीर काकाकेँ तँ से नहि छैन।

❑ अहीं जीतलौं

जहिना समय गतिशील अछि तहिना मनुक्खक हर क्षण, हर पल जीवनक रूप बदलैए, जइसँ किछु अंश मरबो करैए आ किछु नव अंशक सृजन सेहो होइए। वएह सृजन नवता अनैए। जइसँ गतिशीलता सेहो अबिते अछि। ओही गतिशीलतामे दिनानुदिनक जीवन आ मृत्यु नुकाएल अछि।

आने गाम जकाँ मिथिलांचलमे सीतापुर गाम सेहो अछि आ सीतापुरोक चित्र ओहिना विचित्र अछि जेना मिथिलांचलक आन गामक अछि। केतौ कमलक पात जकाँ एकरंग सहीट अछि तँ केतौ बेलक पात जकाँ तीन फाँक सेहो अछिए। जखन प्राकृतिक सृजन दुनू छी तखन जब एतेक दूरी अछि तखन मनुक्खक प्रकृति तँ ओइसँ चौरासी हजार गुणा बेसी अछि। जेना कबीरोदास कहने छैथ जे 'आत्मज्ञान बिना जीव भटके, कियो मेथुरा कियो कासी..।' जखन मन मानि लेत जे ज्ञान स्वरूप वेद छी, अग्नि सदृश, तखन मन अपने मानत जे ओकरा हाथ-पएर-मुँह-नाक नइ छै जे केकरो फुटाकऽ किछु करत आकि कहबे करत। एकत्व रूपमे सेहो आ समत्व रूपमे सेहो ओ अनिश्चित अछिए। अहाँक इच्छा अछि जे ओकरा साधु रूपमे अंगीकार करी आकि पॉकेटमारक रूपमे। खाएर जे करी आकि जे अछि ओ तँ वेद आ वेदवेत्ताक मनक वृतान्त भेल तँए हुनके सभसँ सुनब-बुझब, जे अपने एकतीस साएसँ घटिकऽ पनरहपर आबि अँटकल छैथ।

गाम गाम छी। गाममे चित्र, विचित्र आ सुचित्र तीनू भरल अछि। जहिना रंग-रंगक लोक अछि तहिना रंग-रंगक वृत्तियो आ विचारो तँ अछिए। जइसँ जीवनक सभ क्षेत्रमे, जहिना केतौ-केतौ एकरूपता अछि तहिना केतौ-केतौ बहुरूपता सहो अछिए। गाम दिस जखन देखब तँ बुझि पड़त जे समाजक कोन बात जे परिवारोक बीच एक-दोसरपर विश्वास मनसँ नहि मानि रहल अछि, तैठाम दोसर परिवार आ समाज तँ तइसँ आगूक भेल। जहिना गोटि-पङ्गरा वैज्ञानिक गाममे

जन्म लइ छैथ तहिना गोटि-पङ्गरा डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, प्रोफेसर, किरानी, चपरासी सेहो तँ जन्म लइते छैथ, तखन अहीं कहू जे केहेन उपजक गामक माटिकेँ मानल जाए.? अहू गाममे, माने सीतापुरमे सेहो तँ सभ रंगक लोक जन्म लेबे केने छैथ। देखिते छी जे कियो किसानी करै छैथ तँ कियो दोकानदारी, कियो हाटपर पल्ला करै छैथ तँ कियो गाम-गाममे टहैल तीमन-तरकारी सेहो बेचिते छैथ, जइसँ गामक चित्रमे विचित्रता देखि पड़िते अछि। तँए कहब जे सोल्होअना विचित्रते टा अछि, सुचित्र नइ अछि, सेहो केना नइ कहल जाएत। अखनो ओ बेवहार गाममे जीवित अछिए जे उम्रानुकूल होउ आकि विचारानुकूल दुनू रूपमे अभिवादनक संग समाजमे चलिए रहल अछि। देखिते छी जे केकरो घरमे आगि लगलापर मिझबै बेर जाति-पाँजि मेटा जाइए आ एकरूपता आबि जाइए।

अही सुचित्रता आ विचित्रताक बीच ने परिवारो, परिवारे टा किए कहबै, बेकती अपनो आ समाजो, दू-मुहाँ बनियेँ गेल अछि। देखिते छी जे सड़कपर कोनो बच्चा बदमाशीसँ खाधि खुनि रहल अछि, तेकरा जँ अहाँ बुझेबै, तखन कि ओ अपनाकेँ बिनु बुझनिहार बुझैए आकि कटौज करए लगैए.? तैठाम जँ गामक पंचदेवता पहुँच पनचैती करता तँ अहींकेँ ने कहता जे 'बुड़िबकक संग मुँह लगा अहूँ बुड़िबके भेलौं किने'। यएह तँ जुड़शीतल पावनिक डबरा जकाँ थाल-कादोसँ घोराएल गामो आ गामक लोको तँ अछिए।

सतासी इस्वीक बाढ़ि, जइमे कोसी आ कमला दुनू धारक बान्ह-छहर अनेकोठाम टुटि गेल। ऐठाम ई बुझू जे कोसीक बान्ह छी आ कमलाक छहर। भलेँ दुनू धारे किए ने छी। ओइ बाढ़िमे पानिक ठहराव एहेन भऽ गेल जे गाम समुद्रनुमा भऽ गेल। महीनो भरि माने तीन माससँ छह मास धरि पानि उतरैमे लागि गेल, माने धरती जगैमे लागि गेल। जहिना साइबेरियाक खेतसँ बरफ उतरैमे तीन माससँ नअ मास तक लगैए, तहिना। जैठाम लोकक जीवने अस्त-व्यस्त भऽ गेल, तैठाम आनक कोन चर्च। आमक गाछी-कलमसँ भरल सीतापुर गाम जे साल बितैत-बितैत माने बाढ़िक पानिकेँ सुखैत-सुखैत, वृक्ष विहीन भऽ गेल, माने सीतापुरक गाछी-कलम सोल्होअना सुखि गेल। खाली केतौ-केतौ बाँसक बीट टा जीवित रहल, जे गाछक ओ रूप बना ठाढ़ रहल जइमे फल-फूलक दरस नहि। बाढ़ि

एलापर अधिकांश लोकक मुहेँ यएह निकललैन जे कोसी-कमलाक बाढ़ि छी, बुझले अछि जे अपना मिथिलामे बेटीक पहुनाइ अढ़ाइ दिनक होइए। तहिना ने दुनू बहिन कोसीयो-कमला पहुनाइ करती। अढ़ाइ दिनक पछाइत जेबे करती, तइले लोक परेशान किए हएत। मनक धैर्य तँ बान्हल रहल मुदा अपने मन कहलक, पाँच साए परिवारक गाममे मात्र पनरहटा ईंटा घर अछि, किछु-किछु टटघर बाँकी सभटा भीतघरे अछि..!

गाममे बाढ़ि प्रवेश करिते गामक टोटल भीतघर खसि पड़ल। क्षणमे छनाक भऽ गेल.! घरक चारूकात सँ पानि पकैड़ माटिकेँ गील बनबैत गेल, जइसँ भीतघर खसैत गेल। साँझ होइत-होइत एकोटा भीतघर गाममे ठाढ़ नइ रहल। किछु परिवार सोल्होअना गृहविहीन भऽ गेला आ किछु परिवारकेँ एक-आध वा जँ सभघर टाटेक छेलैन तँ से घर बँचल रहलैन। ओना, अखन तक लोकक धियान घर दिस ओतेक नहि पड़लैन जेतेक अप्पन बाल-बच्चा आ माल-जालपर पड़लैन। लोक तँ लोके छिया, सौंसे देह जँ कोनो हथियारसँ काटि-काटि टुकड़ी-टुकड़ी बना दैन वा कोनो बिमारीएसँ गलि-पचि किए ने गेल होथि मुदा तैयो ओ मरैले तैयार नहि होइ छैथ। एकर माने ऐठाम ई नइ बुझब जे मृत्यु अनिवार्य नहि छी, मुदा अनिवार्यकेँ अनिश्चित बनबैत मृत्युकेँ लोक भगा देनहि छैथ, तँए ने सभक मनसँ मृत्यु हटि बसि गेल अछि जे हम अमर छी, भरथरी जकाँ अमर फल खेने छी तँए कहियो ने मरब। जहिना समय गतिशील अछि तहिना मनुक्खक हर क्षण, हर पल जीवनक रूप बदलैए, जइसँ किछु अंश मरबो करैए आ किछु नव अंशक सृजन सेहो होइए। वएह सृजन नवता अनैए। जइसँ गतिशीलता सेहो अबिते अछि। ओही गतिशीलतामे दिनानुदिनक जीवन आ मृत्यु नुकाएल अछि। खाएर जे अछि, तइसँ अपना कोन मतलब अछि। अप्पन जीवन आ अप्पन परिवारक जीवनक बीचक तँ थाहे ने पेब रहल छी, तखन अनेरे ने अनका-ले माथ धुनब।

❑ अहीं जीतलौं

“जेते छुधा छल, तेते अहाँ नापिकऽ केना नेने एलौं हेन, केना हमरा मनक बात अहाँ बुझि गेलिऐ?” कुशल पत्नी जकाँ पत्नी बजली- “पुरुखक भेद जँ महिला नहि जानैथ आ महिलाक भेद पुरुख नहि जानैथ तँ ओ पुरुखे की भेला आकि महिले की भेली.!”

रामनवमीक परात। सुर्ज डुमैपर छल मुदा डुमल नहि छल। गहुमक खेतसँ आएले रही। मन टुटल-टुटल सन छल, तँए किछु सोहंतगर नहि देखि पेब रहल छेलौं। घरो-दुआरक आ मालो-जालक रंग सिलेब-चरक जकाँ बुझि पेब रहल छल।

संयोग बनल, गहुमक खेतसँ आएल बुझि पत्नी दरबज्जापर आबि बजली-

“किछु पानियोँ पीबैक मन होइए आकि चाहेटा पीब?”

पत्नीक आग्रह सुनि मनमे क्रोध सेहो उपकल आ सिनेह सेहो उपकल। क्रोध उपकैक कारण भेल गहुमक खेतीक दुर्दशा आ सिनेह उपकैक कारण भेल पत्नीक बेवहार। यएह ने पत्नीक पत्नीत्व छी जे थाकल-ठेहियाएल वा हारल-मारल केतौसँ आबी आ पत्नी छाती लगा सिनेहसँ सिनेहासिक्त करैथ। से तँ देखिये रहल छेलौं। ओना, क्रोधे किछु खेबाक कोन गप जे पानियोँ पीबाक मन नइ होइ छल। तामसे मन बीख बनल छल। फेर अपने मन सान्त्वना देलक जे गहुमक खेती वौरा गेल अछि जइसँ जीवनक असफलता देखि मनमे क्रोध उठल अछि मुदा ई तँ अप्पन आ अपना कर्मक दोख भेल तइले पत्नीकेँ किए डँटिऐन। सिनेहसँ बजलौं- “जलखै-चाह पीबैक मन नइ होइए मुदा अहाँक सोल्होअना आदेशो काटब उचित हएत। कलपर सँ मुँह-हाथ धोने अबै छी, तैबीच अहूँ जोगार करू।”

पत्नी बजली तँ किछु नहि मुदा अप्पन बोलीक मिठाँससँ मन मिठाइये गेलैन। मन मिठाइक ईहो कारण भेलैन जे अपने मन गवाही देलकैन जे पति गहुमक खेतसँ एला अछि, नीक चास-बास देखि मन खुशी छैन, बोलीमे रसभरीक

रस डबडब करै छैन, तँए किए ने अपनो ओही मधुरमय आनन्दमे रमि ली। जीवनमे की अछि.! यएह ने अछि जे एक-दोसरक संग रमता-योगी बनि जाइ।

जेना-जेना जौड़ बान्हल डोल इनारक पानिक तर जाइए तेना-तेना जहिना पानिक शीतलपन बढ़ैत जाइए तहिना पत्नीक मनमे सेहो होइत रहैन। अपन मन गरमाएल रहए तँए चापाकलक पाँचसाए फुट तरक पानि सेहो गरमे बुझि पड़ए। खाएर जे बुझि पड़ए मुदा सोग हौउ कि रोग, पीड़ा हौउ कि दुखरा ओकर निदाने ने ओकर मुक्ति छी। जे रामलाले काकासँ विचार-विमर्श केने भेटत। अनेरे अपना मनक सोग-पीड़ाकेँ किए परिवारमे परसब आकि समाजेमे पसारब। सभकेँ अप्पन-अप्पन जीवन अछि, अप्पन-अप्पन जीवनक परीक्षा अछि, तइमे केतेक उतीर्ण होइत चलै छी आ केतेक अनुतीर्ण होइत चलै छी, यएह उतीर्ण अनुतीर्णसँ जीवन उगै-डुमैए किने।

दरबज्जाक चौकीपर बैसिते पत्नी छिपलीमे जलखै आ गिलासमे पानि नेने लगमे एली। रंगीन दुनियाँक सभ किछु रंगीन लगिते अछि। अपनो ओही रंगमे रंगैत बजलौं-

“जेते छुधा छल, तेते अहाँ नापिकऽ केना नेने एलौं हेन, केना हमरा मनक बात अहाँ बुझि गेलिऐ?” कुशल पत्नी जकाँ पत्नी बजली- “पुरुखक भेद जँ महिला नहि जानैथ आ महिलाक भेद पुरुख नहि जानैथ तँ ओ पुरुखे की भेला आकि महिले की भेली.!”

तैबीच अपने आधासँ बेसी जलखै कऽ चुकल छेलौं। पत्नी बुझि गेली जे आब पराग्राफ बदलैक समय आबि गेल, तँए गप-सप्पमे वौराएब नदानी हएत। बजली-

“गहुमक की रंग-रूप अछि, माने गहुमक खेतीक की स्थिति अछि?”

जहिना भुमहुर आगि सुखल जारनक सम्पर्कमे अबिते एक्केबेर धधैक जाइए, तहिना गहुमक नाओं सुनिते क्रोधसँ अप्पन मन धधैक उठल। धधकल मने बजलौं-

“जहिना लोक गहुमक रोटीकेँ पसिन करैत लोक अप्पन जीवनक आधा-आधी माने एक साँझक, भार दऽ देलक तहिना आगूक रोटी छीना रहल अछि।”

पत्नी की बुझली से तँ हुनकर बुधि-विचार जनतैन मुदा जहिना अपने कोसी धारक वेग जकाँ बाजल छेलौं तहिना टुटल बान्हक धारा जकाँ पत्नी बजली- “रोटी तँ सहजे रोटी भेल, रोटी पकबैबला जे आगि अछि माने गैस चुल्हा, ओहो तँ छिनाइये रहल अछि, केतए गेल ओ सुविधा जे शुरूमे कहल गेल छल।”

अपना मनमे छल जे जँ पत्नीक मन सुढ़ियाएल होनि तँ गहुमक खेतीक वृतान्त सुना दिऐन जे केना अपने जीवनमे उतार आएल अछि। शुरूमे जखन गहुमक खेती आएल तखन पचास किलो कट्ठासँ ऊपर आ अस्सी-पचासी किलो कट्ठाक बीच उपज होइ छल, तहिना धानक उपजमे सेहो बढ़ोत्तरी भेल, ऐठाम खेतक दुर्दशाक चर्च नइ बुझब, ऐठाम एतबे बुझब जे पचहत्तैर-अस्सी इस्वीक (1975-80) बीचक बात कहै छी, उपजमे रंग-रंगक सुधार भेने एकाएक उपजमे बढ़ोत्तरी भेल। ओना, किछु फसिलक खेती चलियो गेल माने मारलो गेल। जेना, दलिहनक खेतीमे आघात भेल। अन्न आ तरकारीक खेतीमे भरपूर बढ़ोत्तरी भेल। ओना, सभ गाममे सेहो एक्केरंग नइ भेल। भौगोलिक रूपेँ जे गाम जेहेन अछि, एकटा कारण सेहो अछिए। खाएर जे अछि, हम अप्पन गाम—विकासपुर—क बात कहै छी।

जहिना बुढ़-पुरान लोकक कहब छैन जे जाबे रगड़ी बनि झगड़ी नइ बनब ताबे तक ओइगामक लोक बसरी थोड़े बनए देत।

❑ रूपेँ बदैल गेल

“भाय साहैब, अखन पंचवेदीमे छी झूठ नइ बाजब। अपनो लोअर स्कूल तक पढ़ने छी। बेटाकेँ पुछलिऐ, ‘बौआ, गरहैन, सबैया, डेढ़िया, अढ़ैया आ हूट्ठा अबै छौ कि नइ।’ बेटा कहलक, ‘नइ।’ तखन स्कूलमे पढ़ाइ कि होइए.! ओही झोंकमे आबि शिक्षक सभकेँ उपराग दैत कहलयैन। बाताबाती बढ़ैत गेल।”

घरपर अपने रही नहि। अमताही स्कूलपर रही। तही बीच सोमनाथ बाबा घरपर फोन केलैन। काजक काल मोबाइलिक बेवहार नइ करै छी, तँए घरेपर मोबाइल छोड़ि गेल रही। सोमनाथ बाबा फोनमे कहलैन-

“उपराग दइ छियौ।”

जहिना सोमनाथ बाबा फोन केने छला तहिना पोता समाद नेने अमताही स्कूलपर पहुँच गेल। अमताही अपना गामक माने सोनपुरसँ सटले गाम अछि। एकबधुए छी। पोताकेँ देखिते पुछलिऐ- “बौआ, किए एलह?”

पोता कहलक- “सोमनाथ बाबा फोनमे कहलैन जे उपराग दइ छियौ।”

केकरो एहसान आकि उपराग मनमे धक्का मारिते अछि, अपनो मारलक। मन उखड़ए लगल। मुदा बुझारतमे बैसल रही, केना बजितौं जे सोमनाथ बाबाक उपराग अछि, तँए आगूक काजकेँ एतै छोड़ि, पहिने ओकरा निपटा लइ छी। विचारकेँ मनेमे दाबि लेलौं। मुदा मनक दबल उपरागो मनकेँ खोधियबिते छल, तँए मन एकठाम रहबे ने करए। मुदा तैयो पेटमे विचारकेँ दबने रहलौं।

अमताही मिड्ल स्कूल पाँच गोरेक सहयोगसँ बनल अछि। जइमे चारि गोरे मरि गेला पाँचम अपने जीबै छी, तँए बुझारतक मध्यस्त बनल छेलौं। ओना, अपने अगुआ नइ रही, माने स्कूल बनबै-चलबैमे सहयोगी रही। अगुआ रहैथ रघुनन्दन भाय। रघुनन्दन भाय 1942 इस्वीक आन्दोलनमे (अंगरेजक खिलाफ देशक

आन्दोलनमे) हाइ स्कूलक पढ़ाइ छोड़ि कुदि पड़ला, पढ़ाइ रूकि गेलैन। रघुनन्दन भाय सन-सन बहुतो कुदला। संयोग एहेन भेलैन जे साल भरिक जेल भऽ गेलैन। जहिना गाम-घरमे देशक आजादीक गप-सप्पसँ वातावरण उत्साहसँ भरल उत्साहित रहैए तहिना जहलखाना सेहो छेलैहे। अपना सन-सन सइयो विद्यार्थीकेँ रघुनन्दन भाय जेलमे देखबे करैथ। एहेन विचार मनमे कहियो एबे ने केलैन जे जहल जाएब नर्कक बास छी। जेना गाम-समाजमे लोक बजैए। जिनका मनमे एहेन छैन ओ अप्पन जानथु। देश आजाद होइसँ पूर्व आ 1942 इस्वीक पछाइत, रघुनन्दन भायकेँ तीन बरख जेलमे बितलैन, बाँकी समय जेलसँ बाहर रहला। माने जहिना गाम-घर तहिना जेल, दुनूक एकरंग भेल वातावरण छल।

देश आजाद भेला पछाइत अमताहीमे स्कूल नहि रहने रघुनन्दन भाय अपने पढ़बैक भार उठा स्कूल बनबैले डेग उठौलैन, जइमे संग-साथ देने रहिऐन।

विद्यालयमे माने अमताही स्कूलमे शिक्षक आ गौंआँक बीच गारि-गरौवैलिक संग मारि-पीट भऽ गेलैन। दुनू दिससँ माने गौंओ दिससँ आ शिक्षको सभक दिससँ विवाद थाना पहुँच गेल। संयोग नीक रहल जे विवाद मोल-जोलमे फँसने-बिना पनचैतीपर पहुँच गेल आ मामला मात्र सरकारक मौखिक रेकर्डमे रहि गेल। वएह विवादक बैसारमे रही। एक ब्रेंचक जहिना न्यायालय होइए तहिना असगरे पंच रही। गौंओ मानलैन आ शिक्षको मानलैन। गौंआँकेँ पहिने कहलयैन-

“बेरा-बेरी बाजू।”

लल्लूलाल बाजल-

“भाय साहैब, अखन पंचवेदीमे छी झूठ नइ बाजब। अपनो लोअर स्कूल तक पढ़ने छी। बेटाकेँ पुछलिऐ, ‘बौआ, गरहैन, सबैया, डेढ़िया, अढ़ैया आ हूट्ठा अबै छौ कि नइ।’ बेटा कहलक, ‘नइ।’ तखन स्कूलमे पढ़ाइ कि होइए.! ओही झोंकमे आबि शिक्षक सभकेँ उपराग दैत कहलयैन। बाताबाती बढ़ैत गेल।”

एक्के-दुइये गौंओ सभ, करीब सात-आठ गोरे, पहुँच गेला। सत्ता जेना समाजक आमने-सामने पड़ि गेल। स्थितिक रूप कुदरूप बनए लगल। अप्पन मन छह-पाँच करए लगल। कखनो हुअए जे पंच तँ ओहन हुअए जे हत्यासँ हत्याक अपराधकेँ विचारसँ सुलझा दुनू पक्षकेँ प्रेमक डोरसँ बान्हि दैथ। लगले फेर ईहो

हुअए जे जँ सएह होइ तखन नीक-बेजायक बीच अन्तर की रहत। एक तँ ओहुना मन घोर-घोर होइते छल, किए तँ सोमनाथ बाबाक की उपराग छैन, मनक स्थिति कखनो काबूमे रहए आ कखनो बेकाबू भऽ जाए।

ओना, गौंआँ दिससँ केते गोरे बजनिहार सेहो रहैथ आ स्कूलमे दस-बारहटा शिक्षक छथिए। समयकेँ बँचबैत शिक्षककेँ पुछलयैन-

“मास्सैब, अहाँ सभक की कहब अछि? एकटा शिक्षक बजला- ‘अपने दोसर गामसँ आएल ओहन बेकती छिऐ जे स्कूलकेँ स्थापित केने छिऐ।’

अप्पन बाह-बाही सुनि आकि विचारमे ओ दिन मोन पड़ि गेल जइ दिन रघुनन्दन भाइक संग गौंआँसँ बाँस-खढ़ मांगि स्कूल ठाढ़ केने रही। जहिना मन-पसन्द फल, मन-पसन्द ऐ दुआरे जे चित्तक अनुकूल फल सेहो पसिन होइए, छोट गाछ रोपिते मन अकास चढ़ि फलक सुआद दिअ लगैए तहिना अपनो भेल। अप्पन बनौल विद्यालय छी, तैठाम गारि-गरौऐल आकि मारि-पीट हुअए से उचित थोड़े भेल। बजलौं-

“मास्सैब, समयकेँ सेहो धियानमे रखैत बाजू।”

शिक्षक बजला- “आइ तीन सालसँ अपना गामक स्कूल माने अमताहीक विद्यालय ब्लौकसँ लऽ कऽ जिला भरिक विद्यालयमे प्रथम स्थानपर अछि, तखन अपनहि विचारियौ जे पढ़ाइक की रूप अछि?”

दुनू पक्षक अपन-अपन तर्क छेलैन्हे। बजलौं- “सभ एक्केठाम छीहो आ रहबो करब, तँए झगैड़ कऽ रहबसँ नीक जे मिलानसँ रही, आगू एहेन दुर्भाग्यपूर्ण घटना नइ हुअए। जे विद्यालय मनुक्खक निर्माणभूमि छी वएह जँ संहारक भऽ जाएत तखन निर्माण केना हएत.!”

❑ उपराग

“आब ने ओ मिथिला अछि आ ने सीता स्वयंवर, जँ से रहैत तँ अप्पन-अप्पन जीवनक शर्तपर जे ‘राम-जानकीक विवाह’क चलैन बनल रहैत, से तँ अछि नहि, तखन अनेरे परशुरामकेँ लक्ष्मणक संग बत-कटौऐल कराएब सेहो उचित नहियेँ अछि। बजनिहार बजैत रहौथ जे सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलयुग—चारूयुग टर्मवाइज चलैत आबि रहल अछि आ आगूओ चलैत रहत। ने आब ओ राम औता जे वल्कल पहीरि सीताक संग वने-वन घुमता आ ने परशुराम औता।”

“अखन चाह-ताहक ओरियान छोड़ू, सोमनाथ बाबाक भेटोँ करबैन आ चाहो-ताह ओतइ पीब।”

कछमछाएल मने सोमनाथ बाबा ऐठाम विदा भेलौं। सूर्यास्त भऽ गेल छल। ओना, अन्हार नइ पसरल छल, मुदा सूर्यो अपन पाट खेला नाटकक पात्र जकाँ नाटकक ग्रीन रूममे प्रवेश कइये नेने छला। असगरे दरबज्जापर बैसल सोमनाथ बाबा औझुका अक्षय तृतीया पाबैनसँ असन्तुष्ट भेल अप्पन जीवन निहारि रहल छला।

सोमनाथ बाबाकेँ असगर देखि मनमे खुशी भेल। खुशीक कारण भेल जे असगरमे जँ सोमनाथ बाबा अकचियो-दोकची कहता तँ अपने टा ने सुनब। आन थोड़े अछि जे सुनिकऽ सौंसे गाम घोल करत। लगमे पहुँचते बजलौं-

“बाबा, तेहेन समय आबि गेल अछि जे एक-दोसर लग बैसकऽ लोक अप्पन जीवनक सुख-दुखक गप-सप्प करत, तेतबो छुट्टी नइ अछि। घरपर नइ रही तँए अपनेसँ गप-सप्प नहि भऽ सकल।”

ठेहियाएल सन मन सोमनाथ बाबाक भइये गेल छैन। जइ पाबैनकेँ लोक

बिसैर रहल अछि तइ पाछू पड़ब बचपना भेबे कएल किने। एक तँ ओहुना एहेन होइए जे जखन कियो अप्पन कर्ममे अपनाकेँ हारल बुझैए तखन मन टुटिते छइ, जइसँ जीतक उत्साह समाप्त भइये जाइ छै, तहिना सोमनाथ बाबाकेँ सेहो भेलैन। बजला-

"रामेसर, समय छल जखन अक्षय तृतीया पाबैन-दिन बदाम, इनारक तजगर पानि आ कागजी नेबोक रस देल चिन्नीक शर्बत बना दोसरकेँ पियाएबकेँ लोक सुधर्म बुझै छला, मुदा आजुक जे रूप बनि गेल अछि तइमे एकटा तूँ टा संग दैत आबि रहल छेलह सेहो बिसैर गेलह।"

सोमनाथ बाबाक विचार सुनि मनक जे अखन तकक घबड़ाहट छल सभ मेटा गेल। जहिना कोनो आवश्यक काज भेला पछाइत मनमे खुशी होइए तहिना मन खुशिया गेल। बजलौं-

"बाबा, दू दिन पहिने अमताहीबलाकेँ, माने शिक्षको आ गौंओकेँ, समय दऽ देने छेलिऐन, सएह मनमे छल, जइसँ अक्षय तृतीय बिसैर गेल छेलौं।"

सोमनाथ बाबा बजला-

"भिनसुरका समाचार रेडियोमे नइ सुनने छेलह जे मोन पड़ितह?"

जहिना नोन, पानि, चिन्नी, गुड़ आ मधु सभ मिलाकऽ शर्बत बनौल जाइए तहिना रेडियो स्टेशनक दिन-ठेकान अछि। तोहूमे कनी पाछूकऽ रेडियो खोललौं। जखन दिन आ अंगरेजी तारीख सुनलौं, बाँकी दिन-बेरागन बीति चुकल छल। तखने अमताहीक बुझारत मोन पड़ि गेल आ सोमनाथ बाबाक पनिशाला मोने ने पड़ल।

..बजलौं- "बाबा, अखन तँ अक्षय तृतीयाक बदामे-शर्बत टा किए जे गौरीनाथ भाइक परशुरामक कारवाँ सेहो मोन पड़ि रहल अछि। मुदा आब मोन पड़िनहि की हएत। समय तँ बीति चुकल अछि।"

ऐठाम एकटा विचार आरो अछि, ओ अछि जे आजुक जे व्याख्या पाबैन-तिहारक भऽ रहल अछि, की अहिना पूर्वजक संग माने आइसँ पूर्व, सेहो भेल छल। जँ से भेल छल तखन पावनिक एहेन रूप किए बनैत चलि गेल। जँ शुभेक्षु छल तँ

ओ सुधरैत-सम्हारैत आइयो ने ओहिना पवित्र रहैत?

सोमनाथ बाबाक मन दहैल कऽ गौरीनाथपर पहुँच गेलैन। बजला-

“की परशुरामक कारवाँ कहलहक?”

बजलौं-

“गौरीनाथ, परशुरामक जुलूस निकालैक कार्यक्रम बनौने छेला, तइमे हमरो कहने छेला, हुनको जुआन दू दिन पहिने देने छेलिऐन, सेहो बिसैर गेलौं। केना कि कार्यक्रम रहलैन, सेहो समाचार कनेक बुझैक अछि।”

सोमनाथ बाबाक मन जेना सहीट कऽ धरतीपर आबि गेल होनि तहिना बजला-

“आब ने ओ मिथिला अछि आ ने सीता स्वयंवर, जँ से रहैत तँ अप्पन-अप्पन जीवनक शर्तपर जे ‘राम-जानकीक विवाह’क चलैन बनल रहैत, से तँ अछि नहि, तखन अनेरे परशुरामकेँ लक्ष्मणक संग बत-कटौऐल कराएब सेहो उचित नहियेँ अछि। बजनिहार बजैत रहौथ जे सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलयुग—चारूयुग टर्मवाइज चलैत आबि रहल अछि आ आगूओ चलैत रहत। ने आब ओ राम औता जे वल्कल पहीरि सीताक संग वने-वन घुमता आ ने परशुराम औता।”

सोमननाथ बाबाक विचार सुनि बजलौं-

“बाबा, बड़ीकालसँ चाह नइ पीने छी, तँए मन छटपटाइए।”

❑ उपराग

“जहिना मोट अन्न गुणगर अछि तहिना मेही अन्नक अगुणगरपन सेहो देखबए पड़त किने। जखन दुनू गुणगर अछि तखन अपने मर्जीसँ ने कियो अप्पन उपजा उपजौत।”

‘जीवनक सभसँ पैघ अनुभव ओ छी जे अप्पन विचारक संग साए बर्खक दुनियाँ देखि लिअए।’ मनमे नमहर धक्का लगिते मोतीलाल भायकेँ हरलैन-ने-फुरलैन सोझे रीतलाल बाबा ऐठाम विदा भेला।

रीतलाल बाबा अप्पन पारिवारिक जिनगी बितबैत आब अस्सी बरख पार कऽ चुकल छैथ, मुदा अखनो तक अपन मन जीवनसँ हारि मानैले तैयार नहि छैन।

रीतलाल बाबा मोतीलाल भायकेँ देखिते मने-मन बुझि गेला जे भरिसक छह हजार रूपैआ जे किसानकेँ भेटै छै से भरिसक अन्नदानक गहुम जकाँ केतौ तरमे नुका गेलै तँए भरिसक कहैले आबि रहल अछि। मुदा अपनाकेँ संयमित रखैत रीतलाल बाबा मुँह बन्न केने रहला। कनी फरिक्केसँ मोतीलाल भाय कहलकैन-

“बाबा, गोड़ लगै छी। आइ अन्तिमे भेँट बुझू.!”

मोतीलाल भाइक विचार सुनि रीतलाल बाबा असमंजसमे पड़ि गेला। असमंजसमे पड़ैक कारण भेलैन जे अभिवादनक संग अप्पन जिनगीक अन्तिम सीमा तकक विचार। अपनाकेँ अनाड़ी जकाँ बना रीतलाल बाबा बजला- “से की मोतीलाल। आनन्दित रहह।”

मोतीलाल भाइक प्रश्नक उल्टा जवाब रीतलाल बाबा देलैन।

परिस्थितिमे ओझराएल मोतीलाल भाय छथिए। तँए परिस्थितिवश नाकर-नुकर केने बिना बजला-

“गामक पोखैरमे अहाँ सन एकोटा जाठि नइ देखै छी तँए अपनेसँ जीवनक किछु जंजाल बुझैले एलौं हेन।”

मोतीलाल भाइक विचार सुनि एकाएक रीतलाल बाबा चौंकला। चौंकैक

कारण भेलैन जीवनक चर्च। जीवन ठट्ठा नइ ने छी। जँ जीवनक सार्थकता पकैड़ जीवन बना जीब ली, तँ ओ भेल मर्दगानी, जेकरा पुरुषार्थ सेहो कहि सकै छी। ई नइ ने जे गीत गबै छी मर्दक आ चालि चलै छी मौगीक। पुरुषार्थक जीवन तँ ओ जीवन छी, जैठाम मनुक्ख पैरुख पेब पुरुषार्थ-जीवन प्राप्त करैए।

रीतलाल बाबा बजला-

"मोतीलाल, अहिना होइ छै, कोनो बेर-बिपैत एलापर लोकक मन घबड़ा जाइ छै, तँए मनमे जे कोनो कुवाथ हुअ ते ओकरा मनसँ हटा लएह। जहिना तूँ मनुक्ख छह तहिना ने हमहूँ छी। जहिना रोग-वियाधि, पीड़ा तोरा पकड़ै छह तहिना ने हमरो पकड़ैए।"

मोतीलाल भायकेँ जेना धरती भेटलैन तहिना मनमे बुझि पड़लैन। धरती ई भेटलैन जे रीतलालो बाबाक जीवनमे हमरा सन संकट आएले हेतैन, किए तँ अपनासँ रीतलाल बाबा पनरह बरख जेठ छैथ। जखन पनरह बरख जेठ छैथ तखन अपने सन किए, अपनासँ बेसियो आएले हेतैन। मोतीलाल भाय बजला-

"बाबा, जहिना नोकरिहाराक जीवन नापल रहैए, जइसँ अपने अनुकूल अप्पन तम्मो रखैए तहिना ने अपनो परिवारक अछि जे इंच-इंच जमीनक जखन उपयोग करै छी तखन साल-माल खेपै छी, तैठाम जँ..।"

मोतीलाल भाइक विचारक प्रवाह देखि रीतलाल बाबा सेहो अप्पन जीवनक प्रवाहमे भँसिया गेला। भँसियाइत बजला-

"की तैठाम, मोती?"

मोतीलाल भाय बजला-

"मोट अन्नक समाचार नइ सुनलिऐ हेन?"

रीतलाल बाबा बजला-

"हँ, सुनलिऐ हेन। रेडियोक समाचार जहिना कानसँ सुनलौं तहिना लोकक मुँहक समाचार सेहो सुनबे करै छी। तूँ की पुछै छह?"

मोतीलाल भाय बजला- "पुछै नइ छी, विचार मंगै छी जे अप्पन जे खेती अछि तेकरा की करब?"

सोझ-साझ शब्दमे रीतलाल बाबा बजला-

“जेना केने परिवार चलै छह तहिना करह।”

मोतीलाल भाय बजला-

“सुनै छी मोट अन्न बेसी गुणगर अछि, तेकरा छोड़ब उचित हएत?”

रीतलाल बाबा बजला-

“उचित हएत कि अनुचित हएत से तँ दुनूक भिड़ानी हएत तखन ने बुझबै।”

मोतीलाल भाय बजला-

“जहिना मोट अन्न गुणगर अछि तहिना मेही अन्नक अगुणगरपन सेहो देखबए पड़त किने। जखन दुनू गुणगर अछि तखन अपने मर्जीसँ ने कियो अप्पन उपजा उपजौत।”

❑ केकरा भगाउ आ केकरा बसाउ

एक्के देवी-देवताक रूप भिन्न-भिन्न मनुक्ख, भिन्न-भिन्न रूपमे देखबो करै छैथ आ मानि-मानि आराधना सेहो तँ करिते छैथ। जेना रामे छैथ, कबीर दास प्रेम रूपमे देखबो केलैन, मानबो केलैन आ आनो-आनकेँ कहबो केलैन, तहिना जनकपुरक लोक दुल्हाक रूपमे, अयोध्याक लोक राजकुमारक रूपमे आ ऋषि-मुनि बनवासीक रूपमे देखबो करै छैन आ मानितो तँ छैन्हे।

नअ बजे भिनसुरका उखड़ाहाक समय। आन जकाँ नहि अछि जे बसन्त भाय कखन जलखै करता आ कखन कलौ, भोजनकेँ अपन जीवनक अनिवार्य क्रिया बुझि-मानि अपन समय रखने छैथ। तँए खेती-पथारीक काज हुअ आकि कोनो आन बाहरीए काज, जलखै-केला पछातिये बसन्त भाय काज करए जाइ छैथ। गरमी मास छीहे। ओना, जाड़-गरमी बारहो मास रहिते अछि, मुदा महीनाक बँटवारामे अपन-अपन समय दुनू बाँटि नेने अछि। जहिना पूस-माघ जाड़क सिरगर मास भेल तहिना बैशाख-जेठ गरमीक भेल।

बैशाख समाप्त होइपर छल आ जेठ अबैपर छल। ओना, अबै-जाइक सीमा सेहो टुटले अछि मुदा तैयो लोक अपन-अपन मनोनुकूल मानिते छैथ। की सीमा टुटि गेल अछि? सीमा ई टुटि गेल अछि जे पूर्णिमाक हिसाबसँ महीना सेहो निर्धारित अछि आ संक्रान्तिक हिसाबसँ सेहो अछि। पूर्णिमाक हिसाबसँ बैशाख तीन दिन बाँकी अछि आ संक्रान्तिक हिसाबसँ तीन दिन पहिने समाप्त भऽ गेल। अही मोड़ परक समयमे बसन्त भाय खीराक खेतमे काज करै छला। भरपूर फड़ लगने खीराक लत्ती मातृवत् आँगनमे अलिसाएल अपन जिनगीक फल देखि रहल छल।

अपन खेतक फल देखि माने खीराक फड़सभपर नजैर पड़िते बसन्त भाय विवेकशील होइत विचारलैन जे जे काज मनमे रोपि आएल छेलौं ओ काल्हि करब। आइक जरूरत अछि जे सभ गाछक लत्तीमे अलग-अलग ढंगसँ फड़ पकैड़ नेने अछि, ओना गोटि-पङरा तोड़बो केलौं हेन, मुदा अधिकतर लत्ती ओहन अछि जइमे अखन तोड़ैबला फड़ नइ भेल अछि। मुदा कच्चे-बच्चे तँ फड़ पकड़िये नेने अछि। कोनो लत्तीमे फुलबतिया अछि आ कोनोमे फूल सुखि गेल छै आ फड़ अपन वृहत रूप धारण कइये नेने अछि। एकाएक बसन्त भाइक मनमे उठलैन जे जहिना परसौती बच्चाक जीवन तन्नुक होइए तहिना ने खीराक सेहो अछि। बच्चाक अंग-प्रत्यंगकेँ जहिना दुर्गा स्वरूप माए निहारि ओकर प्रतिपाल करै छैथ, तहिना ने अखन अपनो ऐ खेतक फलक भाग्य-विधाता सेहो छिऐ। जे फड़ पातसँ दबा गेल अछि वा सूँघमे बन्हा गेल अछि ओ जँ अखन छोड़ाकऽ सोझरा नइ देब तखन तँ गहनमरू बच्चा जकाँ केकरो आँखि टेँढ़ हेतै तँ केकरो मुँह टेँढ़ हेतइ।

समयानुकूल माने आजुक काजक अनुकूल, अपनाकेँ पेब बसन्त भाय एक-एक लत्तीकेँ देखैक विचार मनमे रोपलैन। लगले मन गवाही देलकैन जे अखन, ओना जहियेसँ खेतीक शुरूआत माने खीरा रोपैक विचार मनमे केलौं, तहियेसँ ऐ बाल-स्वरूप खीराक तँ अपने ने मातो आ पितो भेलौं। जँ कोनो फड़ लत्ती वा पत्ताक तरमे पड़ि जाएत तखन ओ अवाह भइये जाएत। ओकर दोख अपने लगत किने। दोख तखन नइ लगैत जखन ओइमे कर्मक गुणक जरूरत नइ रहैत। माने लत्ती तरमे पड़ल वा पातक तरमे पड़ल फड़केँ प्रतिकारो केला-पछाइत रूपमे सुन्दरता, माने पुष्टता नइ अबैत, मुदा से तँ नहि अछि। जँ छोड़ि देब तँ ओकर रूपेँ अवाह-घवाह भऽ जाएत, आ जँ ओकरा जगहपर गर पकड़ा देब तँ ओ चिक्कन-चुनमुन बनबे करत।

जहिना बसन्त भाय मने-मन विचारैत रहैथ तहिना आँखिसँ देखि-देखि हाथसँ काजो करए लगला। आत्मा-परमात्माक ओहन मिलन जकाँ, जैठाम ज्ञान रूपी अग्नि प्रकाश स्वरूप अप्पन कर्मक रूप धारण करैत जिनगीक सत्यकेँ उजागर करैए, तहिना बसन्त भाइक मनमे सेहो नाचए लगलैन। नचैत-नचैत मनमे उपैक गेलैन जे मनुक्ख अप्पन धर्म-कर्मकेँ अपने निर्धारित करैए आकि कोनो देवी-

देवता? लगले बसन्त भाइक मन आगू बढ़ि कहलकैन जे देवी-देवताक रूपोक परिवर्तन तँ मनुक्खे ने करै छैथ। एक्के देवी-देवताक रूप भिन्न-भिन्न मनुक्ख, भिन्न-भिन्न रूपमे देखबो करै छैथ आ मानि-मानि आराधना सेहो तँ करिते छैथ। जेना रामे छैथ, कबीर दास प्रेम रूपमे देखबो केलैन, मानबो केलैन आ आनो-आनकेँ कहबो केलैन, तहिना जनकपुरक लोक दुल्हाक रूपमे, अयोध्याक लोक राजकुमारक रूपमे आ ऋषि-मुनि बनवासीक रूपमे देखबो करै छैन आ मानितो तँ छैन्हे।

खीराक खेतमे काजक बहुलता बसन्त भाइक मनक डोरकेँ पकैड़ तानैत कहलकैन, जेते अखन काज सोझामे पसरल अछि, जँ ओकरा समयक गतिसँ नइ करब तँ ओइ फड़-फूलकेँ अवघात हेतइ। तेकर दोख तँ अपने ने हएत। जखन काजक संकल्प मनमे रोपि डेग उठेलौं तखन जँ काजक भारपन देखि देह चोराएब, तँ यएह ने भेल कायरपन। भाय, आन तँ आनकेँ कहिते अछि जे फल्लाँ कायर अछि, मुदा ओ अपने अपन काजक संकल्पमे अपनाकेँ किए ने देखि लेत जे अपने की छी। चेहरा देखैक ऐना सेहो अछिए।

जेना-जेना खेतक काज माने खीरा-खेतीक काज, बसन्त भायकेँ बढ़ैत गेलैन आ खेतक काज कमैत गेलैन, तेना-तेना मनमे उमंगक उग्रास सेहो जगैत गेलैन। एकाएक मनमे उठलैन जे जखन खेत-पथार, आड़ि-धुर, पोखैर-झाँखैर, बोन-झाड़ सभतैर काज पसरल अछि, तखन गाम-घरसँ देश-दुनियाँ धरिक लोक बेरोजगार किए अछि? जइक चलते ओकर जीवन बदहाल बनल छइ। सभ-सभकेँ दोख लगा रहल अछि जे फल्लाँक चलैत जीवन बदहाल अछि। भाय, जखन जीवनो अपन छी आ देशो-दुनियाँ अपन छी, तखन गड़बड़ केतए अछि से ने देखए पड़त।

❑ खीरा लत्तीमे रोजगार

ओ निर्विवाद रूपेँ मानि रहला अछि जे जातीय उन्माद लोकक मनकेँ तेना मोथि देने अछि जे नजैर बन्हाकऽ एक सीमामे केन्द्रित भऽ गेल छइ। एकर जीवन्त उदाहरण आँखिक सोझमे अछि जे जातीय दृष्टिसँ समाजक ओहन लोक जे निच्चाँसँ अबै छैथ, ओ जँ कला वा विज्ञान वा कोनो पैघ ज्ञान अप्पन कर्मसँ अर्जित करै छैथ, तिनको आगूक लोक माने ऐगला जाइतिक सीढ़ी, निकृष्ट नजैरसँ नइ देखै छैथ, सेहो केना नइ कहल जाएत।

अपना ऐठाम दू रंगक कौआ होइए। एकटा होइए कागकौआ आ दोसर होइए कारकौआ। कागकौआक बोलकेँ लोक शुभ मानै छैथ आ कारकौआक बोलकेँ अशुभ। कागकौआ जकाँ पत्नी आगुएसँ टाँहि मारि बजली-

“महाजन ऐठामक काज भेल की?”

एकाएक मनमे उठल जे बजलौं तँ केतौ नहि, मुदा पत्नी केना बुझि गेली? मुदा लगले अपने मन कहलक, भरिसक गहनाक जे चर्च केने छेली सएह हीयमे गड़ि गेल छैन। अजेगर साँप जकाँ गेरुली मारि बजलौं-

“ओही काजमे ने लगल छी।”

संजोग बनल, बिच्चेमे पत्नीकेँ कोनो बिसरल काज मोन पड़लैन। हमरा मुहल्लत दैत आगू बढ़ैत बजली-

“अखन छुट्टी नइ अछि तँए बेसी गप नइ करब। पहिने काज केने अबै छी तखन आगूक गप करब।”

अनका जकाँ अपना नइ भेल, किए तँ आनगोटे पत्नीकेँ कहै छथिन पहिने गप कऽ लिअ, पछाइत काज बुझल जेतइ। मुदा अपना विचारमे से नइ अछि,

अपने काजकेँ जीवनक गति-विधि बुझै छी, तँए काज छोड़ब भेल जीवन छोड़ब। पत्नीकेँ काज दिस सुमुख होइते मनमे राग आएल। राग ई आएल जे जीवनमे जँ संगी नइ रहल तँ ओ जीवन कोनो जीवन नइ भेल। मुदा पत्नीक जे नैहर जेबाक तगेदा मनमे छल ओ दोसर दिस भकमुड़ि गेल। भकमुड़ि ई गेल जे दुरागमनक पछाइत, अखन बिआह-दुरागमन संगे होइए। तइसँ एत्ते तँ लाभ भइये रहल अछि जे पहिलुका जकाँ आब गाए-महींसिक पोसियाँक फरिछौठ जकाँ आब नइ होइए। पहिने दुरागमनसँ पूर्वे नैहरेमे धिया-पुता होइ छल। आब तँ समाजो आ अपन माइयो-बाप दुनियाँ दिस धकेल विदा कइये दइ छैथ जे दुनियाँ कनियेँटा थोड़े अछि जे घुरि-घुरि एकटा मालाकेँ एक साए आठ बेर जप करैत रहू। दुनियाँ तँ दुनियाँ छी, करैत चलू, देखैत चलू, छोड़ैत चलू आ आगू बढ़ैत चलू।

मन तेते घोर-मट्ठा भऽ गेल जे की नीक की अधलाह से बुझैक विवेके खतम भऽ गेल। भाय, 'समाप्त' आ खतमकेँ एक नइ बुझब। 'समाप्त'क माने 'विराम' होइए आ 'खतम'क माने 'मृत्यु' सेहो होइए।

अपना मनमे से नइ भेल। ओना, आँखि तँ झलफलेबे कएल मुदा विवेक फरीच छल। विचार देलक जे अपना समाजमे अदौसँ शिक्षाक एहेन पद्धति रहल अछि जे बिना मूल्यक, माने बिनु दैछना लेने एक-दोसरक सवालकेँ उत्तरो दइ छैथ आ जँ काजक दौड़ रहल तँ काजक कला (हुनर) सेहो दइ छैथ। किसानी जीवनक जे दुनियाँ रहल अछि ओ पूर्ण जिनगीक रहल अछि। माने किसानीक सभ क्रियामे दानक कोनो मूल्य नहि रहल अछि। माने भेल जे खेतीक कोनो काजक प्रक्रिया होउ आकि परिवारेक क्रिया, माने घर बनाएबसँ बच्चाकेँ पढ़ाएब-लिखाएब, बिआह-दुरागमन कराएब इत्यादि धरिक, राय-विचारक दानकेँ कोनो मूल्य नहि दिअ पड़ै छल, मुदा आजुक परिवेश एहेन भइये गेल अछि जे ओकर मूल्य माने कीमत दिअ पड़ैए। चिड़ै-चुनमुनी जहिना अपन बीतोसँ छोट पेट ले भरि दिन तवाह भऽ उड़ैत रहैए तहिना भऽ गेल अछि।

आने जकाँ अपनो मनमे दुनियाँक प्रति, माने परिवारसँ समाज धरि, राग-विराग उठए लगल। जहिना धरतीपर एकोअना लोक एहेन नइ हेता जे पत्नीसँ झगड़ा करिकऽ भलेँ घरसँ भागल नइ हेता मुदा कमसँ कम खेनाइ वा जलखै

एक्को साँझ नइ बाड़ने हेता। विराग भेला पछातियो तँ भरथरीए ने पिंगलाकेँ अपन दुखरा सुनबैत रागियो बनिते छैथ। मनमे अपने उठल जे गामोमे तँ ओहनो लोक छथिये जे हँसैत-खेलैत दुनियाँक संग चलै छैथ। मनमे जेना बिढ़नी कटला पछाइत उड़ी-बीड़ी उठैए तहिना उठि रहल छल। तैसंग मने-मन ईहो हुअए जे अप्पन घरक बात लोककेँ केना कहबै। सभ बुझिते छी जे अपन हारल आ बहुक मारल लोक अनका लग नइ बजैए। कोनो विचार भाँजपर चढ़बे ने करए। जेमहर देखी तेहमर कुभाँजे भऽ जाए।

ताधैर मन रविकान्त काकापर चलि गेल। रविकान्त काकापर नजैर पहुँचते जेना मनमे थोड़ेक तुष्टि भेल। तुष्टि भेल हुनकर जीवन देखिकऽ। आजुक परिवेशक अनुकूल ओ अप्पन जीवन धारण केने केना सफल शिकारी जकाँ जीब रहला अछि। शिकार करैक प्रथा अपना ऐठाम सभ दिनसँ रहल अछि, मुदा से अखन नहि, अखन बस एतबे जे के कोन तरहक शिकारी बनिकऽ केहेन शिकार करै छैथ।

गाममे रविकान्त काका ओहन लोक छैथ जे लाखो लोकक बीच अप्पन जीवनक परिचय देने छैथ। ओ निर्विवाद रूपेँ मानि रहला अछि जे जातीय उन्माद लोकक मनकेँ तेना मोथि देने अछि जे नजैर बन्हाकऽ एक सीमामे केन्द्रित भऽ गेल छइ। एकर जीवन्त उदाहरण आँखिक सोझमे अछि जे जातीय दृष्टिसँ समाजक ओहन लोक जे निच्चाँसँ अबै छैथ, ओ जँ कला वा विज्ञान वा कोनो पैघ ज्ञान अप्पन कर्मसँ अर्जित करै छैथ, तिनको आगूक लोक माने ऐगला जाइतिक सीढ़ी, निकृष्ट नजैरसँ नइ देखै छैथ, सेहो केना नइ कहल जाएत। खाएर जे अछि ओ सबहक सोझेमे अछि, तइसँ अपने आकि रविकान्ते काकाकेँ कोन मतलब छैन, मतलब अछि अप्पन जीवन आ अप्पन कर्तव्यसँ।

❑ **निरन्तर**

जइ हिसाबसँ माने जइ मार्मिक भावसँ सुविचार भाय बाजल छला तेकर विपरीत भाव कमलानन्द कक्काक मनमे जगि गेल छैलैन। जगिते मन तमतमा गेलैन जइसँ ठोर पटपटेलैन, एहेन जे बुड़िवाण अछि जे संगे-संग रहितो एतबो ने बुझि सकल जे कुम्हारक कँचको बरतनसँ तन्नुक अपन जीवन अछि, जे कखनो हवा भरल बैलून जकाँ खुस्स-दे सटैक जाएत।

आइ छअ माससँ सुविचार भाय मनरोगसँ पीड़ित भऽ तरे-तर गुमसड़ि रहल छैथ, मुदा मुँह उठा केकरो लग किछु बाजि नहि रहला अछि। बजबो केना करता? सोगो तँ सोग छी जइसँ सभ किछु-ने-किछु पीड़ित अछिए। कियो पुत्र सोगसँ पीड़ित अछि, तँ कियो धनसोगसँ पीड़ित अछि। मोटा-मोटी एना बुझियौ जे एक्को पाइ लोक एहेन नइ छैथ जे पीड़ित नइ छैथ। आइ अस्पतालेमे की देखै छिऐ जे एकदिस मदपानसँ चूर डॉक्टर साहैब रोगीक इलाज करए बैसल छैथ तँ दोसर दिस भाँग-गाजाक मातल टेम्पूबला अपन रोगी लऽ पहुँचैए, तैठाम जँ रोगी लग डॉक्टर साहैबकेँ पहुँचैसँ पहिने विवाद नहि होइन, सेहो प्रकृतिक प्रतिकूले ने कहौल जाएत।

पूर्णिमाक प्रातक दिन, माने पूर्णिमा भेलाक एक दिनक पछाइत, सुविचार भाय कमलानन्द काकाकेँ अपन भातीज दिया समाद पठौलैन जे जेतेक जल्दी भऽ सकैन तेतेक जल्दी भेँट दैथ। ओना, एहेन विचार शिष्टाचारक विपरीत भेल मुदा परिस्थितिवश अनुकूलो भेल। सुविचार भाय अपन मनसोगसँ तेतेक पीड़ित भऽ गेल छैथ जे आँखिक सूत बैस गेल छैन तँए श्रवण कुमारक पिता जकाँ आन्हर भऽ गेल छैथ। ओना, समाद पठबैसँ पहिने सुविचार भाय एते सतरकी कइये नेने छेला जे सोझे भेँट करए कहबैन से केतौसँ उचित नइ हएत। तँए पुत्री सोगक चर्च सेहो

भातीजसँ कऽ नेने छेला।

कमलानन्द काका सुविचार भाइक समाद सुनि गुम्म भऽ गेला। आदमी मारफद जँ कोनो जल्दबाजीक समाद अबैए तँ ओकर महत्व आन दोसर माध्यमक समादसँ बेसी होइते अछि। किए तँ आदमीक समदियाक माने भेल संगे नेने आएब। तहूमे आजुक बदलल परिवेशमे, अखन तँ माता-पिताक श्राद्ध आ गयाक पिण्डदान मोबाइलोसँ दैछना पठा हुअ लगल अछि।

अठारह-उन्नैस बर्खक सुशीलक मुहेँ समाद सुनि कमलानन्द काका पुछलखिन- "बौआ, नीक जेकाँ नइ बुझलौं।"

जहिना कोनो नवयुवक जे आइ.ए.एस.क संकल्पकेँ मनमे रोपि अप्पन जीवनकेँ साधना दिस मोड़ि साधक बनि साधना करैए तँ ओ निश्चये सफलताक सीढ़ी प्राप्त करिते अछि, तहिना माने ओहने नवयुवक जकाँ सुशील बाजल-

"बाबा, चाचाजी एतबे बजला जे पुत्रीक सोगसँ तेते पीड़ित भऽ गेलौं जे आगू दिस किछु सुझि नहि रहल अछि।"

सुशीलक संगे कमलानन्द काका विदा भेला।

कमलानन्द काका आ सुविचार भाय एक-दोसराक जीवनक संगी छैथ। दुनूक जन्म एक्के दिन भेल छैन। मुदा समाजक जे बेवहारिक चलैन अछि तइ अनुकूल कमलानन्द 'काका'क रूपमे आ सुविचार 'भाय'क रूपमे छैथ।

दस कट्ठाक करीब हटलेसँ कमलानन्द काका दरबज्जाक ओसारक चौकीपर सुविचार भायकेँ बैसल देखि नेने छला, मुदा मुँह बन्न ऐ दुआरे रखने रहला जे जिनका लग एलौं हेन से ने पहिने टोकता, मुदा जे टोकतैन तिनकर तँ आँखियेक सूत बैस गेल छैन तखन देखबे केना करतैन। ओना, कमलानन्द कक्काक मनमे उठि गेल छेलैन जे जैठाम एलौं से तँ घरवारीक सीमामे भेला, ओ अपन परिवारक सीमा-सरहदक बेवहार केहेन रखता से तँ हुनकर परिचय भेलैन। तैबीच अप्पन मान-रोच राखब नेनपन भेल। अप्पन मन कमलानन्द कक्काक मानि गेल छेलैन। तैबीच धीरे-धीरे कमलानन्द काका सुविचार भायसँ लग्गा तीनियेँक दूरपर पहुँचला। जोरसँ खखास केलैन। सुविचार भाइक मन तेना भावनामे भवित भऽ गेल छेलैन जे आँखिक संग कानो सुन्न भऽ गेल रहैन। मुदा तैयो मनमे एहेन

विचार तँ रहबे करैन जे कमलानन्द काका जइघड़ी ने पहुँचला अछि। समयक योगसँ मुहूर्त्त बनियेँ गेल अछि। कनी फरिक्केसँ सुविचार भाय ठुनकैत बजला-

“आब हम नइ जीब, तँए आखरिये दिन बुझू।”

सुविचार भाइक विचार कमलानन्द काकाकेँ कोनो भाँजेपर ने चढ़लैन। भाँजोपर केना चढ़ितैन, एक्के दिनक जन्म दुनू गोरेक अछि, अखन पचासो ने टपलौं हेन, तखन एहेन विचार मुहसँ निकालब सोहंतगर थोड़े भेल। प्रेमचन्द भाइक अप्पन नजैर छेलैन तँए ओ पचासक निच्चेँ, माने चालीसकेँ घपचालीस कहलैन। फेर अपने मन कमलानन्द कक्काक मानि लेलकैन जे भरिसक कोनो तेहेन सोगमे सुविचार सोगा गेल अछि जइसँ विचलित भऽ गेल अछि। जहिना कोनो ढेरबा बच्चा घरसँ बौड़ा बोन-झाड़मे पड़ि जाइए आ बौराइत-बौराइत कोनो एहेन कुठामपर चलि जाइए जैठाम मरब छोड़ि दोसर रस्ता नइ रहैए..।

जइ हिसाबसँ माने जइ मार्मिक भावसँ सुविचार भाय बाजल छला तेकर विपरीत भाव कमलानन्द कक्काक मनमे जगि गेल छैलैन। जगिते मन तमतमा गेलैन जइसँ ठोर पटपटेलैन, एहेन जे बुड़िवाण अछि जे संगे-संग रहितो एतबो ने बुझि सकल जे कुम्हारक कँचको बरतनसँ तन्नुक अपन जीवन अछि, जे कखनो हवा भरल बैलून जकाँ खुस्स-दे सटैक जाएत।

कमलानन्द काका भाव बदैल बजला- “की समय अपना सबहक छल आ अखन की भऽ गेल अछि..!”

❑ शॉर्टकट रास्ता

जे जीवन जेतेक शॉर्टकट रास्तासँ चलत ओ ओते जीवनसँ दूर रहत। जीवन जीबैले जहिना समुद्र पार करैक सूत्र अर्जुन आ हनुमान दुनूकेँ बुझल रहैन मुदा दुनूक दू रास्ता रहैन, तहिना जीवनक पूर्ण रास्ता आ शॉर्टकट रास्ताक बीच किछु-ने-किछु कमी-बेसी हेबे करत।

"बड़ लीलसासँ बेटीक सेवा कए घर बसेलौं मुदा ओ घर उजैर रहल अछि..!"

सुविचार भाइक विचार कमलानन्द कक्काक मनमे मेघक बादल जकाँ उमड़लैन-घुमड़लैन। उमड़लैन ई जे सोगो तँ सोग छी, हजारो रंगक अछि मुदा सेवा कएल बेटा-बेटीक घर उजड़ैत देखि कोनो माता-पिताकेँ सोग हएब सोभाविक अछिए।

सुविचार भाइक विचार सुनि कमलानन्द कक्काक अपने मन विचार देलकैन जे किए ने बेटीक उजड़ैत दशाकेँ एक नजैर पहिने देखि-सुनि ली। बजला-

"कनी फड़िछाकऽ बाजह।"

सुविचार भाय बजला- "काका, जमाए डॉक्टर छैथ से तँ बुझले अछि?"

कमलानन्द काका बजला- "किए ने बुझल रहत। पिता प्रोफेसर छेलखिन, माए डॉक्टर।"

सुविचार भाय बजला- "अपना दुनू गोरेक जन्मो एक्के दिन भेल आ अखन तक संगे-संग चलियो रहल छी, मुदा अहाँ लग अखन तक एकटा विचार, जहिना कृष्णक दरबारमे अपन गरीबीक तण्डुल सुदामा नुकौने छेलैथ, तहिना हमहूँ नुकौने रहल छी से पहिने कहि दइ छी।"

कमलानन्द कक्काक मनमे पवित्र शीतलपवन जकाँ सिहकलैन। सिहकलैन ई जे जीवनक दुनू दिस ढलान अछि, माने आगूओ दिस आ पाछुओ

दिस, दुनू ढलानक बीच मनोदशाक विचार सेहो ढलकैत-फलकैत रहैए, तैठाम विचारमे संगपन अबिते अछि।

तैबीच अप्पन नुकाएल बेथाकेँ खोलैत सुविचार भाय बजला- “काका, मनमे ओही दिन ठनकाक चोट जकाँ लागल जइ दिन सुनलौं जे जमाए समैधकेँ मारलैन.!”

ओना, कमलानन्द काकाकेँ तरी-सँ-घटी धरिक जानकारी प्रोफेसर साहैबक विषयमे छैन्हे मुदा जहिना कबीर दास कहलैन जे ‘बिनु डंडी के पलड़ा तौलत है संसार’, तहिना ने सभ मनुक्खकेँ अप्पन-अप्पन तराजूक दुनू पलड़ा आगूएमे छैन, अपना-अपना नजरिये तौलै जाउथ। जीवन जीवन छी, ठट्ठा नहि। जे जीवन जेतेक क्रियाशील रहत ओ जीवन ओतेक बेसी तुष्टि देत, मुदा जे जीवन परजीवी भऽ गेल, ओइ जीवनक फल एहेन भेटब अनुचित नहियेँ कहल जा सकैए। जे जीवने ओहन बनि गेल जइमे माए केतौ, बाप केतौ आ बेटा-बेटी केतौ रहत ओइमे वैचारिक केतबो प्रगाढ़ता किए ने हुअए मुदा बेवहारिक कमी रहबे करत।

रूपलाल माने सुविचार भाइक जमाए, बच्चेसँ परिवार-समाजसँ हटल रहला। जखन कि माए-बाप स्वयं समाजक प्रबुद्ध बेकती, मुदा हुनका अपनो सन्तानपर मोह-माश्चर्य नहि भेलैन जे अपन सन्तानकेँ कमसँ कम अपना स्तर तक बनाइये सकै छी। माता-पिताकेँ नीक आमदनी, बेटा हाथमे ओते पाइ दऽ दइ छेलखिन जे हाइये स्कूलसँ रूपलालकेँ शराब पीबैक चहैट लगि गेलैन। मेडिकलक छात्र होइत-होइत मातो-पिताकेँ अखड़ए लगलैन, मुदा बेटा तँ जवान भऽ गेलैन। एहेन स्थितिमे कहुना पढ़ाइ समाप्त भेला पछाइत नोकरियोक जोगार कऽ देबै आ बिआहो-दान करा अप्पन माता-पिताक दायित्व पूरा करब। अप्पन मनक विचारमे भरल कमलानन्द काका रहबे करैथ, बजला- “दायित्व पूर्ति होइसँ पहिने प्रोफेसर साहैब ग्लानिसँ भरि गेला.!”

जहिना पैघसँ पैघ देहक रोग हुअए आकि मनक, जखन सच बात माने ओइ बिमारीक सही कारण बुझिमे अबैए, तखन रोगक पीड़ा स्वत: किछु-ने-किछु कमबे करैए।

हृदय खोलि सुविचार भाय बजला- “काका, बेटी सुनयनाक की गति हएत.!”

ओना, कमलानन्द कक्काक मनमे अनेको प्रश्न बरखा-बूनक बुलबुला जकाँ मनमे उठबो करैन आ अपने फुटि-फुटि प्रवाहितो हुअ लगलैन। मुदा विचारकेँ समेटिते मनमे उठि गेलैन, अखन तक अपना ऐठाम जेतबो खोलिकऽ बेटाकेँ राखल गेल तेतबो बेटीकेँ नहि। जीविकोपार्जनक कोनो अधिकार बेटीक हाथमे नइ रहल, जइसँ ओकर आत्मशक्ति जगैत, मुदा जे अछि तहीमे ने सभ छी। बेटी सुनयनाक चर्च सुनि कमलानन्द कक्काक मन दहैल गेल छेलैन, जइसँ मनमे उठि गेलैन जे अखन तक जे बेटीक जीवन परिवार-समाजमे रहल ओ ओहन रहल जेना बन्हौटा गाएकेँ खाइले दियौ वा नइ दियौ मुदा दुहैकाल बड़का बाल्टीन लऽ कऽ पहुँच जाउ, सएह स्थिति बेटी-जातिक परिवार-समाजमे रहल अछि। समाजो तँ समाज छी, एक दिस जहिना नैतिक प्रवचन अकासमे गुंजायमान होइत रहैए तहिना दोसर दिस पैघ-सँ-पैघ अपराध नइ होइए सेहो केना नइ कहल जाएत। अपना ऐठाम किसानी जीवन एहेन रहल अछि जे किसान किसानीपर आश्रित छैथ, अधिकांश ओहन किसान छैथ, जिनका किसानी करैक ओकाइत–खेतसँ साधन धरि–नइ छैन आ जे किसानी नइ करै छैथ हुनके सभ साधन छैन। ओना, बटाइ सिस्टम सेहो अछि मुदा ओहो बेढंग अछि। खाएर जे अछि, कमलानन्द काका बजला- “सुविचार, काल्हि दिन की हएत तेकरा मनसँ भगावह। आजुक की स्थिति अछि तैपर धियान दहक।”

ओना, कमलानन्द कक्काक मनमे एहेन विचार हिलोर मारिते रहैन जे जे जीवन जेतेक शॉर्टकट रास्तासँ चलत ओ ओते जीवनसँ दूर रहत। जीवन जीबैले जहिना समुद्र पार करैक सूत्र अर्जुन आ हनुमान दुनूकेँ बुझल रहैन मुदा दुनूक दू रास्ता रहैन, तहिना जीवनक पूर्ण रास्ता आ शॉर्टकट रास्ताक बीच किछु-ने-किछु कमी-बेसी हेबे करत मुदा से अखन नहि, अखन एतबे जे हीय हारि सुविचार भाय बजला- “समाज जेना पार-घाट लगाबैथ।”

❑ शॉर्टकट रास्ता

अखन तकक इतिहासक पन्ना यएह ने कहैत आबि रहल अछि जे समाजक विशाल समूह लूटाइत रहल अछि आ अल्प समूह ओकरा धर्म सन भयंकर हथियार आगूमे रखि डरबैत-धमकबैत भावनाक पानि बना पीबैत रहल अछि।

“दू किलो दूध सब दिन दिअ।”

दूधक नाओं सुनि रघुवीर भाय अप्पन दूधक हिसाबो बैसा आ समाजक दायित्व, समाजक दायित्वक माने नब परिवार वा नब लोककेँ पुरान परिवार वा समझदार बेकतीकेँ सहयोग करब, बुझि बजला-

“जखन अप्पन घर वस्तु अछि आ अहाँ नब लोक छी, तखन केना नइ कहब।”

जरूरत तँ जरूरत छी, जेकर प्रभाव जीवनपर पड़ैए, तँए मनमे छिलमिलाहट अनिते अछि। शुभकान्तक मनमे छिलमिलाहट छेलैन्हे, बजला-

“अखन तँ दूधक समय अछिए, माने दूधो आ माछोक बिकरी-बट्टा भोरेमे शुरू होइए, आइयेसँ शुभ-शुभकऽ शुरू करू।”

रघुवीरो भाइक मनमे उठि गेलैन जे दूध भोज्य-पदार्थ छी, अहीपर जीवन ठाढ़ अछि, तँए किए ने मानि ली। परिवारमे जँ दोसर हाथक काज रहैत तँ विचारैयोक समय लेल जा सकै छल। मुदा जे काज अप्पन हाथक अछि, ओकर अधिकार अपने ने राखए पड़त। समाजो तँ समाज छीहे। देखिते छिऐ जे केते घरक जुति मरदनमा अछि आ केते घरक मौगियाही। खाएर जे से। रघुवीर भाय बजला-

“अपना ऐठाम चालीस रूपये किलो दूधक दर अछि, तइ हिसाबसँ अस्सी रूपैया प्रतिदिन भेल, एकर लेन-देन केना करब?”

परजीवी चाइलिक लोक शुभकान्त छथिए, अप्पन गोड़ा-गफ्तर बैसबैत बजला- “जहियासँ नोकरी शुरू केलौं आ दूध उठौना लिअ लगलौं, तहियासँ

महीनावारी हिसाब दैत एलौं हेन।”

रघुवीर भाय बजला-

“की हिसाब, कनी फड़िछा कऽ कहियौ। एकटा हिसाब अछि जे मास दिनक पाइ पहिने चीजबलाकेँ दऽ देलौं, जइसँ ओकरो जीवन-क्रियामे सुगमता अबैए, दोसर भेल दिनक-दिन लेन-देन आ तेसर भेल महीना दिन वस्तु लेलौं आ पछाइत पाइ देलौं।”

जहिना चलाक लोक शास्त्र-पुराणक खिस्सासँ भाषण शुरू करै छैथ तहिना शुभकान्त भाय बजला-

“रघुवीर की कहियह, ओइठाम माने पूर्णियामे जे आगत-भागत छल से जखन मोन पड़ैए तँ होइए जे जेना स्वर्गसँ धरतीपर आबि गेलौं हेन।”

ओना, रघुवीर भाइक मनमे ठहकलैन जे सरकारी खजाना हाथसँ निकलला पछाइत जेना होइ छै, भरिसक तहिना हिनका भऽ रहल छैन। मुदा अप्पन विचारकेँ अपना मने समेट रघुवीर भाय बजला-

“की स्वर्गसँ धरतीपर कहलिऐ भाय?”

भाषणमे मोड़ दैत शुभकान्त बजला-

“अपना सबहक जे माटि-पानि अछि से जहिना दूध जनमबैक क्षेत्र छी तहिना माछ-मखान सन अमृत वस्तुक क्षेत्र सेहो छीहे, तैठाम जे सुख पूर्णियामे छल से अपना ऐठाम भेटत की नहि.!”

शुभकान्तक बोली रघुवीर भाय अकानिकऽ बजला-

“रघुवीर भाय, विचारकेँ माने लेन-देनक विचारकेँ आगू बढ़ाउ।”

शुभकान्त बजला-

“अप्पन यैह सिद्धान्त रहल जे महीना दिन दूध लेला पूरि गेल, पछाइत पाइ देलौं।”

रघुवीर भाइक मनमे थोड़ेक तिलमिलाहट एलैन। तिलमिलाहट ई एलैन जे मैट्रिक पास केलाक पछाइत भी.एल.डब्ल्यू.क नोकरी शुभकान्त घरसँ शुरू केलैन, साठि बर्खक पछाइत गाम एला अछि, हम सभ छोट किसानी जिनगीसँ जुड़ल छी,

सदिकाल एक ने एक खगता परिवारमे रहिते अछि, तखन जँ अपन गतिशील पूजीकेँ बान्हि दिअए, ई केतौसँ उचित नइ हएत। मुदा नब लोकक संग नब सम्बन्धोक प्रश्न तँ अछिए। अप्पन ओकातिक सीमा देखैत रघुवीर भाय बजला-

“महीना दिनक पछाइतिक जे पाइ देब कहै छिऐ, गाम अखनो गाम छी, शहर-बजारक लोक जकाँ नइ कहैए जे ‘पैसा हो तँ चख, नहीं तो रोड पर जा के झख’। तीस दिनक उधारकेँ पाँच दिनपर लऽ आनू। पाँच दिन पाइ रूकने हमरो बेसी नोकसान नइ हएत आ अहाँक संग लेन-देनक सम्बन्ध सेहो सभ दिन बनल रहत।”

समाजक बेवहारे ने संस्कार निरमबैए। अखन तकक इतिहासक पन्ना यएह ने कहैत आबि रहल अछि जे समाजक विशाल समूह लूटाइत रहल अछि आ अल्प समूह ओकरा धर्म सन भयंकर हथियार आगूमे रखि डरबैत-धमकबैत भावनाक पानि बना पीबैत रहल अछि। खाएर ऐसँ रघुवीर भायकेँ कोन मतलब छैन, मतलब छैन मात्र अप्पन आ अप्पन परिवार भरिक। ओना, रघुवीर भाइक मनमे कृष्णक सुदर्शन चक्र जकाँ उठिये रहल छेलैन जे समाजक एक अंग तँ अपनो छीहे, समाज हम्मर विचार किए मानत, मानत तँ तखन जखन ओकरा बोध हेतै जे समाजक एक-एक बेकतीक जिनगी एकैसमी शताब्दीक होइ। बत्ती-खरहीक मड़बासँ आगू बढ़ि हवाइये जहाज परक विवाह-मण्डप किए ने बनइ।

समाजक बीच बेकतीक एतेक तँ कर्तव्य अछिए ने जे समाजक बीच परिवार आ परिवारक बीच बेक्त क्रियाकेँ अपन पारिवारिक क्रिया बना समाजमे अपनो आ परिवारोकेँ ठाढ़ करैथ।

❑ अपेछा टुटि गेल

बौआ, एना लोके तेहेन भवडाह भऽ गेल अछि जे कियो अप्पन पूजी लगा अनकर पोखरिक माछ नष्ट करैए, तँ कियो अप्पन ढौआ लगा केकरो घर जरबैए। तँए भगवानोसँ बेसी दोखी मनुक्ख अछिए। ओना, भगवानो दोखी छथिए, मुदा ओ कम-सम छैथ, लोक बेसी अछि।

आने दिन आ अनके सभ जकाँ चारि बजे भोरेसँ सड़कपर दौड़ लगा आएले रही कि दरबज्जापर युगिया भौजीकेँ मुँह लटकौने बैसल देखलयैन। बहुत आश्चर्य नइ भेल मुदा कहब जे आश्चर्य नहियेँ भेल, से आश्चर्य जेते हेबा चाही से भेबे कएल। बहुत आश्चर्य नइ हेबाक कारण छल जे सभ दिनक ई लीला छीहे, कहियो जगिया भौजी तँ कहियो रूसनी काकी, कहियो फुलनी दादी तँ कहियो मुसरी दीदी.. माने कियो ने कियो अप्पन बेथा-कथा नेने आबिये जाइ छैथ जे दिन-दिनक क्रिया भऽ गेल अछि तँए आश्चर्य किए हएत। मुदा जँ कहब जे युगिया भौजीकेँ मुँह लटकौने देखि आश्चर्य नहियेँ भेल सेहो बात नहि, से भेबे कएल।

बिना किछु बजने कल दिस आगू बढ़लौं कि मोन पड़ल नल, माने पानिक टंकीबला नल, नलक मनकेँ कलक विचार रोकलक। आगू बढ़ि कलपर जा हेण्डिल चलेलौं कि शुद्ध पानिक लहैर निकलल। पानि देखि मन पनियाइत पवित्र भऽ गेल। बुझल बात अछिए जे जेते गहींरक पानि रहत, माने परतदार धरतीक गहराइक पानि, तेते बेसी पवित्रो आ शुद्धो होइते अछि। कहब जे गाम-गाम आ घर-घरमे कल भइये गेल अछि। तहूमे जे एकोबेर मुखिया कि पंचायत समिति आकि जिला परिषदक सदस्य भेला ओ अप्पन अगुआर-पछुआर लगा सत्तरह-सत्तरह टा कल गड़ाइये नेने छैथ मुदा से नहि, अप्पन कलक बात कहै छी। पिताजी जखन मरए लगला तखन कहलैन, 'बौआ, जिनगी भरि ओतबे कमेलौं जेतेसँ जिनगी चलल। जीवनमे पँच-पँचटा कन्यादान, चरि-चरिटा श्राद्ध कर्म, माने अप्पन माता-पिताक

संग काका-काकीक सेहो केलौं। काका-काकीक ऐ दुआरे केलौं जे नि:सन्तान रहैथ। अप्पन जिनगी भरिक कमाइमे जे शेष बँचल अछि तइसँ एकटा कल दरबज्जापर गड़ा लएह।’ आ तखने रूपैआ सेहो देलैन जइसँ पाँच साए फुट गहींरक कल गड़ेलौं, सएह कल छी। एकर माने ई नइ बुझब जे अखन जे टंकी सभ गामे-गाम भऽ रहल अछि तेकर गहराइक बात कहलौं हेन। अप्पन चापाकलक गप कहलौं अछि।

कलपर मुँह-कानमे पानि लेला पछाइत दरबज्जापर आबि युगिया भौजीकेँ कहलयैन-

“थुथुन बड़ खसल देखै छी भौजी.!”

ओना, फागुन महीना अन्तिम उतार-उतैर फगुआक करीब पहुँचिये गेल अछि जइसँ सभ उत्साहित भइये गेल छैथ मुदा तइसँ भिन्न उत्साह युगिया भौजीकेँ देखलयैन। लऽ दऽ कऽ गाममे दुइये टा भौजी बँचल छैथ, आर सभ जहिना एकतीस साए वेदक व्याख्याकारमे पनरहेटा बँचल छैथ बाँकी मरि गेला, तहिना मरि गेली।

लजकोटर रहितैथ तखन ने, से तँ सभ दिनसँ फरहर बोली युगिया भौजीक छैन्हे, बजली-

“आब हम नइ जीब।”

एक तँ भौजीक अन्ने मे छैथ युगिया भौजी आ दोसर एकउमेरिया सेहो छथिए, तँए बजै-भुकैमे सेहो आड़ि-धुर नहियेँ अछि। बजलौं-

“भौजी, जीबी वा मरी से अप्पन मनक विचार भेल, मरैबला कर्म करब तँ मरब आ जीबैबला कर्म करब तँ जीअब। मुदा, नइ जीब तेकरो तँ किछु कारण हेबे करत किने?”

युगिया भौजीकेँ जहिना हमर बात सुनैमे नीक लगलैन तहिना अप्पन बेथा-कथा सुननिहारो तँ सोझेमे भेटलैन, तँए मन मधुआ गेले छैलैन। बजली-

“बौआ, एना लोके तेहेन भवडाह भऽ गेल अछि जे कियो अप्पन पूजी लगा अनकर पोखरिक माछ नष्ट करैए, तँ कियो अप्पन ढौआ लगा केकरो घर जरबैए।

तँए भगवानोसँ बेसी दोखी मनुक्ख अछिए। ओना, भगवानो दोखी छथिए, मुदा ओ कम-सम छैथ, लोक बेसी अछि। अनचोकेमे ठनका किए खसा दइ छैथ। बरखोक तँ अप्पन हिसाब राखक चाहिऐन किने, सेहो नइ रखै छैथ। जखन सभ बुझै छी जे सूर्य अपना धुरीमे नचै छैथ तहिना तँ चानो आ आनो-आन पृथ्वी सहित ग्रह अपना-अपना धुरीमे नचैए, तखन कम-बेसी किए करै छैथ? गोटे साल बेसी बरखे दऽ दइ छैथ तँ गोटे साल नहियेँ बरिस रौदी कऽ दइ छैथ।”

भूगोलक वर्णन युगिया भौजीक मुहसँ सुनि पुछि देलिऐन-

“भौजी, स्कूलो देखने छिऐ?”

भौजी बजली-

“इस्कूलक-तिस्कुलक मुँह नइ देखने छी, मुदा साले-साल जे बरहम स्थानमे भागवत कथा पनरह दिन कातिकमे होइए से तँ सब साल सुनबे करै छी। तइमे जे सुनलौं सएह बजलौं।”

निश्चल, निष्कपट भौजीक मुँहक बात सुनि, बिसवास नइ करितौं से अहीं कहू जे केहेन होइत। बजलौं-

“भौजी, छोड़ू दुनियाँदारीक गप, जानए पृथ्वी आ जानए सुरुज। कखन ग्रहसँ ग्रहण बनि जाइए तेकर कि ठेकान अछि। कखन माटिक ढेरी आकि आगिक ढेरी बनत कि कखन पार्वती आकि प्रकाशित ज्ञान बनि जाएत तेकरो कोनो ठेकान अछि। अहाँक मन किए खसल अछि, से बाजू।”

युगिया भौजी बजली-

“बौआ, जीवन मरि रहल अछि.!”

❑ आब नइ जीब

एतबे बुझह जे आइ जेठक दसराहा छी, ओना लोक बरिसाइते दिनसँ आम खाएब शुरू करै छैथ, मुदा अपना पाँच बरख पूर्वक सिहन्ता अखनो सिहिन्ते बनल रहि गेल अछि।

जहिना कल्पनाकेँ थुथुनो नमगर होइए आ नाडैर सेहो नमगरे होइए तहिना सपनाक सेहो दुनू नमगर-चौड़गर होइते अछि। निर्मल बाबा बजला-

“अहाँ एतबेमे परिवारकेँ सम्पन्न बुझै छी। जेना अपने सुनलौं तँ सुनिकऽ पाँच साए रूपैआमे दूटा बरहमसिया आमक गाछ कीनिकऽ आनि रोपिकऽ सेवा केलौं आ आइ जेठक दसराहा छी, जँ एकोटा आम पाँच बर्खक बीच भोग भेल रहैत तँ संतोष होइत। ओ सम्पन्नता तँ परिवारमे नहियेँ आएल।”

ओना बजैक क्रममे निर्मल बाबा बाजि गेला मुदा पछाइत अपने मोन पड़लैन जे भूगोलक दृष्टिसँ खेतीक काज ठानब उचित छल, मुदा से नहि भेल। आब तँ यएह ने उचित जे आजुक भौगोलिक परिवेशकेँ देखैत क्रियाशील होइ। ओना, जीबठगर लोक पाथरोपर दुभि जनमैबते छैथ आ भविष्यमे सेहो जनमेबे करता।

संयोग बनल, तहीकालमे रास्ता धेने अपने झंझारपुर जाइत रही कि निर्मल बाबा देखलैन। देखिते दरबज्जेपर सँ शोर पाड़ैत बजला-

“रमाकान्त, कनी सुनि लएह तखन जइहह।”

ओना, रही अपने अगुताइमे मुदा निर्मल बाबाकेँ सभ दिनसँ श्रेष्ठ बुझैत आबि रहल छिऐन तँए ठाढे-ठाढ़ सुनैक विचार मनमे रोपि लगमे पहुँचते बजलौं-

“की कहै छी बाबा?”

जेना पाशापर माने जीवनक पाशापर निर्मल बाबा हारि रहल छला तहिना मन तीताएल छेलैन। मुदा मनमे एते तँ छैन्हे जे केकरा लग केहेन शब्द केहेन भावमे बाजी। बजला- “रमाकान्त, मरब की जीब तेकर कोनो ठेकान नहि अछि, अप्पन

जीवनक घटल घटना एकटा अछि से पहिने सुनि लएह, पछाइत आगू बढ़िहह।”

निर्मल बाबाक विचार सुनि अपनो मनमे नव जिज्ञासा जगल जे जीवन केकरो किए ने होइ मुदा जीवन तँ जीवन छी। तहूमे मनुक्खक जीवनक घटना छी, कहियो ने कहियो खगता हेबे करत। बजलौं-

“बाबा, बेसी आहे-माहेमे नइ कहियौ, कनी अगुताएल छी। मुदा अगुताइमे एहनो विचार नइ छोड़ि देबै जइसँ विचारे घवाह, घवाह माने अधबुझू, भऽ जाए।”

अप्पन मनक सभ बात बजैक जगह पेब निर्मल बाबा बजला-

“रमाकान्त, तोरासँ परोछोमे पत्नीकेँ किछु बात कहि देने छिऐन, मुदा ओ पारिवारिक भेल। जड़ियेसँ कहि दइ छिअ।”

कोनो घटना वा काजकेँ जड़िसँ छीप धरि सुनिकऽ गुनबे ने बुधिक (ज्ञानक) गुनब भेल। मने-मन मनकेँ ब्लैक बोर्ड जकाँ साफ करैत बजलौं-

“कहियौ?”

निर्मल बाबा बजला-

“तोहूँ देखै छह रमाकान्त जे अनका जकाँ मनमे अखनो माने साठि बर्खक उमेर बितला पछातियो, मनमे नइ आएल अछि जे आब जे कोनो फल-फलहरीक गाछ रोपब, तँ अपनो भोग हएत कि नहि, तँए रोपबे ने करब। शुरूहेसँ सभ दिन मनमे एहेन धारणा बनले अछि जे सभ दिन किछु-ने-किछु नव लगाबी। तँए पाँच बरख पूर्व जखन फल-फलहरी भोजनक गुण बुझलौं तखन ठिकियाकऽ किसान मेलामे पूसा पहुँचलौं।”

ओना, पूसाक किसान मेलामे भाग लेबाक इच्छा अपनो मनमे केते दिनसँ अछि मुदा कुसंयोग एहेन होइत रहल जे अखन तक नहियेँ जा भेल अछि। बजलौं-

“मेलामे की सभ देखलिऐ, बाबा?”

निर्मल बाबा निष्कपट भावमे बजला-

“देखै-सुनैक की कोनो ठेकान रहल, बहुत लोको देखलिऐ आ खेती-वारीक बहुत गाछ-बिरीछ, बीआ-बाइल सेहो देखलिऐ मुदा से सभ कथीले। अपने दूटा बरहमसिया आमक गाछ कीनलौं। मन सपनाएले छल जे बारहो मास जखन आम

सन फल भेटत तखन जीवनमे खगते की रहि जाएत।”

आगूक बात बुझल रहैत तखने ने से तँ छल नहि, तँए बजलौं- “अहाँ तँ बाबा कमाल कऽ देलिऐ। तेहेन ठिकिया कऽ गोटी चाललौं जे एक्के गोटीमे पार भऽ जाएब।”

अपना जनैत नीके बात बाजल छेलौं मुदा निर्मल बाबाकेँ नीक नइ लगलैन। बजला-

“की गोटी चालब, सभ पानिमे चलि गेल।”

बजलौं-

“से केना बाबा?”

निर्मल बाबा बजला- “तोहूँ बजार जाइक धड़फड़ीमे छह आ अपनो बजैमे संकोच होइए, एतबे बुझह जे आइ जेठक दसराहा छी, ओना लोक बरिसाइते दिनसँ आम खाएब शुरू करै छैथ, मुदा अपना पाँच बरख पूर्वक सिहन्ता अखनो सिहिन्ते बनल रहि गेल अछि।”

बजा गेल- “से केना बाबा?”

निर्मल बाबा बजला- “निचेनमे दोसर दिन जड़िसँ छीप धरि सबटा सुना देबह।”

अकछाइत निर्मल बाबाकेँ देखि बजलौं- “अखन जाइ छी बाबा, मुदा सुनब बाँकी रहल।”

❑ सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल

अनेरे अठारहो पुराणक चारि लाख
मंत्र–श्लोक–पढ़ै पाछू जे अप्पन अस्सी बर्खक
उमेर खपा लेब आ पाएब किछु ने, तइसँ नीक ने जे
वेदक एक्के लाख मंत्रकेँ जपैत पाँच लाख मंत्रक भोग
भोगि लेब। तेकर माने ई नइ बुझब जे वेदक मंत्र
मनुक्खक वृद्धि–विकास–क संग-संग चलबो
करैए, निरमैबतो अछि आ पैछलाकेँ
छोड़ितो तँ अछिए।

पत्नी चाह नेने दरबज्जापर पहुँचबे केलीह कि रस्तापर भोगीलालकेँ अबैत देखलिऐ। मनमे ठहैक गेल जे हालक सभ समाचारक भाँज नीक जकाँ लगि जाएत। ओना, भोगीलालक बेवहार अपना संग कहियो अधला नहि रहल अछि, जेना लोकक मुहसँ सुनै छी। तेकर कारणो अछि जे अप्पन जीवनक असारे-पसार कम अछि, तँए बेसी लोकक खगता नहियेँ होइए जइसँ लोककेँ चिन्हैक अवसर भेटत। मुदा एते तँ कानसँ सुनबे करै छी जे गाममे भोगीलाल सन धुरफन्ना लोक दोसर नहि अछि। की धुरफन्ना अछि आ लोक की धुरफन्ना बुझै छैथ से तँ गामक साढ़े पाँच हजार लोकक मन जनतैन मुदा अपना मनमे से सभ किछु ने अछि। लोको तँ लोक छीहे, केतौ कोनो घटनाक जँ पक्षकार होइ छैथ तँ सुन्नर-सुडौल शब्दमे बजै छैथ आ केतौ घटनाक विपक्षकार रहल तँ चिक्कन-चुनमुन शब्दमे बजिते छैथ। खाएर जे छैथ, ओ गाम-गामक लोक अप्पन-अप्पन गाम-समाजक बात बुझता। ..भोगीलालकेँ देखि पत्नीकेँ कहलयैन- “एक गिलास चाह आरो नेने आउ।”

चाह आनए पत्नी आँगन दिस बढ़ली आ अपने भोगीलाल दिस देखैत बजलौं- “भोगीलाल, तूँ बहुत दिन जीबह।”

जहिना कोनो रचनाकारक रचित विचार बेर-बेर दोसराक मुहसँ निकलने आयुमे वृद्धि होइ छैन तहिना ठिकियाकऽ भोगीलालकेँ देखि बाजल छेलौं। मुदा भोगीलाल तँ भोगीएलाल छी, कखन भोगीलाल बनल रहत आ कखन जोगीलाल बनि जाएत, तेकरो कोनो ठेकान नहियेँ अछि। ..जहिना बजलौं तहिना ठोराहि मौगी जकाँ, माने बिनु सोचने-विचारने कोनो प्रश्नक उत्तर दइबाली, जिनका दोसर रूपमे 'ठोरेपर बरी पकबैवाली' सेहो कहल जाइ छैन, तहिना भोगीलाल बाजल- "काका, अहाँ सबहक आसीरवादसँ ने जीबो करै छी आ जीबो करब।"

तैबीच पत्नियोँ चाह नेने आँगनसँ पहुँचली आ भोगीलाल सेहो दरबज्जापर आबि बैसल। पत्नीकेँ रौतुका घटनाक भनक लागि गेल रहैन। अँगने बाहरैकाल मनमोहनवाली भौजी कनफुसकी कहि देने छेलखिन जे केतौ बाजब नहि। तँए पत्नी हमरोसँ छिपाइये कऽ रखने छेली। बजली नहि। पति-पत्नीक बीच सेहो बिचौलिया प्रबल अछिए। जहिना कारोबार करैत एजेन्ट सभ करैए। सुधंग स्त्रीगणकेँ पोल्हा बजैए जे पाइ-कौड़ीक मामला छी, केतौ बाजब नहि, आ कनतोरीमे राखल गहना-जेबर ठकि लइए।

पत्नीक हाथमे चाह देखिते भोगीलाल बाजल-

"भाय साहैब, भरि राति जगले छी।"

जहिना भोगीलाल बाजल तहिना अपनो बजलौं-

"चाह पीब लएह, नीनक भक टुटि जेतह। तखन गाम-घरक गप-सप्प करब।"

ओना, अनका लगमे भोगीलाल जेहेन सरपट मुँह खोलैए तेना अपना लगमे नहि खोलैए मुदा सरपट ढोलक बजौनिहारक हाथ जहिना कखनो-कखनो बहैक जाइ छै, तहिना सरपट बजनिहारक मुँह सेहो बहैक जेबे करै छइ। ..भोगीलाल बाजल- "भाय साहैब, गाम-घरक गप अथाह अछि। केकर मजाल छी जे गाम-घरक थाह पौत।"

भोगीलालक विचार किछु सोहंतगर सेहो लगल आ किछु अनसोहंतगर सेहो लगबे कएल। पुछलिऐ- "से की भोगी?"

आदरपूर्वक किनकोसँ कोनो विचार पुछलापर जहिना मान-अपमानक विचार मनमे जगिये जाइ छैन, तहिना भोगीलालकेँ सेहो भेल। तैबीच गिलासक आधासँ बेसी चाह पीब नेने छल। भोगीलाल बाजल- "भाय साहैब, अखन गाममे एकटा नव घटना घटि गेल अछि, तँए गामक जड़िक चर्च अखन नइ करब। मुदा संक्षेपमे तँ एते कहिये देब जे कोनो गाममे केते रंगक माटि अछि, केते रंगक पानि अछि, केते रंगक गाछ-बिरीछक संग अन्न-पानिक उपजो-बारी आ उपजौनिहारो केते रंगक छैथ से थाह लगाएब असान थोड़े अछि.!"

भोगीलालक तथ्यपूर्ण विचार अपनो मनमे ठहकल। ठहैकते बजलौं-

"अखन पुरना गप-सप्प छोड़ह। हालक जे हालत अछि तेतबे गप करह।"

भोगीलाल बाजल- "भाय साहैब, काल्हिसँ आइ धरिक जे घटना अछि अखन तेतबे कहै छी।"

अपनो नीक बुझि पड़ल। अनेरे अठारहो पुराणक चारि लाख मंत्र–श्लोक–पढ़ै पाछू जे अप्पन अस्सी बर्खक उमेर खपा लेब आ पाएब किछु ने, तइसँ नीक ने जे वेदक एक्के लाख मंत्रकेँ जपैत पाँच लाख मंत्रक भोग भोगि लेब। तेकर माने ई नइ बुझब जे वेदक मंत्र मनुक्खक वृद्धि–विकास–क संग-संग चलबो करैए, निरमैबतो अछि आ पैछलाकेँ छोड़ितो तँ अछिए। ..बजलौं-

"अपना जे नीक बुझि पड़ह, सएह बाजह।"

अपन दशा-दिशा व्यक्त करैत भोगीलाल बाजल-

"भाय साहैब, की कहब। दिन-राति जइ समाजक पाछू, माने गामक समाजक पाछू, समय खपबै छी सएह समाज धुरफन्ना लोक बुझैए।"

❑ धुरफन्ना लोक

जैठाम माने जइ देशमे बेरोजगारीक बोझ रहत तैठाम पढ़ाइक डिग्रीक कोनो मोल नहियेँ रहैए, से अपनो ऐठाम अछिए। देखबे करै छी वैज्ञानिक बनैबला रेलबे स्टेशनमे टिकट काटै छैथ।

पौने नअ बजे रातिमे रामपुरसँ गाम आबि कलपर हाथ-पएर धोइ कऽ लोटामे पानि भरि, कोठरीमे आबि ओछाइन दिस देखलौं कि उत्तिमलाल भाय मनमे नाचि उठला। मनक नाचकेँ मनेमे दाबि ओछाइन झाड़िकऽ बिछेलौं। मनसँ उत्तिमलाल भाय उतरला तँ नहि मुदा मनमे नाचब कम भऽ गेल छल। ऐठाम एकटा प्रश्न अछि, ओ अछि रामपुरक भैयारी, तीन कोस हटल गाम उत्तिमलाल भाइक छैन आ तहिना हुनकासँ हटल अपनो घर तँ अछिए, तैठाम भैयारीक सम्बन्ध केना भेल? ..ओना, मातृक वा कोनो आन सम्बन्धमे सेहो भैयारी होइते अछि, तइसँ भिन्न उत्तिमलाल भाइक संग अप्पन भैयारी अछि। नोकरीक जीवन रहने बहुत दिन धरि दुनू गोरे एकठाम रहबो कएल छी आ बेवहारिक जीवनमे एकरूपता सेहो अछिए जइसँ जीवनक अनेको मर्मस्थल दुनूक गोरेक एकरंगाहे अछि। हँ, ऐठाम समाज वा परिवारक बीच जे भैयारीक सम्बन्ध अछि ओ एकटा वंशगत अछि आ दोसर सम्बन्धगत अछि।

ओहुना देखिते छी जे अपना सबहक बीच जेतेक सम्बन्ध अछि ओ सीढ़ीनुमा अछि, वंशगत भैयारीक सम्बन्धमे सेहो थोड़-बहुत माने उम्रक चलैत सीढ़ीनुमा अछिए, मुदा से समाजगत भैयारीमे नहि अछि। परिवारमे ‘भैया-बौआ’क चलैन अछि, मुदा समाजमे ओ ‘भाए-भैयारी’क रूपमे बदैल जाइए, जे एकरूपताक रास्ता सेहो पकड़ैबिते अछि। खाएर जे अछि ओ जानैथ परिवार-समाजक लोक। अपना तँ अप्पन जिनगी अछि। अपना देहमे ओहन बिमारीए ने भऽ जाए जे सदिकाल मन व्याकुले बनल रहए। तइले अपने ने विचारबो करब आ तेकर

निमरजनो करब।

ओछाइन बीछा सिरमापर जहाँने मुड़ी देलौं कि उत्तिमलाल भाइक बेटी-बिआहक परेशानी धक-दे मनमे खसल। ओना, बिआहक सभ बेवस्था देखि मन मानि गेल अछि जे उत्तिमलाल भाय जीवनक अन्तिम बेड़ा नीक जकाँ पार कऽ रहला अछि। आजुक जे परिवेश बनि गेल अछि आ बनियोँ रहल अछि तइमे नहियेँ जाएब नीक, मुदा बाघा तँ ईहो अछिए जे जँ बिआहक काजकेँ वहिष्कार करब तखन बेटा-बेटीक बिआह केना हएत। आ जँ बिआह नइ हएत तँ परिवार बनि समाज ठाढ़ केना हएत?

बेटी बिआहक सभ प्रक्रिया उत्तिमलाल भाय जीह खोलि कऽ केने छैथ। आन गामक आन जातिक बात नइ कहै छी जे जाबे बर दुआरि नइ लगता ताबे जँ कियो बरात दरबज्जापर एबो करता तँ हुनका बरियातीक मोजर नइ हेतैन, तँए चाह-पानक कोन गप जे कियो कुशलो-क्षेम पुछनिहार नइ होइ छैन। तइसँ विपरीत उत्तिमलाल भाय ऐठाम देखलयैन। बर-बरियाती रातिक दस बजेक बाद पहुँचता, मुदा खेनाइ-पीनाइ दस बजे दिनेसँ शुरू भऽ गेल छल।

अप्पन समयक अँटावेश करैत सात बजे साँझमे उत्तिमलाल भाय ऐठाम पहुँच आँगन-सँ-दरबज्जा धरि घुमि-फिर कऽ सभ किछु देखि मन आश्वस्त भइये गेल जे उत्तिमलाल भाय सफल बेवस्था केने छैथ। सभ किछु देखि-सुनि उत्तिमलाल भायकेँ कहलयैन- “भाय, हम नइ रूकब। सभ किछु देखि-सुनि लेलौं, आब जेबाक आदेश दिअ।”

अपने ई सोचि बाजल रही जे उत्तिमलाल भाय अप्पन काजमे तेजी अनता, जइसँ काज आगू मुहेँ ससरैत बढ़तैन। जहिना अपने बजलौं तहिना उत्तिमलाल भाय खाइ-पीबैक जगहपर हमरा पहुँचा कऽ कहि देलैन-

“भोजन केलाबाद अहाँ चलि जाएब।”

गाड़ी-सवारी बढ़ने, एते तँ भइये गेल अछि जे नमहरो राति छोट भऽ गेल अछि आ छोटो दिन नमहर भऽ गेल अछि, माने काज करैक समय बेसी भेने बढ़ि गेल अछि। बजलौं- “उत्तिम भाय, घरदेखी बाँकी रहल।”

उत्तिमलाल भाय बजला- “बड़बढ़ियाँ।”

सिनेमाक रील जकाँ अप्पन विचारक रील सेहो आगू मुहेँ बढ़ल। आगू बढ़िते उत्तिमलाल भाइक पाँच बर्खक परेशानी मोन पड़ि गेल।

कहनिहारो आ बजनिहारो कहिते छैथ आ बजिते छैथ जे बेटा-बेटीक बिआह एक निश्चित सीमापर होइ। मुदा चाहलाक पछातियो कान्ही मिलबैमे, माने बर-कन्याक जोड़ मिलबैमे बर्खक-बरख गुजैर जाइए, तखन निश्चित सीमाक निश्चित सिमान केना रहत। खाएर जे रहए, ऐठाम उत्तिमलाल भाइक चर्च करै छी।

आन गुण उत्तिमलाल भायमे जे होनु मुदा बेटा-बेटीकेँ पढ़बैक गुण हुनकामे सभ दिनेसँ अनका अपेक्षा बेसी छैन्हे। जइसँ तीनू बेटियो आ दुनू बेटोकेँ एक सीमा धरि पहुँचाइये चुकल छैथ। ऐठाम सीमाक माने एक खण्डक सीमा, ओना जैठाम माने जइ देशमे बेरोजगारीक बोझ रहत तैठाम पढ़ाइक डिग्रीक कोनो मोल नहियेँ रहैए, से अपनो ऐठाम अछिए। देखबे करै छी वैज्ञानिक बनैबला रेलबे स्टेशनमे टिकट काटै छैथ। जइसँ उत्तिमलाल भाय पाँचो सन्तानकेँ एक सिमानपर पहुँचेला पछातियो, काजक अभावमे नोकरी नइ भेने, परेशान छथिए। ओना, अपना नीक नोकरी रहने उत्तिमलाल भायकेँ नीक पेंशनक आशा छैन्हे, मुदा उपभोक्ता समय भेने सभ वस्तुक पूर्ति नहियेँ कऽ पाबि रहला अछि।

❑ **घरदेखी**

“भाय, समाज निरलज भऽ गेल अछि, एक दिस कन्याकेँ दान स्वरूप मानैए आ दोसर दिस कन्याकेँ मनुक्खक श्रेणीसँ निच्चाँ उतारि देने अछि.!”

“भाय, एना जँ परिवारसँ मुँह मोड़ब तँ रहब केतए.?”

जेहने अध्येता तेहने ध्याता उत्तिमलाल भाय सभ दिन रहला। दार्शनिक भावमे बजला- “जिज्ञासु भाय! की कहब, किछु कहने किछु ने बनैए..!”

बजलौं- “से की भाय?”

अलंकारिक शैलीमे उत्तिमलाल भाय बजला-

“परिवारक राग छुटने लोककेँ विराग होइए आ विरागसँ जखन अनुराग होइए तखन ने अनुरागसँ दुनियाँक प्रति राग अबैए। तखन अहीं कहू जे जइ परिवारसँ वा आने वस्तुक रागसँ विराग होइए तँ ओकरा की करबै?”

अपने तँ साधारण बी.ए. पास केने छी। तहूमे चुड़ा-दही-चिन्नी पढ़िकऽ, माने भेल साइक्लॉजी, लॉजिक आ मैथिली पढ़ल छी, तँए उत्तिमलाल भाइक विचारकेँ नहि पकैड़ मुँहछोहैन करैत बजलौं- “भाय, आब ने ओ देवी रहल आ ने ओ कराह, तँए छोड़ू ओइ सभकेँ। कन्यादानक की स्थिति अछि?”

कारी घट-घटासँ बोझिल मेघमे एकाएक जहिना केतौ फाट एने सुर्जक प्रकाश प्रकाशित होइए तहिना उत्तिमलाल भाइक चेहरापर इजोत छिटकलैन। जइसँ कलियाएल फूलक कोढ़ी जकाँ एकाएक उत्तिमलाल भाइक मुँहक सुरखीक रंग उतरए लगलैन। बजला- “भाय, विचित्र बनरफाँसमे पड़ि गेल छी। रावणक दरबारमे जहिना हनुमानकेँ फाँस लगा आनल गेल रहैन तहिना लगैए अपनो संग भऽ गेल अछि.!”

पुछलयैन- “से की भाय?”

उत्तिमलाल भाय बजला- “अप्पन जे जातिक समाज अछि तइमे अपना

गाममे तँ अपनेटा आ आन गाम बहुत एहेन अछि जइ गाममे हमरा बेटी एतेक पढ़ल-लिखल नहि अछि, तैठाम अहीं कहू जे हम्मर बेटी एक नम्बर भेल की नहि?”

उत्तिमलाल भाइक दमगर विचार सुनि केना कहितिऐन जे अखन तक अहाँक रूआब कम नहि भेल अछि, बजलौं-

“एकरा के काटत।”

हम्मर विचार सुनि उत्तिमलाल भायकेँ जेना सह भेटलैन तहिना बजला-

“एकठाम लड़काक भाँज लगिते, काजक विचारकेँ आगू बढ़ेलौं। देखिते छी जे डॉक्टर लड़काक मांग डॉक्टर लड़कीक परिवारमे केहेन भऽ रहल अछि। शिक्षक-किरानीक तँ विचार छोड़ू, वेचारेकेँ दरमहो कम छैन आ भनसियो सब दिन रोगाएले रहै छैन।”

हमर विचारक प्रभावसँ आकि अप्पन मनक उत्साहसँ, से उत्तिमलाल भाय अपने जनता, मुदा मन्हुआएल मने बजला-

“भाय, एकठाम लड़काक सूहकार भेटल। एकटा संगीक संग ओइठाम गेलौं।”

कहि उत्तिमलाल भाय एकाएक ओहन चरिचकिया गाड़ी जकाँ जे पेट्रोल वा डीजल सठने रूकिकऽ ठमैक जाइए तहिना रूकि गेल। बजलौं- “भाय! अखन हमहूँ निचेने छी, तँए कोनो विचारकेँ राखू नहि।”

हम्मर बात सुनिते हूबा करैत उत्तिमलाल भाय बजला-

“भाय, समाज निरलज भऽ गेल अछि, एक दिस कन्याकेँ दान स्वरूप मानैए आ दोसर दिस कन्याकेँ मनुक्खक श्रेणीसँ निच्चाँ उतारि देने अछि.!”

उत्तिमलाल भाइक विचार नीक जकॉं नइ बुझलौं, तँए पुछलयैन-

“से केना भाय?”

खिसियाएल बिलाड़ जकॉं धुर-खुर नोचैत उत्तिमलाल भाय बजला- “कहू जे जइ बेटीकेँ माता-पिता जन्मसँ जवान होइ तक पालि-पोसिकऽ दान करैए, तैठाम लोकक मन एतबो नइ मानैए जे कि भरि-भरि दिन नैतिकताक रट लगबैए।

तेहेन लगौनिहारक नैतिकता केतए अछि।”

बजलौं-

“से की भाय?”

उत्तिमलाल भाय बजला-

“नैतिकताक सम्बन्धमे अखन एतबे कहब जे नैतिकता जीवनक अमूल्य रत्न छी। कहियो दोसर दिन आगूक चर्च करब जे नैतिकता की छी।”

उत्तिमलाल भाइक विचार सुनि अपनो मन मानि गेल जे अखन कन्यादान सन विषयपर विचार कऽ रहलौं हेन, तखन दोसर विचारक भूमियो तँ नहियेँ अछि। बजलौं-

“अखन छोड़ू दुनियॉदारीक गप-सप्प, ठनका ठनकै छै तँ कियो अपना मथ्थापर हाथ दइए। गपकेँ आगू बढ़ाउ।”

उत्तिमलाल भाय बजला-

“जखन दुनू समांग बैस कऽ बेटी-बिआहक चर्च उठेलौं कि बरक बाप सुहरदे मुहेँ कहि देलैन, ‘अहॉं ऐठाम कुटुमैती नइ करब’। अपने तँ चुपे रहलौं मुदा संगी पुछि देलकैन, ‘किए ने करब?’ तैपर ओ बजला, ‘बेटी कारी छैन’। मन तँ तेते गरमा गेल जे मुँहमे पाँच थापर लगाबी, मुदा चुप-चाप उठिकऽ विदा भऽ गेलौं।”

❑ घरदेखी

जखन अप्पन समाज सोल्होअना
अनपढ़ छला तखन जँ कियो समाजमे पढ़ि-
लिखि गामक श्रममे सहयोगी बनए चाहै छला तँ
अपन कृषको समाज हुनका दुतकारलकैन। जे तोहर
काज गाममे नहि अछि बाहर जो। हँसि-हँसि गेबो-
बजितो तँ छेलाहे जे 'पढ़ए फारसी बेचए तेल,
देखू भाय करम-के खेल.!'

सुवासिनीकेँ मैट्रिकमे प्रथम श्रेणीक रिजल्ट सुनि किशोरनाथ अपन पत्नीक सोझामे माने सुवासिनीक माइक सोझामे, हलसैत संकल्पित होइत सुवासिनीकेँ कहलैन- "बेटी, जहिना तूँ अप्पन लगनसँ एते सोहनगर, सुन्नर रिजल्ट देखौलह आ पत्नी अपन पुत्रीपालनक परिचय एहेन चिक्कन देलैन, तहिना हमहूँ पिता छिअ। तोरा हम अपनासँ बीस (नीक) लड़काक संग जुड़िबन्धन करेबह। चाहे अप्पन सम्पैत केतबो किए ने गमबए पड़ए।"

एक तँ ओहिना परिवारमे पहिल मैट्रिक पासक खुशी, जे सुवासिनीमे सभसँ बेसी छल, तइसँ कम आ पितासँ बेसी माइक मनमे रहैन। ओना, पितोक मनमे कम खुशी नहियेँ छेलैन, किए तँ समाजक बीच किशोरेनाथक बेटी सुवासिनी छी किने। ओना, परिवारक खुशी होउ कि समाजक आकि बेकतीएक, खुशी-खुशीमे अन्तर सेहो अछिए। एक खुशी भेल जे समाजमे कोनो नीक काजक रहल, दोसर भेल परिवारक कोनो नीक काज भेने जे खुशी होइए से आ तेसर भेल ओहन खुशी जे समूहपन नेने रहल। तइसँ सभकेँ अप्पन-अप्पन कर्तव्य-कर्मक खुशी होइए। सएह खुशी किशोरनाथक परिवारमे छेलैन।

अप्पन संकल्प व्यक्त करैत किशोरनाथ पत्नीकेँ कहलखिन- "जहिना अहाँ बेटीकेँ बेटोसँ ऊपर बनेलौं तहिना हमहूँ अपनासँ बीसमे बेटीकेँ पहुँचाएब।"

ऐठाम बेटासँ बेटीकेँ ऊपर बनबैक कारण भेल, जैठाम आन समाजक बेटा

स्कूलक मुँह आँखि नइ देखलक, तैठाम जँ प्रथम श्रेणीसँ दोसर गामक बेटी मैट्रिक पास केलक, ऐठाम एकटा आरो बात अछि। ओ अछि पढ़ाइ-लिखाइक स्थायी स्तर। जहिना कोनो गाममे जे अखन तक किसानी जीवनक गाम रहल। जैठाम नोकरी करैक दिसा गाए-महींसवारि तक छल, तैठाम बहरमुहाँ नोकरीक शुरूआत चपरासी-चौकीदारसँ होइत, किरानी-लोअर प्राइमरी स्कूलक शिक्षकक स्तरसँ आगू उठैत प्रोफेसर, वकील, अफसर, डॉक्टर, इंजीनियर स्तरमे पहुँचैए। जखन समाजक शिक्षा ऊपर स्तरमे पहुँचैए तखन जीवनक ओ स्वरूप पूर्णरूपेण बदैल आगू बढ़ि जाइए जे पूर्वमे छल। ओना, एक्की-दूक्की हेराएलो-भोथियाएल गाममे गोटि-पङरा नीक विद्यार्थी सेहो होइ छैथ आ ऊच्च सीढ़ीपर सेहो होइते छैथ, जे कीचड़क कमल जकाँ देवसिर ऊपर चढ़िते छैथ, मुदा एकरा संयोग कहबै। ओना, एहनो तँ कहले जा सकैए जे हजारो बीघाक खेतक बीच, जैठाम एकोटा गाछ-बिरीछ नइ रहैए, तहूठाम तँ चिड़ैक खेलहा फल बीज रूपमे खसि, एहनो गाछ तँ जनमिते अछि जे असगरो आसमानक टुटल पानिक संग पाथरक आक्रमण, धरतीक पैघ-सँ-पैघ भुमकम आदि सहि ठाढ़ रहैत अछि जे फलक रूपमे नीक फल आ हवाक रूपमे नीक ऑक्सीजन सेहो दइते अछि। भलेँ ओ अप्पन समाजक, माने गाछसँ गाछीक बीच, नहियोँ अपनाकेँ बुझैए, तैयो ओ नेतघटू कहाँ अछि। चाहे पीपर हुअए कि आम, अप्पन संकल्पित कर्तव्य फलसँ ऑक्सीजन धरि दइते अछि। एकर माने ई नइ बुझब जे मुख्य सड़क सभक कतवाहिमे पीपर लगबए कहै छी। अहाँक सड़क छी जे मन फुरए से करू। बनझर लगाउ कि बनकाँट अहाँक खुशी छी।

ओटावा कनाडाक राजधानी शहर छी। ऐल-फैलसँ तँ भारी-भरकम अछिए मुदा जनसंख्या हिसाबसँ करोड़ोक नइ अछि। ओहन देश अछि जैठाम एकभाग माने न्यूफाण्डलैण्डमे सूर्योदय होइए तँ दोसर भाग यूक्रेनमे मध्य राति रहैए। खाएर जे अछि सएह रहह।

रकबा हिसाबे कनाडा दुनियाँक दोसर देश छी जे सभसँ नमहर देश अछि। माने भेल खेत-पथार, गाछी-बिरछी, नदी-नाला, पहाड़ इत्यादिमे कनाडा दोसर स्थानपर अछि। ओकर रकबा छै- निनानबे लाख छिहत्तैर हजार एक साए

उनचालीस वर्ग किलोमीटर, जखन कि भारतक रकबा अछि बत्तीस लाख अस्सी हजार चारि साए तिरासी वर्ग किलोमीटर। माने भेल भारतक क्षेत्रफल कनाडासँ अधोसँ कम, तिहाइक लगभगमे अछि। जखन कि जनसंख्या हिसाबसँ जैठाम भारतक एक अरब तीस करोड़ अछि तैठाम कनाडाक छअ करोड़क लगभग मात्र अछि।

अपना ऐठामक सामाजिक परिवेश एहेन बनियेँ गेल अछि जे पढ़लो-लिखल आ बिनु पढ़लो-लिखल लोक गाममे रहए नहि चाहि रहला अछि। एकर हजारो कारण अछि। मुदा अखन मात्र दूटाक चर्च करब। पहिल, जखन अप्पन समाज सोल्होअना अनपढ़ छला तखन जँ कियो समाजमे पढ़ि-लिखि गामक श्रममे सहयोगी बनए चाहै छला तँ अपन कृषको समाज हुनका दुतकारलकैन। जे तोहर काज गाममे नहि अछि बाहर जो। हँसि-हँसि गेबो-बजितो तँ छेलाहे जे 'पढ़ए फारसी बेचए तेल, देखू भाय करम-के खेल.!'

ओना, कर्मक फल दुनू पक्ष सुफल कहले जाएत मुदा से नहि, विकृत्ति रूपमे कहल गेल। माने निन्दाक रूपमे बेसी प्रयोग भेल। दोसर कारण ईहो भेल जे जे नवयुवक बाहर पढ़ैले जाइ छला ओ अप्पन गामक दशा दिस जखन देखै छला तखन शहरक अपेक्षा गाममे अभावे-अभाव सेहो देखिये पड़ै छेलैन। माने ई जे लोकक स्थिति एहेन छल जे भरि पेट अन्न, जे जीवनक पहिल आवश्यकता छी, सेहो नहि भेटै छेलैन। एहेन स्थिति 1970 ई.क पूर्व तक देशमे धड़ल्लेसँ छल, ओ धीरे-धीरे कमैत, छोट आकारमे अखनो अछि। पढ़ल-लिखल नौजवानकेँ अभाव तँ जरूर देखि पड़लैन मुदा ई नइ गौर कऽ सकला जे बाप-दादाक सइयो-हजारो पुस्तक देल जन्मभूमि छी, अप्पन गाम छी, अप्पन समाज छी। तँए, अप्पन खगता, माने जीवनक मूल आवश्यकता, परिवेशक हिसाबसँ माने जुगानुकूल बनबैक दायित्व सेहो अपने ने लिअ पड़त।

❑ **सुमारक**

गीता पढ़ैसँ पहिने ई देखि लिअ पड़त जे गीताक ज्ञान कृष्ण अर्जुनकेँ कखन देलैन। ओ देलैन जीवनक रणभूमिमे। तँए अपनाकेँ जखन ओइ भूमिपर ठाढ़ करब, तखन गीताक जे ज्ञानक वास्तविक रस अछि से भेटत। मुदा जँ दुपहर वा रातिमे सुतैकाल नीन नइ अबैत हुअए तखन जँ नीन आनैले गीताक पन्ना उनटाएब तइ ज्ञानक बीच अन्तर नइ होइए सेहो केना नइ कहल जाएत।

जीवनक अन्तिम ढलानपर, माने पचहत्तैर-अस्सी बर्खक अवस्थाक बीचमे, अधमलाल आ सधमलालकेँ हृदयक मिलान माने छाती लगा मिलब, सार्वजनिक स्थानपर समाजक बीच भेल। दुनूक अपनो नेत्र-नजैर देखलकैन आ समाजक सेहो।

बीसम शताब्दीक सातम दशकमे दुनूक पहिल भेँट भेल छेलैन। अप्पन गताती-ऐठामसँ अधमलाल अपना गाम पएरे जाइ छला। रस्ताक बगलेमे सधमलालक दरबज्जा छैन। दरबज्जेक आगूमे सधमलाल बाँसक फट्ठाक मचान बैसै-उठैले बनौने छैथ। संयोग बनल सधमलाल मचानेपर बैसल रहैथ कि तहीकाल अधमलाल रस्तासँ गुजरैत रहैथ कि दुनू आमने-सामने भेला। जइसँ मनक दबाएल विचार एकाएक प्रस्फुटित भऽ गेलैन। एक-दोसर मुस्कुराइत, जीवनक पहिल आशाक रूपमे, कुशल-क्षेम केलैन। एकठाम बैस करीब आधा घन्टा धरि जीवनक गप-सप्प दुनूक बीचमे भेल। दुनू कौलेजक विद्यार्थी।

अखन तक जे सामाजिक परिवेश छल, ओ आजुक अपेक्षा दोसर तरहक छल। आजादीक आन्दोलनमे देशक जन-गण, स्वतंत्र जिनगीक कामना करैत अप्पन जान-प्राण न्योछावर करैले तैयार भेला, बहुत करबो केलैन, ई सोचि कऽ जे

ऐगला पीढ़ी स्वतंत्र जिनगीक साँस लेत, स्वतंत्र जीवन व्यतीत करत। 1967 इस्वीक पछाइत, माने देश स्वतंत्र भेला पछाइत, अप्पन देश बुझि सभ अप्पन-अप्पन जीवनकेँ स्वतंत्र रूपमे क्रियान्वित केलैन। ओना, देशक बीच देशसँ बँटल दोसर देशक झगड़ा देशमे लधाइये गेल मुदा ओ जनमानसक जवाबदेहीक नहि जनमानसक विचारसँ चुनल सत्ताक जवाबदेहीक छलो आ अछियो। गाम-गाममे गोटि-पङरा समाजक सेवा करैबला लोक छैथ। तैबीच सइयो रंगक रस्तो आ विचारधारो पसरले अछि। विचारधाराक माने भेल जे गाममे अखनो जँ साँप कटैए, तँ तंत्र-मंत्रक नाओंपर झाड़-फूक करैत लोकक जान लइये रहल अछि। ओना, चौथाइ प्रतिशत लोक झाड़-फूकसँ हटि डॉक्टरी इलाज दिस सेहो बढ़िये रहला अछि आ झाड़-फूक केनिहार सेहो अपना विचारमे संशोधन कइये लेलैन अछि जे सँपकटियाकेँ कहै छैथ- 'झाड़ो-फूक कराबह आ एकबेर डॉक्टरोसँ देखा लएह।' यएह तँ छी समाजक जाल।

शिक्षाक क्षेत्रमे ओहन परिवेश छेलैहे जे किछु जातिमे, अखन तक जे जाति-विभाजित समाज अछि तइ अनुकूल, पढ़ल-लिखल लोकक संख्या बेसी छल आ बेसी जाति ओहने छल जइमे थोड़-थाड़ शिक्षाक अलख जगल छल आ अधिकांश अन्हारेमे छला। जाति-जातिक बीच जे पढ़ल-लिखल सभ छला ओ अपनामे एहेन हिसाब जरूर जोड़ै छला जे अपना जातिमे फल्लाँ गाममे एकटा इंजीनियर भेला अछि ते फल्लाँ गाममे एकटा डॉक्टर।

सत्तासँ जुड़ल लोकक बीच जातीय उन्माद छेलैन्हे। जइसँ अराजक स्थिति समाजमे छेलैहे। जातिक संगठनक बलेँ एम.एल.ए.-ए.पी.क हार-जीत भेने जातिक दब-दबा सत्तासँ समाज धरि छेलैहे। 1967 इस्वीक चुनावमे सत्ता दलक संग विरोधी दलक सामूहिक संगठनक बीच राजनीतिक दलक पहचान बनल। मुदा सामाजिक रूपमे कोनो तेहेन बदलावक रूप नइ निखरल। हँ, एते सत्ता परिवर्तन जरूर भेल जे अधिकांश जातिक एम.एल.ए; एम.पी. सेहो भेला। बिहारमे संयुक्त सरकार बनल। संयुक्त सरकारमे तैंतीस सूत्री कार्यक्रम तय भेल आ ओकर प्रभाव जीवनक हर क्षेत्रपर पड़ल।

अधमलाल आ सधमलालक गामक दूरी करीब पच्चीस किलोमीटरक छैन। गप-सप्पक क्रममे दुनूक बीच सम्बन्ध बनल रहबे केलैन मुदा बेवहारिक सम्बन्ध

नहि बनि पेलैन। ऐठाम एकटा आरो प्रश्न अछि। ओ अछि गप-सप्पक सम्बन्ध आ विचारक सम्बन्ध। विचारक सम्बन्ध विचारधारासँ जुड़ल रहैए आ गप-सप्पक सम्बन्ध से नइ छी। ओना, उचित-अनुचितक विचार बेकता-बेकती सेहो नीक-अधला अछिए जे बहुत किछु समाजक लेल उपयोगियो अछिए मुदा सत्तासँ जुड़ल समाजक बीच बेवधान भइये जाइए। कारणोँ अछि। कारण अछि जे बोल-भरोससँ माने गप-सप्पक क्रममे तँ सत्ता सबहक छीहे। मुदा सत्ता आ समाजक बीच जे सम्बन्ध अछि ओ पूर्ण नहि, खण्डित अछि।

कौलेज छोड़ला पछाइत अधमलाल कौलेजक शिक्षक भेला आ सधमलाल समाजसँ प्रभावित भेने अप्पन स्वतंत्र जिनगीक निर्माणक दिशामे बढ़ला। ओना, ऊपरसँ माने हल्लुक नजरिये देखब तँ दुनू जीवनेक निर्माण छी, मुदा दुनूमे ओहन अन्तर अछिए जेहेन गीताक अध्ययनसँ प्राप्त होइए। माने ई जे गीता पढ़ैसँ पहिने ई देखि लिअ पड़त जे गीताक ज्ञान कृष्ण अर्जुनकेँ कखन देलैन। ओ देलैन जीवनक रणभूमिमे। तँए अपनाकेँ जखन ओइ भूमिपर ठाढ़ करब, तखन गीताक जे ज्ञानक वास्तविक रस अछि से भेटत। मुदा जँ दुपहर वा रातिमे सुतैकाल नीन नइ अबैत हुअए तखन जँ नीन आनैले गीताक पन्ना उनटाएब तइ ज्ञानक बीच अन्तर नइ होइए सेहो केना नइ कहल जाएत। खाएर ई तँ भेल गीताक विचारधारा बुझब, मुदा जीवनोक तँ अप्पन-अप्पन गीता सबहक अछिए, तइ अनुकूल कहै छी।

जीवनक मझधारमे दुनूक बीच, माने अधमोलालक परिवारक आ सधमोलालक परिवारक बीच, पारिवारिक सम्बन्ध सेहो स्थापित भेल। मुदा दुनू परिवारक बीच जे वैचारिक धारा अछि तेकर विपरीत पारिवारिक सम्बन्ध स्थापित भेल। ओना, अप्पन समाजक जे धारा अछि ओइ अनुकूल तँ लोक बन्हाएले अछि जे बेटा-बेटीक बिआह आ माए-बापक श्राद्धक भोज जातिये समाजमे चलैए।

❑ अन्तिम भेँट

एतबेमे अकछा गेलह, अखन लक्ष्मण संवत् पछुआएले अछि, जेकरा सन-सन दर्जनो पंचांग समाजमे पसरल अछि। तँए, अनहरियासँ निकैल इजोरियाक इजोतमे आएबे ने आएब भेल।

आइ भोरेसँ, जखनसँ पटना रेडियो स्टेशनसँ समाचार सुनलौं, तखनेसँ मन जेना उखैड़ गेल। सुनलौं जे आइ संवत् उन्नैस साए चौआलीस, बीस अगहन छी।

परसूए पत्नी जानकारी दऽ देने छेली जे अगहनक पूर्णिमा बीतल, आब पूस चढ़ि गेल। बच्चाकेँ पुसौठ करब, तेकर ओरियान करए पड़त।

ओना, माइक मुहेँ सुननहि छेलौं जे 'बौआ तोरा जे एते पएर फटै छह माने बेमाए, आकि ठोरे-गाले फटै छह से धोखा-धोखीमे तोहर पुसौठ नइ केलियह, तँए फटै छह।' तँए बुझल अछिए, किए तँ माइक मुहेँ सुनने छी। तेतबे नहि, एते तँ अपनो आँखिसँ देखि बुझबे करै छी जे जखन सूर्यास्त होइसँ पहिनौंसँ छाया रूपमे चान देखि पड़ैए आ सूर्योदय भेला पछाइत अप्पन प्रकाशपुंज अन्त करैए। तेकरा देखि अपनो तँ बुझिते-मानिते छी। तहिना अमावसियाकेँ सेहो देखिकऽ बुझिते-मानिते छी जे आइ अनहरियाक अमावसिया भेल।

अपना समाजमे, ओना अनेको पंचांग अछि, आजुक तिथि पूस मासक कृष्ण पक्षक माने अनहरिया पक्षक, तृतीया छी। जे तारीख चलि रहल अछि तइ अनुकूल दू हजार बाइस इस्वीक दिसम्बर मास छी। हम ई नइ कहै छी जे अहाँक तिथि गलत अछि, मुदा एते कहैक अधिकार तँ अछिए किने जे गाम-समाजक लोकक बीच जे तिथि, महीना चलि रहल अछि, तइ अनुकूले ने सामाजिक-राजकीय संस्थाकेँ चलब समाजक अनुकूल भेल। आकि अहाँ अनुकूले समाज चलए। हँ, एते जरूर होइ जे जैठाम समाज विपरीत दिशामे भँसैत हुअए तैठाम जँ ओकरा पकैड़ सही दिशा दिस मोड़ल जाए तँ कर्तव्य किए ने मानल जाएत।

एक तँ मन उखड़ल रहने जहिना लोकक मनमे दुनियाँमे मरबे नीक बुझि पड़ैए, तहिना अपनो मनमे हुअ लगल। तैपर जखन गाम-घर दिस तकै छी तखन

सोझे देखै छी जे अपना गामक जे लग्गी अछि, माने लग्गी-डन्टाक नापसँ जे जमीन नापल जाइए, ओ बगलेक पूबरिया गामसँ भरि बीत छोट अछि आ तहिना बगलेमे जे दच्छिनवरिया गाम अछि तेकरासँ हाथ भरि छोट लग्गी अछि.! आब अहीं कहू जे एहेन विषम नाप-जोखक गामसभ अछि, तेकरा रेड़ियो स्टेशन केना प्रसार करत? ओना, अहूँ ठीके छी जे ने गाम-घरक लग्गी-डन्टाक नापकेँ ने मानै छी आ ने गाम-गामक विषमतापर नजैर जाए दिअ चाहै छी। हवाई जहाजक सवारीपर चढ़ि भने हेक्टर आ एकड़क चर्च करै छी, लोक अप्पन बीघा, किला, कट्ठा, धुर, पौआ, कनमा, कनइ करैत रहह।

जहिना पानिमे थाल-कादो घोराएल रहैए आ तैपर जँ सतरंगा रंग (माने सात रंगक रंग) घोरि देबै तखन जेहेन पानिक बगए बनैए तहिना गाम-समाजक सेहो अछिए। संजोग बनल, ललित भाय टहलैत-टहलैत पहुँच गेला। अपना दुनू-गोरेक बीच जीवनक संगपन अछि। जहिना राम हनुमानकेँ आँखिमुना भक्त बुझै छला तहिना हनुमानो ने आँखि मुइन रामे-सीताकेँ गहने छला, तहिना अछि। सूरदासकेँ कहने की हेतैन, माने भागवत पुराणक विचार दोहरौने की हेतैन जे 'हाथ छुड़ाये जात हो, निर्बल जानि के मोय। हृदय से जब जाओगे, तो सबल जानूँगा तोय!'

लगमे अबिते ललित भाय पुछलैन-

"किसुन, दू दिन पूस बीत गेल, जाड़ कटैक की सभ ओरियान केलह आ की सभ पछुआएल छह?"

जहिना हनुमानजी केँ कोनो बिसरल विचार जामवंत मोन पाड़ि दइ छेलैन तखन जहिना हनुमानक देह फुनफुनाइ छेलैन तहिना अपनो मनक फुनफुनी जागल। तैसंग ईहो भेल जे अखन तक जे मनमे अगहन-पूसक विवाद फँसल छल से थोड़ेक असान भेल, जइसँ मन हल्लुक भऽ गेल। बजलौं-

"भाय साहैब, मनक सोल्होअना झगड़ा मेटा देलौं।"

ओना, हमर बात सुनि ललित भाय कनी ठकमुड़ेला मुदा लगले विचार दैत बजला- "अगहन-पूसक की झगड़ा?"

बजलौं- “भाय साहैब, भोरमे जखन रेडियो सुनए लगलौं, तखनेसँ मन ओझड़ा गेल जइसँ किछु नीके ने लगै छल, मुदा अखन जे अहाँक मुहेँ सुनलौं तँ जहिना घाव बहला पछातियो दाढ़मे माने घाओक जगहमे, दर्दमे होइते रहैए मुदा तैयो मनमे असान मानले जाइए तहिना भेल।”

आगाँ बजलौं- “भाय साहैब, दिन-बेरागनक विचार नइ बुझै छी, से कनी ओरियाकऽ सोझरबैत बुझा दिअ।”

अप्पन सीमाक दायित्व बुझि आकि भैयारीक सम्बन्धक चलैत, से तँ ललित भाय जनता, मुदा बजला-

“किसुन, अपना ऐठाम भारत संवत् ५१२३-२४ छी, तहिना बुद्ध संवत् २५६९ (२५६४-६५) छी, विक्रम संवत् २०७९-८० छी, हिजरी संवत् १४४४-४५ छी आ अपना सभक फसली साल १४३०-३१ छी।”

ललित भाइक विचार सुनि मन अक्छए लगल। बजलौं-

“भाय साहैब, छोड़ू तारीख-मरकूमाक बात, अप्पन दुनियाँ-दारीक विचार करू।”

हँसैत ललित भाय बजला-

“एतबेमे अकछा गेलह, अखन लक्ष्मण संवत् पछुआएले अछि, जेकरा सन-सन दर्जनो पंचांग समाजमे पसरल अछि। तँए, अनहरियासँ निकैल इजोरियाक इजोतमे आएबे ने आएब भेल।”

❑ अनहरिया

‘हाय रे प्रकृति, केकरो भोरमे फुलबैए
आ केकरो साँझमे। केकरो बारह बजे दिनक
टहटहौआ रौदमे तँ केकरो बारह बजे
गुप-गुप अन्हार रातिमे.!

बच्चेसँ दीनबन्धु भायमे आनसँ भिन्न एकटा विशेष गुणक विशेषता रहलैन। ओना, ईहो नहि कहल जा सकैए जे एहेन विशेष गुण विशेषित रूपमे दीनबन्धुए भायटा मे छैन आ दोसरमे नहि अछि। किछु-ने-किछु सभमे अछि। मुदा सभमे जगजिआर नइ भऽ पबैत अछि। या तँ तरे-तर सड़ि जाइए वा अधकच्चू भऽ रहि जाइए। किछुए एहेन लोक होइ छैथ जिनकामे सौन मासक फुहार जकाँ सालो भरि फुहराइत रहै छैन।

बच्चेसँ दीनबन्धु भायमे, जखन पाँचे-छअ बर्खक रहैथ, आन बच्चासँ भिन्न एकटा गुण प्रस्फुटित भेलैन। ओ भेलैन जे जहिना कोनो बच्चा आकासक आवाज सुनि, आकासक आवाजक माने भेल दूरसँ सुनल आवाज, कविताक स्वर गुनगुनाए लगैए, तँ कियो कॉपीपर कलमसँ लिखए लगैए, कोनो बच्चा कुम्हारक चाकपर गढ़ल वर्तन जकाँ अपन बाटी-गिलासमे गरदा-माटिकेँ भरि गढ़न करए लगैए, माने गिलासेक अकारकेँ गढ़ए लगैए आदि-इत्यादि। मुदा तइ सभसँ हटि जखन दीनबन्धु भाय पाँचे-छअ बर्खक छला, तखने छोट-छोट गाछ सभकेँ चिन्हैक बाट पकड़लैन।

प्रकृति तँ गजब अछिए। जहिना हजारो-लाखो रंगक जीव-जन्तुसँ लऽ कऽ गाछ-बिरीछ रहनौं एक-दोसरसँ भिन्न सेहो अछिए तहिना एक-एक रंगक जीवमे सेहो हजारो- रंगक रूपो आ गुणो अछिए। मनुक्खे छी, रंगे दिस देखब तँ कोन रंगक मनुक्ख नहि भेटत। तहिना ओकर शकल-सूरत दिस देखियौ तँ हजारो रंगक सेहो भेटत। केकरो साढ़े आठ फीटक लम्बाइ देखबै तँ केकरो फीटोसँ कम, तहिना कुत्ता-बिलाइ, गाए-महींस इत्यादि दिस देखबै तँ सेहो तहिना अछि। एहने अजब

दुनियाँकेँ देखि दीनबन्धु भायकेँ सेहो अपन शक्तिक धुन सवार भेलैन।

दीनबन्धु भाय बच्चेमे केकरो मुहेँ सुनने छला जे मनुक्ख तँ मनुक्ख छी, ओ अनका भरोसे थोड़े जन्म लइए। ओ तँ अपना बाँहि-बलक आशामे रहैए। अपना भरोसे जन्म लइए आ अपन शक्तिक अनुकूल दुनियाँ निरमबैत निर्माण कार्य पूर्ति करैत आगू बढ़ैए। कहब जे अप्पन भरोस आ अनकर भरोस की भेल? अप्पन भरोस भेल स्वनिर्मित जीवन बना चलब आ अनकर भरोस भेल, दोसरपर जीवन बिताएब। जेना, देखबो करै छी आ सुनबो करै छी, आश्रय आश्रित जीवन।

सोभाविक अछि, खेती-पथारी हुअ कि माल-जाल आकि गाछीए-कलम, जे हम अपनाबै छी, लगबै छी, से तँ अपने ने ओकर गुण-दोष देखि कऽ, माने चुनि-चुनिकऽ, बुझि-सुझिकऽ। प्रकृतिमे तँ सभ किछु पसरले अछि। दुनियेँ पसरल अछि, नीक-बेजाएसँ भरल अछि। तँए, चुनि-चुनिकऽ आनब सोभाविक अछि। बुझल बात तँ अछिए जे एक-दिस वेदक निर्माणकर्ता भेला आ दोसर दिस चार्वाक सन विरोधी सेहो भेला।

दीनबन्धु भाइक विषयमे बहुत तँ नइ बुझल अछि, मुदा जे बुझल अछि, माने जे देखै छी तइमे दीनबन्धु भाय समाज मे असगरे देखि पड़ै छैथ। ओना, दीनबन्धु भाइक विषयमे बेसी ऐ दुआरे बेसी नइ बुझल अछि जे आइसँ पचास बरख पूर्वेसँ ओ समाजक संग जुड़ल रहला। अपने तँ तीन साल पहिने कौलेज छोड़ि निकलबे केलौं अछि, जैबीच खेत-पथारक आड़िकेँ मात्र छुलौं अछि। तँए कहब जे माटियो छुबि लेलौं, सेहो बात नहियेँ अछि। खेत-पथारक तरमे माटि अछि किने जे रंग-रंगक गुणो आ रूपो बनौनहि अछि। ओकरा वएह ने छुबि सकैए जे खेतमे कूप खुनि, पानि निकालि मड़ुआ बीआ पटा, मड़ुआक खेती बटाइ करैए आ काँटू-पुत्ती लऽ कऽ घर अबैए। यएह तँ श्रमक दुर्गैत अछि। जेकर गिनतियो माने मड़ुआक गिनती, अन्नमे नहि अछि। पैछला साल मोटका अन्न मानल गेल अछि, भलेँ मड़ुआ सभ अन्नसँ मेहिये किए ने हुअए मुदा मोटका अन्न कहबैए..! यएह तँ दुनियाँक खेल छी, मोटका मेही अछि आ महीका मोट बनि गेल अछि।

ओना, दीनबन्धु भाइक चर्च, आन-आनक मुहेँ जे सुनैत एलौं हेन तइमे तेते हुनकर धाख मनमे पकैड़ नेने अछि जे जखन हुनका लग जाएब तखन की पुछबैन,

आगूमे प्रश्न बनि ठाढ़ भऽ जाइए। मुदा आइ, जहिना कोनो जिज्ञासाक झलक मनमे झलकैए आ तखन जे मनक उत्सुकता जगैए तहिना अपनामे भेल। मने मनकेँ धिरकारए लगल जे मनुक्ख जँ मनुक्ख लग बैस दुनियाँ-जहानक विचार नहि करत तँ दोसर के करत। ऐठाम एहेन धोखा नइ हुअए जे सभसँ जे नमहर जीव अछि से करए, तखन शदूल पंछी आ हाथी जानवर छोड़ि दोसर कइये के सकैए। तइसँ थोड़े काज हएत। ..तरे-तर मनकेँ समगम करैत विचार करिकऽ दीनबन्धु भाय ऐठाम विदा भेलौं। एकाएक मनमे उठल जे अप्पन तइस बर्खक उमर अछि आ ओ माने दीनबन्धु भाय आइसँ तीस साल पहिने कौलेज छोड़ला पछाइत गाममे किसानीकेँ अंगीकार करैत अपन मानवीय मूल्यक निर्वहन करैत जीवन-यापन कऽ रहला अछि। कखनो कऽ मन पाछुओ ससैर जाए आ कखनो कऽ आगुओ ससरए लगए।

मन भलेँ आगू पाछू ससरल मुदा जहिना आगू मुहेँ विचार चलि रहल छल तहिना डेगो संगे-संग चलल। दीनबन्धु भाइक दरबज्जासँ जखन कनी पाछुए रही कि नजैर आगू बढ़ि दीनबन्धु भायपर पड़ि गेल। दीनबन्धु भाय अपन दरबज्जाक आगूमे सिंगहार-फुलक गाछकेँ देखि रहल छला। देखलयैन जे गाछकेँ भाय देखबो करै छैथ आ ठोर बिजका-बिजका गुनगुनाकऽ बजबो करैथ, 'हाय रे प्रकृति, केकरो भोरमे फुलबैए आ केकरो साँझमे। केकरो बारह बजे दिनक टहटहौआ रौदमे तँ केकरो बारह बजे गुप-गुप अन्हार रातिमे.! फूलक गाछपर सँ एकाएक दीनबन्धु भाइक नजैर हमरापर पड़लैन। ओ ठकमकेला। ठकमकाइक कारण छेलैन मनकेँ मानि जाएब जे भरिसक ई अपने गामक अछि, तँए गौंए भेल। मुदा नीक जकाँ चीह्न नहि रहलिऐ हेन। अपने मन ईहो कहैन जे तखन गौंआँ केना भेल? गौंआँ तँ ओ भेल जे संग मिलि चलए।

दरबज्जाक आगूमे दीनबन्धु भाय लग पहुँच बजलौं-

"भाय साहैब, गोड़ लगै छी।"

❑ अपन रचित रचना

अपन जीवनधार ओहन बना प्रवाहित करी जे स्वयं निर्मित हुअए। जखने अपन प्रवाह अपना अनुकूल चलत तखने दुनियाँक आन-बीरानक भेद मेटा जाएत। रहत मात्र अपन कर्म (काज)। से तँ अपन-अपन विभाजित रहबे करत।

अपने बीतल एकटा बात, माने अपने जे गाममे भेल, मोन पड़ि गेल। भेल ई छल जे एकगोरेकेँ, दोसराक संग गलती करैत देखि मुहेँपर कहि देने रहिऐ जे एहेन छुछुड़पना काज किए करै छह। अखन तक अपने बुझबे ने करै छेलौं जे शब्दक मिलानी मात्रसँ समाजो आ सत्तो चलैए। प्रीतमलाल माने जेकरा कहने रहिऐ, गामक छअचक्री लोक, कृष्ण जकाँ सुदर्शन चक्र नहि, मात्र ओइमे छबेटा डाँरि खिंचल छै, से भेल छहचक्री। तरे-तर कि केना भेल, से जखन तीन मासक जहल कटलौं तखन बुझलौं। अपनेटा बात नइ कहै छी, अपना सन-सन केतेको गोरे केतेको गाममे एहेन जहल कटने छैथ।

आजुक परिवेश ओइ मोड़पर आबि ठाढ़ भऽ गेल अछि, जैठाम विनास-विकास दुनू अछि। मन तेना अपने घुरिया-मुड़िया गेल जे रसे-रसे दृढ़ भऽ गेल जे अबेर-सबेरक विचार केने बिना सुजीत काका ऐठामसँ नहि जाएब। पाछू-के एलौं, तँए हमर मनक प्रश्न पछुआ गेल, मुदा आवश्यक तेते अछि जे बिनु बुझने अन्न-तीमनक सुआद थोड़े बुझब, सोझे गीर लेब हएत। ओना, मन ईहो कहैत रहए जे अखन उचक्का सभ लगमे अछि, जँ सोझामे बाजी आ फेर जहल कटबैक ओरियान कऽ देत, तइसँ नीक जे अपन विचार पाछू काल-के राखब। जखने विचार पछुआएत तखने कच्छड़-मच्छड़ कटैबला सभ पड़ाएत। अपन विचारक प्रश्न छी अपने मुहसँ काकाकेँ पुछबैन, अपने कानसँ हुनक विचारो सुनब, पछाइत समयानुकूल डेग उठाएब।

साँझक आठ बजि गेल। सौंझुका पूजाक घड़ीघन्ट केतेको देवस्थानमे बजि गेल। बेरुका मदभक्षी सभक मदक खुमार सेहो कमि गेलैन। जइसँ भोजन केला-पछातिक आराम करैक विचार मनमे उठि गेलैन। गामक बैसार कि कोट-कचहरीक

बैसार छी जे निसचित समयपर चलत, ओ तँ गमैया धार जकाँ अछि जे छअ मास सुखल रहत आ छअ मास बहैत चलत। दुइये गोरे रहलौं, माने अपने आ सुजीत काका रहला। मनमे भेल जे अपने तँ जवान छी, तँए देहो ओते शक्ति पैदा करिते अछि, जइसँ एकाध घन्टा विलैमियोँ सकै छी, तहूमे मनक जिज्ञासा प्रबल रहबे करए। मुदा सुजीत काका तँ से नहि छैथ। श्रेष्ठ छैथ, उमरदार छैथ, जइसँ शिष्टपनसँ मानिते छिऐन, मुदा एते तँ पुछले जा सकैए जे 'काका, बड़ीकालसँ बैसल छी, पियास लगि गेल हएत।' मुदा सुजीत काका तँ अपने शिकारी छैथ, ओ मने-मन बुझि गेला जे किछु एहेन विचार मनोहरक मनमे उठि गेल अछि जेकर जवाब सुनैले मन कच्छड़ काटि रहल छइ। अपनो मन मानियेँ रहल छेलैन जे जखन जिनगीक कोनो ठेकाने ने अछि तखन तँ जे कऽ लेब तेतेकक हकदार तँ हेबे करब। सभ जनिते छी जे कियो करे आप ले माए ले ने बाप ले। संयोग नीक बनल, बुधियारि काकीकेँ जेना बुझले रहैन आकि की, दू-दूटा बिस्कुट दूटा प्लेटमे आँगनसँ दरबज्जापर पानिक संग पहुँचा गेली। जाबे दुनू बापूत बिस्कुट खा पानि पीलौं, ताबत दू कप चाहो बुधियारि काकी पहुँचा गेली।

अपना बुझि पड़ल जे चाह-बिस्कुट खेला पछाइत दुनू गोरेक मन, माने अपनो आ सुजीतो कक्काक, एक्केरंग भऽ गेल। एकरंग होइते बजलौं- "काका, हमरे भ्रम भऽ रहल अछि आकि अहीं भरमा गेल छी, से बुझिये ने पेब रहल छी।"

ओना, सुजीत काका बुझि गेला मुदा बुझल बातकेँ मनेमे दाबि बजला- "से की मनोहर?"

बजलौं- "काका, अहाँ भलेँ बिसैर गेल होइ, मुदा अपने तँ भुक्तभोगी छी तँए जीवनमे केना बिसरब।"

सह दैत सुजीत काका बजला- "हँ, से बिसरबोक नइ चाही।"

सुजीत कक्काक विचार सुनि मन आरो दनदना गेल। दनदनाइत बजलौं-

"काका, कनिये पहिने, जेते गोरेकेँ दरबज्जापर बैसल देखलौं, तइमे आधासँ बेसी ओहन लोक छल जे धोखाबाज अछि। एहेन लोक कखन संग रहत आ कखन वौआकऽ धोखा दऽ पड़ा जाएत, तेकर ठेकान नहि।"

ओना, अपन विचारकेँ सुजीत काका कद्र केलैन मुदा अप्पन जीवन आ विचार तेतेक ऊपर उठि गेल छैन जैठाम एहेन-एहेन विचारो आ काजोकेँ तुच्छ

मानल जाइए। तुच्छ मानब सोभाविको अछिए। कियो एकदिना जहल जाइए आ कियो नेलशन मंडेला जकाँ तीस बरख जहल काटैए, तैठाम दुनू गोरेक जहल काटब थोड़े एकरंग हएत।

मुस्की मारि सुजीत काका बजला- “मनोहर, कियो चोर अछि कि डकैत अछि कि झुठे-फूस बजनिहार लबड़ा-लुच्चा अछि आकि छल-प्रपंची धोखेबाजे किए ने अछि, तेकर दुख-सुख अपने भोगत कि आन, हमर की लेत।”

ओना, शब्दक शैलीमे सुजीत कक्काक विचार नीक लागल मुदा अप्पन तीन मासक जहल मनमे मनाही करिते रहल जे ऐठाम सुजीत काका विचारकेँ झाँपिकऽ बजला अछि। बीतल दिनक प्रमाण सभकेँ मने-मन एकत्रित करैत बजलौं- “काका, अपनो मानै छी जे पूर्वज सभ कण्ठ फारि-फारि कहने छैथ जे जे जेहेन करत से तेहेन पौत। रोपे गुण फल होइते अछि। मुदा...।”

अपन सभ विचारकेँ हौंरि-हाँरि सुजीत काका बजला- “मनोहर, भने अखन दुइये बापूत छी, तँए जीवनक मूल मर्मकेँ कहि दइ छिअ।”

सुजीत कक्काक विचार सुनि मनक जिज्ञासा तेते फुनफुनाकऽ जगि गेल जे हुअए कखन सुजीत कक्काक मुँहक बात सुनी। बजलौं- “की मर्म कहलिऐ काका?”

सुजीत काका बजला- “मनोहर, अपन जीवनधार ओहन बना प्रवाहित करी जे स्वयं निर्मित हुअए। जखने अपन प्रवाह अपना अनुकूल चलत तखने दुनियाँक आन-बीरानक भेद मेटा जाएत। रहत मात्र अपन कर्म (काज)। से तँ अपन-अपन विभाजित रहबे करत। एक्केटा नमहर काज माने एकसँ अधिक गोटेक बीचक, रहैए जे नीको होइए आ अधलो होइए मुदा केनिहारक सिरे किछु ने कहल जाइए, सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो कहल जाइते अछि।”

❑ थाहल संगी

“बौआ, दरबज्जापर एक पनरहिया भोज-
भातक संग कातिक मासमे भागवत जहिना करैत
एलौं हेन तहिना तोंहू निमाहैत चलिहह। पिता छियह
तँए एते कहि दइ छिअ जे जहिना अप्पन बेदाग
जीवन रहल तहिना तोंहू निमाहि चलिहह।”

जहिना बाल-बोध बच्चा बाल-विद्यालय लऽ कऽ अप्पन परिवार धरिक बीच अपन जीवन धारण करैक लूरि सीखि लइए तहिना सुचित भाय सेहो सीख लेलैन। ऐठाम ई नहि बुझब जे माता-पिताक बीच एहेन दोष पैदा केना लऽ लेलक जे काजक अढ़ान बेटीपर दिअ लागल आ बेटाकेँ आरक्षित कोटाक लाभ देलक। जहिना बाल मनक जीवन अपन दुनियाँ देखि आत्मबल पैदा करैए तहिना सुचित भायकेँ सेहो भेलैन। ओना, जीवनक संग आत्मबल केतौ टुटबो करैए आ केतौ लेबान होइत अप्पन रक्षा स्वयं करैत अपन जीवनकेँ बँचाइयो लइए। ऐठाम एकटा विचार आरो अछि, ओ अछि आत्मा छी की, किए ने अहूले डॉक्टरी चिकित्सा होइए। जखन शरीरक सभ अंगक प्रत्यारोपण हुअ लगल अछि तखन आत्मोक किए ने होइए? किए ने लोक बुधिविचड़ीमे लागल रहत। बुधि-विचड़ियेसँ ने विचारमे एकरूपता औत आ ओ मिलल-जुलल विचारधाराक रूपमे सामूहिक विचार प्रवाहित हएत।

अखन तक मिथिलाक किसान-परिवारमे शहर-बाजार जा नोकरी करैक धारणाक जन्म नइ भेल छल। एकर माने ई नइ बुझब जे परिवेश ओहन नइ बनल अछि जइमे देशक किसानक बेटा इंजीनियर बनि बाहर जा कऽ गाड़ीक ड्राइवरी नइ करै छैथ आ अपनाकेँ इंजीनियर घोषित करैत चालीस हजार डॉलर महिना नइ कमाइ छैथ। एकर माने एतबे नइ बुझब जे पहिने बड़का लोक, बड़का लोकक माने डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक इत्यादि, विदेश नोकरी करए जाइ छला आ अखन औंठा छाप देनिहार गरीब-गुरबा सेहो विदेश जा कऽ नोकरी करए लागल अछि। खाएर तइ सभसँ सुचित भायकेँ कोन मतलब छैन। कौलेजक पढ़ाइ, माने स्नातक,

(बी.ए.) सम्पन्न केलाक बाद जखन परिवारक जिनगी अंगीकार करैक बीच सुचित भाय पहुँचला, तइसँ पहिनहि हुनक पिता बिआह-दुरागमन करा अप्पन अन्तिम सन्तानक परिवार रोपणक स्थितिमे सुचित भायकेँ पहुँचा चुकल छेलैन। तैबीच साले-साल, आइ पचास बर्खसँ प्रत्येक कातिक मासक दिवाली दिनसँ एक पनरहिया भागवत कथा अपना दरबज्जापर करबैत आबि रहल छैथ। दरबज्जाक एते महत्व तँ अछिए जे जँ कियो दरबज्जापर आबि कोनो बात कहै छैथ तँ ओ सत्य मानले जाइए। आनक मनमे माने सुनिहारक मनमे जे भेल होनि, मुदा सुशील कक्काक अपने मन अपने धिरकारि कहलकैन जे 'अनेरे कोन मायाक जालमे घोंसियाएल जा रहल छह। अही भागवतक मंचपर सँ समाजकेँ जना दिऐन जे अप्पन परिवारक जेते भार छल ओ सम्पन्न भऽ गेल। माने माता-पितासँ बेटा-बेटी धरिक, अपन परिवारक प्रति जवाबदेहीक भार मेटा गेल। आब तँ ओ भार ओइ बेकतीक भेल जेकर परिवार निर्माण हएब अछि। परिवारमे दू तरहक काज होइए, एक सृजनात्मक आ दोसर उपयोगक। माने उत्पादनसँ उपभोग धरिक। उपयोग आ उपभोगमे अकास-पतालक दूरी बनले अछि आ बनबो तँ कएले अछि। बाल-बच्चाकेँ कोन तरहक जीवन देल जा सकैए ओ तँ निर्भर करैए परिवारक आमदनीपर, माने उत्पादनपर। मिथिलांचलक कृषिक ओ अवस्था बनियेँ गेल अछि जेकरा ढलानोन्मुख कहल जाइए, कोनो परिवारमे जँ एहेन विचारक जन्म होइए जे बेटा-बेटीक पढ़ाइ-लिखाइ, शादी-बिआहमे करोड़ोक खर्च करी आ माता-पिता ले साधारणो जीवनक बेवस्था उपलब्ध नहि करा सकिऐन। ई केतौसँ उचित नइ अछि। सुशील काका सुचित भायकेँ दबज्जापर बैसा माइयक सोझ, माने सुशील काका अपन पत्नीक सोझमे कहला-

"बौआ, दरबज्जापर एक पनरहिया भोज-भातक संग कातिक मासमे भागवत जहिना करैत एलौं हेन तहिना तोंहू निमाहैत चलिहह। पिता छियह तँए एते कहि दइ छिअ जे जहिना अप्पन बेदाग जीवन रहल तहिना तोंहू निमाहि चलिहह।"

अपना विचारे सुशील काका की कहलखिन आ सुचित भाय की बुझलैन, ई तँ दुनू गोरेक बीचक भेलैन तँए तेसर जे बुझैथ। मुदा पिताक विचार सुनि सुचित भाय बजला किछु नहि, बजबो किए करितैथ, परिवारक बीचक बेकतीक एक क्रम

छी, जे सभक संग अछि। जीवनक हर क्षेत्र समयक संग संचरित होइत चलबे करैए। ओना, सुशील काका अपन विचार व्यक्त करैत ऐ आशमे रहबे करैथ जे बेटाक अप्पन मुहसँ सुनि नेने आत्माकेँ तुष्टि भेटत। तुष्टियो तँ तखने ने भेटैए जखन जीवनक पद्धति घोषित करैत कियो अपन जीवन स्थापित करैए। आत्माक तुष्टिक कारण ई जे विचारस्वरुप आत्मा एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ीमे संचरित होइत अप्पन स्वरूप निर्धारित करैत चलैए। बेटाक मुहसँ सुनैक दोसरो कारण छेलैन, ओ ई छेलैन जे लोकक मनमे हजारो रंगक बातो अछि आ विचारक संग काजो अछिए, मुदा से तँ बजला पछातिये ने कएलपर नजैर दौड़त। जँ किछु करबे ने करब, तखन तँ ओहिना ने रहि जाएब जेना दुनियाँमे गाछ-बिरीछ, पोखैर-झाँखैड़, गाए-महींस अछि।

सभ तँ जनिते छी जे कर्मे धर्म आ धर्मे कर्म छी, तैठाम जँ कियो अपन धर्मेमे बट्टा लगा बटमारि कऽ लैथ वा घाटा लग घटवारिये करैथ। ई तँ अपन-अपन मनक बीचक धार भेल। ओना, सुचित भाय, पिताक विचारसँ एक्को पाइ अलग नहि छला, किए तँ कौलेजक अध्ययनक क्रममे मिथिलाक परिवारक गढ़नक विशाल रूप पढ़ि चुकल छला, जइमे लूल्ह-नाँगर, अकलेल-बकलेल सभक मानवीय सम्बन्ध निहित अछि। जहिना धर्म ओ थिक जे धार्मिक जीवन प्रदान करए, तहिना कर्म ओ थिक जे धर्म बनि सदैत प्रवाहित होइत चलए। बजैक क्रममे सभ बजिते छी जे दुनियाँ फुसिआहक भऽ गेल अछि, मुदा अपने की छी से तँ अपने ने देखब।

किछु समय गुमा-गुमीक पछाइत सुचित भाय बजला- “पिताजी, अखन धरिक धाराक अनुकूल जे धारणा, धारणा दुनू रूपमे– काजोक रूपमे आ विचारोक रूपमे, बनल आबि रहल अछि, तइ अनुकूल अपने कहलौं, जे पिताक शब्दसँ एको अक्षर कम-बेसी बुझिमे अबैत तखन ने किछु बजितौं, से तँ नहि अछि। अहाँ मुहसँ कहि भार दी वा नहि दी, मुदा परिवारक ऐगला भागक भागीदार हमहीं ने छी।”

❑ आत्मबल

“बौआ, जीवनक मूल आवश्यकतामे भोजन अछि। तोंही कहह जे केतेक लोककेँ उचित भोजन भेटैए। हम ई नइ कहै छिअ जे केतेकेँ उचितोसँ बेसी भेटैए। तैठाम जँ घरक छत नहियेँ बनल अछि तँ की हेतइ। जएह अछि तेहीसँ ने जिनगीक निमरजना करब।”

मध्यम श्रेणीक किसान परिवारमे रूपचन कक्काक जन्म भेल छैन। शुरूमे पिताक बेवहार माने रूपचन कक्काक पिताक, ओते नीक नहि छेलैन, जेतेकक जरूरत परिवार-समाजमे अछि। मुदा बेटाकेँ माने रूपचन काकाकेँ, जखन कौलेजमे नाम लिखा देलखिन तखन विचारक संग बेवहारोमे बदलाव अनलैन। बदलाव अनैक परिस्थिति ई बनलैन जे बेटाकेँ घरसँ बाहर पढ़ैले पठाएब, एक समाजसँ दोसर समाजमे जाएत, केना मेल-मिलानसँ रहत इत्यादि। ओना, तैबीच जे संघर्ष रूपचन काकाकेँ भेलैन ओ नीक जकाँ एकपीढ़ीए-लोक बुझलकैन। जेना, मध्यवर्गीय किसान परिवारमे कौलेजक शिक्षा केतेक भारी छल, ओ पछिले पीढ़ीक लोक ने देख-बुझिकऽ वा भोगनिहारे ने नीक जकाँ जानि रहला अछि।

रूपचन काका अप्पन जीवनक शुरूआत किसानी कार्यसँ कए किसानक रूपमे जीवन स्थापित केलैन। दुनियाँ दिस ताकब छोड़ि अपना दिस नजैर निखारलैन। ओना, कौलेजक जीवनमे रूपचन काका एते सुनिकऽ सीख नेने छला जे भूत-सँ-भविष्य धरि केना मन दौड़ैए। मुदा अनुकूल स्थान नहि भेटने विचारकेँ विचारेक पौतीमे सैंतिकऽ रखने रहला।

जहिना कोनो घटना स्थलपर देखल घटना, महिनो-सालो बाद धक-दे मोन पड़ि जाइए तहिना रूपचन काकाकेँ अपन जीवनक दिशा धक-दे मोन पड़लैन। किसानियोँक तँ विराट रूप अछिए। तइमे अपने बसि ब्रजवासी जकाँ केना जीब, यएह मूल प्रश्न छी।

हथिया नक्षत्र चलि रहल अछि। उत्तरवारि टोल कोबी बिआ आनए गेल रही। टोपर बान्हि मेघ लटकल छल, मुदा गामेक काज तँए किए परहेज करितौं।

मेघे छी, बरैसियो सकैए आ नहियोँ बरैस सकैए। मुदा से भेल नहि, रूपचन कक्काक घर लग जखन गेलौं कि बरसाक बून तेज भेल। दौड़कऽ रूपचन कक्काक दरबज्जापर पहुँचलौं।

रूपचन काका दरबज्जापर बैसल एकटा बाल्टीन आगूमे रखने रहैथ। जइ बाल्टीनमे दरबज्जाक चुबाठ-पानि टप-टप छतसँ खसैत रहइ। दरबज्जापर पहुँचते रूपचन काका बजला- “तूँ सभ ते नबका लोक भेलह। देहपर गमछा रखिते ने छह।”

कहि, रूपचन काका एकटा गमछा देह पोछेले, माने पानि जे पड़ल रहए तेकरा पोछैले, देलैन।

देह पोछि, गमछा राखि रूपचन काकाकेँ हियासए लगलौं। दू ढंगसँ हिसास करए लगलौं। पहिल जे रूपचन कक्काक प्रति अपन विचार केहेन अछि आ दोसर, गीता वा आध्यात्म सोच जकाँ आध्यात्म आ जीवनक सम्बन्ध रूपचन कक्काक केहेन छैन। तइ बीचमे रूपचन काका बजला- “चाह पीबह?”

ओना, अपना मनमे भेल जे कहि दिऐन ‘नइ पीब’, मुदा अपने मन रोकैत विचार देलक जे जँ कहीं रूपचन काका अपनो चाह नइ पीने होथि आ हमरा देखि अपनो चाहक आग्रह भेल होइन। तँए, समाजेक लोक जकाँ अपनो विचार भेल जे सभसँ भला चुपे रहब नीक। चुप तँ भऽ गेलौं मुदा मन दू-बटियामे फँसि गेल। एक दिस देखी जे रूपचन काका अपन जुआनीक तावमे बाजि रहला अछि, जुआनीक ताव भेल नित्य सृजनमान शक्ति जागब। आ दोसर दिस देखै छी जे अखन तक अपना रहैले दरबज्जो ने भेलैन अछि.! देखिते छी जे बाल्टीन आगूमे रखने छैथ, जइमे छप्परक पानि चुबि रहल छैन। कबीर बाबाक दू पाटनक बीच जकाँ अपनो मन फँसि गेल। तइ बिच्चेमे रूपचन काका बजला- “ऐ बेर हथिया नक्षत्र बीतला चारि दिनक पछाइत दूर्गापूजा शुरू हएत।”

अपने यएह बुझै छी जे हथिया आ आसीनक दूर्गापूजा संगे-संग चलैए। तइ बीचमे रूपचन काका की बाजि देलैन। अबाक् भेल बैसल रहलौं। रूपचन कक्काक विचार कोनो भाँजेपर ने चढ़ल। हथिया नक्षत्रक चारि दिनक पछाइत दूर्गापूजा शुरू हएत, तेकर खगता अखन कोन अछि। अखन तँ खगता अछि जे बरसाक पानि जे

दरबज्जाक बीचमे चुबि रहल अछि तेकर निराकरणक। मन नइ मानलक। बजलौं-

“काका, आब तँ अन्तिम समयमे पहुँच गेलौं। अखनो तक दरबज्जाक यएह गति अछि।”

हमर बात सुनि रूपचन काका मिसियो भरि मर्माहत नहि भेला। जखन मर्माहत नइ भेला तखन घबड़ाइक जरूरते की। जेना जीवन-पद्धतिक अनुकूल अपनाकेँ पेब रहल छला। गाम-समाजक रीते अछि जे एक-दोसर लग कानियोँ-कानि आ हँसियो-हँसि बजबे-भुकबे करैए। ऐठाम ई नइ बुझब जे महिलाटा केँ कहै छिऐन आ पुरुखकेँ नहि कहै छिऐन। मौगमेहरा पुरुखोक संख्या कि कम अछि। तिनका जरूर कहै छिऐन। रूपचन काका बजला-

“बौआ, की कहबह। जिनगीक मूले जेना लोककेँ छुटल अछि, जइसँ जीवन सेहो दुरुह भइये गेल अछि। तखन तँ..?”

मने-मन विचारए लगलौं जे जिनगीक मूल की भेल? बजलौं-

“से की काका?”

बुलन्दीसँ रूपचन काका बजला- “बौआ, जीवनक मूल आवश्यकतामे भोजन अछि। तोंही कहह जे केतेक लोककेँ उचित भोजन भेटैए। हम ई नइ कहै छिअ जे केतेकेँ उचितोसँ बेसी भेटैए। तैठाम जँ घरक छत नहियेँ बनल अछि तँ की हेतइ। जएह अछि तेहीसँ ने जिनगीक निमरजना करब।”

रूपचन कक्काक विचार तीर जकाँ हृदयकेँ बेध देलक। अनायास मुहसँ निकैल गेल- “हँ, से तँ अछिए।”

हँसैत रूपचन काका बजला- “बौआ, जहिना अपने बुलन्दीसँ जिनगी पार केलौं तहिना तोंहूँ बुलन्दीसँ जिनगी पार करह, यएह हमर शुभकामना छह।”

❑ बुलन्दी

गामक सुमारक बेसी तखन भेल जखन
अप्पन उमेर पचास बरख टपल आ चारू बेटाक
बीच पाइ-कौड़ीक कटौज उठल। दुनियाँ तँ दुनियाँ छी
बाप तवाह बेटा ले, माने ऐगला पीढ़ी ले जे सातो
पीढ़ीक ओरियान माने सम्पैत ढेरियाकऽ जँ नइ
रखलौं, तखन जीवने की भेल। तहिना बेटा तवाह
जे अपने कमाइक (काज करैक) खगते
कोन अछि, बापक देल सम्पैत
हाथ लगबे करत।

लोकक देखसी कहियौ आकि अप्पन कमजोरी, परदेशमे रहै छी। माने बंगलोरमे ट्रान्सपोर्टमे नोकरी करै छी। ओना, एते जरूर भेल अछि जे गामक जिनगी कहियौ आकि अप्पन जिनगी, जाधैर गाममे बितेलौं ताधैर नमरी सालमे गोटे-गोटे दिन देखै छेलौं, बंगलोरमे रहने एते तँ भेबे कएल जे भरि-भरि दिन, माने आठ घन्टा ड्यूटीक समयमे, नमरीक कोन बात जे पनसैया, दससैया आ बीससैया नोट गनैत-गनैत चुटकी खिया गेल अछि। माँड़े तँ माउग जीबैए, आ अपने जखन भरि दिन नोटे गनै छी तखन जँ कनियाँ छह-पाँच केलौं तँ पाँच-दस हजार अपनो जेबीमे आबिये जाइए। जखन लाख-दू-लाखक उलफी आमदनी महीनामे हएत तखन जँ जीवनक धार उलफी नइ बनए, माने जीवनमे उलफी खर्च नइ हुअए, तखन तँ ओहन उलफीकेँ बेइज्जतीए ने हएत। अपनो कि दुनियाँसँ हटल छी आकि अही दुनियाँमे छी, तखन जँ अप्पन जिनगी उलफी नइ बनत सेहो केहेन हएत। तँए, जहिना खेनाइ-पीनाइ तहिना ओढ़नाइ-पहिरनाइ आ तहिना बसो-बास माने रहैक घर सेहो बनेबे केलौं अछि।

बंगलोरमे रहितो मनमे सदिकाल गाम नचिते रहैए। केना बाबू पकैड़-पकैड़ स्कूलपर दऽ अबै छला। केना सोनिया माइक लतामक गाछपर चढ़ि चोराकऽ

लताम तोड़ि लइ छेलौं। केना राति-के मशाल लेसि, ऐठाम मशालक माने अछि, गाम-घरमे लोक माटिक डाबाकेँ एक भाग हँसुआसँ काटि, गरदैनमे डोरी बान्हि, माने लटकबैबला, आ बीचमे माने डाबाक बीचमे माटिक डिबिया लेसि, अन्हारो रातिमे अपनो आ अनको आम चोरा कऽ बीछ लइ छेलौं..! आरो-आरो गामक क्रियाकलाप सभ दिन-राति भितरिया मनमे नचिते रहैए। मुदा मनक एहेन विशाल समुद्रकेँ ओहिना मनेमे दाबि, जहिना वंशराजक सात-साए बरदकेँ हंसराज मोटरी बान्हि रखि देलकैन, जेकरा कौआ लऽ कऽ उड़ि गेल, तहिना अप्पन मनक समुद्रकेँ अपनो एकटा पोलीथिनक झोराक मोटरी बान्हि तेना जुमाकऽ जिनगीसँ कात फेंक देने छी जे परिवारमे पित्ती-पितिआइन मुइली, जीबैतमे मुँह देखैक कोन बात जे दाहो-संस्कारमे गाम नइ आबि भेल। नइ एलौं, तेहेन बहाना पितियौत भाय-साहैबक सोझामे रखलौं जे ओहो मानि गेला आ कहलैन जे 'बौआ, मृत्यु तँ सभकेँ लगले अछि, मरबे करत, तँए जँ माए आ बाबूक मृत्युक समय गाम नहि एलह तँ कि हेतइ। काज कि तोरा-ले पड़ल रहल आकि भेबे कएल।' भाइयो साहैब छुट्टी दइये देलैन।

गामक सुमारक बेसी तखन भेल जखन अप्पन उमेर पचास बरख टपल आ चारू बेटाक बीच पाइ-कौड़ीक कटौज उठल। दुनियाँ तँ दुनियाँ छी बाप तवाह बेटा ले, माने ऐगला पीढ़ी ले जे सातो पीढ़ीक ओरियान माने सम्पैत ढेरियाकऽ जँ नइ रखलौं, तखन जीवने की भेल। तहिना बेटा तवाह जे अपने कमाइक (काज करैक) खगते कोन अछि, बापक देल सम्पैत हाथ लगबे करत। जेते जीवन भरि कमा कऽ खर्च करब, माने जीवन चलाएब, तेते तँ बापेक देल रहत..! यएह तँ छी सामाजिक जीवन। समाजमे सदिकाल धर्म-पाप, स्वर्ग-नर्क आ देवी-देवताक चर्च होइते रहैए, से खाली किसानपुरे टा गाममे होइए से बात नहि। आनो-आन गाम- भागपुर, विलासपुर, जोगपुर सन-सन अनेको गाममे सेहो होइए। ओना, किसानपुर गामक लोकक विश्वास छैन जे जहिना स्वर्ग एक दिन जन्म लइए तहिना घटैत-बढ़ैत एक दिन अन्त सेहो होइते अछि से ओहिना जहिना बैंकमे रूपैआ जमा करै छी आ ओइमे सँ उठा-उठा खर्च करैत जाइ छी आ एक दिन ओहन अबैए जइ दिन रूपैआ सठि जाइए। तेकर पछाइत जँ बैंकपर बलउमकी जेबे करब तँ बैंकक सिपाही धक्का मारि निकालि देत कि नहि निकालि देत। तहिना स्वर्ग अछि। कोनो नीक

कर्म केला-पछाइत स्वर्गक अधिकारी बनै छी आ अधला कर्म करैत आगू बढ़ै छी, तखन पापक मोटरी नमहर भेने स्वर्गक रास्ता बन्न भऽ जाइते अछि आ नर्कक रास्ताक मुँह चौड़गर भइये जाइए। खाएर जे होइए, ओ स्वर्ग-नर्क गेनिहार जानैथ, अपना ओइसँ कोन मतलब अछि। मतलब एतबे अछि जे जहिना सभ बुझै छैथ जे दुनियाँमे अनेको लोक अछि, सतलोक, बैकुण्ठलोक, स्वर्गलोक, नर्कलोक, साकेतलोक इत्यादि, जइमे जिनकर जेहेन किरदानी से तेहेन बास करै छैथ।

अपने अखन पचासे बर्खक छी, पत्नी दू बरख छोटे छैथ माने अड़तालीस बर्खक, चारू बेटा सोलह बर्खसँ छब्बीस बर्खक बीच अछि, जेकरा पढ़ा-लिखा अपनासँ ऊपर बनबए चाहै छेलौं, बंगलोरमे अनभुआरपन रहने कहियौ आकि जीवन जीबैक, एकोटा नीक शिक्षा नहि पेब सकल। कहब जे स्कूल-कौलेज बंगलोरमे नहि अछि जे अहाँक बेटा शिक्षा नहि पेब सकल? ऐठाम कौलेजिया डिग्रीक चर्च नहि कऽ रहल छी, ऊपरका तीनू भाँइ एम.ए. पास करबे केने अछि, आ चारिम ऑनर्स केला-पछाइत एम.ए.मे पढ़ैए। नीक शिक्षाक माने नीक मनुक्ख बनब छी। नीक मनुक्ख बनैक ज्ञान, ऐठाम ज्ञानक माने अछि ओहन ज्ञान जे विवेकक चक्षुकेँ प्रकाशित कऽ दिअए, से केकरो ने भेल। जखने से होइए तखने ने ओ विचारए लगैए जे मनुक्ख भगवानकेँ खोजनिहार ओहन खोजी छैथ जे भगवानक परिचय करा सृजन केलैन। नहि कि भगवान मनुक्खक खोजी छैथ। जिनका अपने हाथ-पएर नहि छैन ओ केना टहैल-टहैल सात अरब मनुक्खक परिचय देता।

❑ **टकुआटान**

जहिना देशमे एकदिस सामन्ती विचार आ काज चलि रहल अछि, तहिना दोसर दिस पुरान पूँजीपतिक, माने पूर्वक जरूरतक अनुकूल जिनकर कारोबार छेलैन आ नव पूँजीपति, जे नव मशीनक संग नव जीवन गढ़ए चाहि रहल अछि, जेकर फलाफल देखिते छहक, टाटा-बिड़लाकेँ, जे किछु दिन पूर्व तक देशक सभसँ पैघ पूँजीपति छला, आइ ओ बहुत पाछू पड़ि गेला। अही त्रिशूलमे अपनो सभ आ समाजो लसकल छी।

जहाजमे जखन बैसलौं तखन ललित काका मोन पड़ला। जहिया गाममे रहैत रही, माने तीस साल पूर्व, तहिया ललित काका साठि बर्खक उमेर पार कऽ चुकल छला। हुनकासँ अन्तिम भेँट जहिया भेल, तहिया ओ कहने रहैथ, 'बौआ श्याम, अखन तक अपना ई नइ मोन अछि जे आइ धरि कहियो कोनो बीमारी छोड़बैले, माने रोग छोड़बैले, सूइया लेलौं अछि। विरले कहियोकाल कोनो गोटी खेने हएब।' लगले अपने मनमे लाज उठल जे जखन अप्पन परिवारकेँ बंगलोरमे छोड़ि जा रहल छी तखन सभसँ पहिने हुनके (ललिते काका) ऐठाम जा अप्पन सभ बात कहबैन।

गाम पहुँचला पछाइत अपना ऐठाम नइ गेलौं। ओना, पितियौत भाइक परिवार सेहो छैन मुदा अप्पन मन ऐ विचारपर आरूढ़ छल जे जे ललित काका नब्बे बर्खक उमेर पार कऽ लेलैन आ अखनो ओहिना क्रियाशील छैथ, तैठाम अपने पचास बरख बितैत-बितैत मनमे होइए जे 'ऐ जीवनसँ मरबे नीक!' तँए, सभसँ पहिने हुनकेसँ भेँट करब नीक।

ललित काका दरबज्जेपर बैसल रहैथ। मिथिलाक दरबज्जाकेँ सोल्होअना तँ नहि मुदा पनरहअना जरूर देवालयक धर्मशाला कहले जा सकैए। दरबज्जापर अतिथि-अभ्यागत देखि घरवारी अपन अहोभाग्य मनैबिते छैथ। बिना परिचय-पात भेनौं एक लोटा पानिक स्वागत करिते छैथ। ओना, आजुक परिवेश विषाक्त भइये गेल अछि, मुदा गामोक परिवेश सोल्होअना तँ मेटाएल नहियेँ अछि। ललित कक्काक दरबज्जापर पहुँचते प्रणाम करैत बजलौं- "काका, गोड़ लगै छी, हम श्याम छी।"

ओना, देखिते पहिने ललित काका ऊपर-निच्चाँ तजबीज करए लगला मुदा बजिते सोल्होअना चीन्ह गेला। ललित काका बजला- "बौआ श्याम, पहिने हाथ-पएर धुअ। हाथ-पएर धोने चाइलिक थकान मेटाइए। कहुना भेलिऐ तँ अपना सभ मिथिलाक मैथिल ने भेलिऐ। जहिना दूधकेँ मोहि मक्खन बनैए तहिना ने अपनो सभ माथकेँ मथि-मथि मैथिल बनल छी।"

अप्पन मुँह बन्ने रखने रही। उमेर पेब एते तँ बुधि भइये गेल अछि जे अनका मुँहक बात बेसी सुनी। बजलौं- "हँ से तँ छीहे।"

एकाएक ललित कक्काक मन विश्वाससँ भरि गेलैन। तैबीच ललित कक्काक पोती- सुनीतिया, चाह नेने दरबज्जापर पहुँचल। दुनूगोरे माने अपनो आ ललितोकाका चाह पीलौं। ललित काका अखनो अपने हाथे पान लगबै छैथ। जहिना भानस केनिहारि भनसिया अप्पन मनोनुकूल भोजन बनबै छैथ तहिना अप्पन मनक अनुकूल ललित काका पान लगबै छैथ। ओना, मुँहमे दाँत एकोटा ने छैन मुदा चेहरा एते पुष्ट छैन जे टुटल दाँतक कोनो लक्षण ऊपरसँ नहियेँ देखि पड़ै छैन। पान लगबैत ललित काका बजला-

"केहेन पान खाइ छह, श्याम? माने खिल्ली छोट कि पैघ?"

बजलौं- "काका, पान नइ खाइ छी।"

ललित काका बजला- "हँ, आब तँ तूँ बंगलोर-वासी भऽ गेलह, तँए मिथिलाक रीति-रिवाज, माने मैथिलपन बिसैर गेलह।"

ओना, मनमे हुअए जे कहिऐन- 'काका आजुक परिवेशमे लोककेँ एते छुट्टी छै जे घन्टा-घन्टा भरि पानक दोकानपर लाइनमे लागल रहत आकि अपने हाथे जँ

दसो बेर, माने दिन-राति मिला, पान लगौत तँ दू-तीन घन्टा समय ओहीमे देत। मुदा बजलौं किछु ने। बजलौं एतबे-

“काका, किए एलौं से एकोबेर पुछबो ने करै छी।”

ललित काकाकेँ जेना नैतिक क्रोध उठि गेलैन तहिना बजला-

“बड़ बुड़िवान छह हौ, एहनो विचार कियो करैए जे दरबज्जापर आएल अभ्यागतकेँ पुछैन जे अहाँ किए एलौं। पुरुखक दरबज्जा छी आकि मौगीक, जे पुछबह जे तूँ किए एलह?”

एक तँ ओहुना जँ कोनो भूल-चूक भऽ जाए आ श्रेष्ठजन जँ ओकर निवारण कऽ दैथ तँ मानि लेबाक चाही। बजलौं- “काका, जहिना लोक गीत-भजनमे गबै छैथ जे खाली हाथ एलौं आ खालीए हाथ चलि जाएब, तहिना अपनो भेल। जखन जवान भेलौं तखन गामक स्थितिमे सोच बनल, अप्पन समाज जे सामन्तशाही रहल, तइमे अधिकांश जन-गणक जे सोच बनैए, तइ अनुकूल अभावक जिनगी तँ छेलए-हे। तहूमे सभ कथुक अभाव, अन्न, वस्त्र, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य इत्यादि अधिकांश लोकक जहिना बनल आबि रहल अछि तहिना अपनो छल। तँए, अप्पन जीवन सुधारैले गाम छोड़ि बंगलोर गेलौं।”

एकाएक बंगलोरक सीमामे अबिते विचार ठमैक गेल जइसँ बोलती बन्न भऽ गेल। चुप देखि ललित काका बजला-

“बौआ, चुप्प किए भेलह। गाममे एकटा कि तोहीं टा भेलह हेन जे बंगलोर गेलह, आकि जेठुआ उजैहिया कहक आकि धारक माछक अवारि जकाँ भेल अछि।”

मनमे भेल जे अप्पन पेटक सभ बात कक्काक सोझामे उझैल दिऐन जे पाइक बलेँ जे सुन्दर जीवनक कल्पना केने छेलौं, सभ मटियामेट भऽ गेल। जैठामक, ऐठाम बेकतीसँ परिवार, परिवारसँ समाज आ समाजसँ देश-दुनियाँ अछि, श्रमशील शक्ति जेतेक प्रवल होइत जाएत ओइठामक बेकतीसँ समाज धरि ओतेक आगू बढ़त माने ऊपर चढ़त आ जैठामक श्रमहीन शक्ति जेतेक अथवल होइत जाएत ओइठामक बेकतीसँ समाज धरि ओते मटियामेट होइत जाएत। मुदा से सभ किछु ने बजलौं, ओ ऐ दुआरे जे ललित कक्काक विचार जानए चाहि रहल

छी। सोल्होअना मन कबूल कइये नेने अछि जे नब्बे बरख टपला पछातियो ललित काकामे वएह सोचो आ विचारो, आइयो ओहिना मनमे प्रवाहित भऽ रहल छैन जे जीवनक शुरूआतमे छेलैन। एक तँ ओहुना आजुक परिवेशमे नब्बे बरख जीब लेब ठट्ठा नहियेँ छी, मुदा विचारक संग टकुआटान जीब लेबे ने जीवनक सार्थकता छी। ललित कक्काक आगूक विचार बुझै दुआरे बजलौं- “काका, आब गामेमे रहब।”

मुस्कुराइत ललित काका बजला- “आब तोरा सबहक बास गाममे थोड़े हेतह।”

पुछलयैन- “से किए काका?”

ललित काका बजला- “ई नइ बुझल छह जे मिथिलाक गाम महादेवक त्रिशूलपर अछि।”

केते गोरेक मुहेँ सुनने जरूर छी, मुदा महादेवक त्रिशूलपर अछि, से बुझिये ने रहल छी। बजलौं- “से केना काका?”

ललित काका बजला- “जहिना देशमे एकदिस सामन्ती विचार आ काज चलि रहल अछि, तहिना दोसर दिस पुरान पूँजीपतिक, माने पूर्वक जरूरतक अनुकूल जिनकर कारोबार छेलैन आ नव पूँजीपति, जे नव मशीनक संग नव जीवन गढ़ए चाहि रहल अछि, जेकर फलाफल देखिते छहक, टाटा-बिड़लाकेँ, जे किछु दिन पूर्व तक देशक सभसँ पैघ पूँजीपति छला, आइ ओ बहुत पाछू पड़ि गेला। अही त्रिशूलमे अपनो सभ आ समाजो लसकल छी।”

ललित कक्काक विचार सुनि मनमे भेल जे किए ने ललित काकाकेँ दसम दशकक वा सइयम दशकक बधाइयो दइये दिऐन। बजलौं- “काका, टकुआटान जिनगीक लेल अपनेकेँ बधाइ।”

❑ टकुआटान

उमेरोक हिसाबसँ आ विचारोक हिसाबसँ डॉ. राधारमण भाइक आत्मज्ञान बढ़ि गेबे कएल छैन, तँए जखन आइक अप्पन रूपपर नजैर दइ छैथ, तखन विद्रूपोसँ विद्रूप बुझि पड़ि रहल छैन। जइ सहोदर भाइक संग रातिक-राति दू बजे तक, परिवार-समाज आ जिनगीक गप-सप्प सिनेहसँ करै छेलौं, जेहेन जीवन जिनगीक साठि बर्खसँ रहल ओ आइ केना कुसिनेह भऽ गेल? आँखिक सोझमे सहोदर भाए कहै छैथ जे 'राधारमण सन बेइमान ऐ दुनियाँमे दोसर नहि अछि!'

दरबज्जाक ओसारक कोठरीमे पलंगपर पड़ल तिरासी बर्खक डॉक्टर राधारमण भाय अपन बीतल जीवनक पोस्टमार्टम कऽ रहला अछि। जिनगियो तँ जिनगी छी, जे कियो शुरूसँ एकान्तवास करैक जीवन बना नेने छैथ, हुनक विचार सन्तुलित रहबे करतैन, मुदा जे एकान्तवाससँ हटि बहुवासक जीवन बना लेलैन, तिनका लेल तँ एकान्त नर्कक बास भइये जाइए। जखने नारकीय जीवनसँ भेँट हएत तँ ओ मनकेँ विचलित कइये दइए। सएह डॉ. राधारमण भायकेँ भऽ रहल छैन।

प्रवाहित होइत अपन धारामे सदैत धार चलैत रहैए मुदा ओइमे पार होइकाल आ पार भेला पछाइत, माने धार पार भेला पछातिक जे मानसिक अवस्था बनैए, तइमे डॉ. राधारमण भायकेँ खाँच-पर-खाँच बनि गेल छैन। खाँच ई जे जहिना धार पार होइसँ पूर्वक महारपर धार पार होइक योजना मनमे बनैए। बनैए जे धारे छी, नाह सही ढंगसँ पार करत आकि बीच मोनिमे डुमत तेकर कोन ठेकान। मुदा एते तँ मनमे जगिते अछि जे धार केहनो प्रवल किए ने हुअए मुदा सौंसे धारक धारा एकरंग प्रवाहित नइ होइए। बीच धारक धारा बेसी गहींर तक रहैए, जेकर अधिकांश हिस्सा कम प्रवाहित होइए आ ऊपरका हिस्सा बेसी गतिसँ प्रवाहित

होइत चलैए। खाएर जे चलैए, जेना चलैए तइसँ राधारमण भायकेँ कोन मतलब छैन।

जाधैर नोकरीक अवस्थामे राधारमण भाय रहला, ताधैर जी-तोड़ि मेहनतो केलैन आ पाइक उपार्जन सेहो तहिना केलैन। मिथिलांचल धार-धुरक इलाका छीहे। कोनो इलाका साँपसँ माने सँपकट्टीसँ आक्रान्त अछि तँ कोनो इलाका कोनो दोसरे आफतसँ आक्रान्त अछि, मुदा अछि सभ। बुझले अछि जे जहिना बाढ़िक इलाका छी तहिना रौदीक सेहो छीहे। जिनगीक शुरुआतीए दौड़मे, जखन राधारमण भाय नोकरीक जीवन शुरूए केलैन तहिये, अनुभव केलाह जे सइयो रांगक इलाज करैक कला अपनामे अछि, मुदा जँ क्षेत्रानुकूल सपकटियाक इलाज करैक विशेष गुण आनि ली तँ एकटा रोगक विशेषताक संग इलाज करैत रहब, जइसँ अखड़ाहापर टाल ठोकि अप्पन दाबी करैक अधिकारी सेहो बनबे करब। भाय कियो अछि तँ मनुक्खे अछि किने, से तँ अपनो छीहे।

नोकरीक किछुए बर्खक पछाइत दसकोसी भरिमे डॉ. राधारमण भाइक चर्च भगवानक रूपमे हुअ लगलैन। ओहुना सभ जनिते छी जे समाजमे एहेन धारणा अखनो जीवित अछि जे डॉक्टरमे भगवानक रूप देखल जाइ छैन। लोकक बीच जिनगीक प्रति विश्वास बढ़बे केलैन। विश्वासक माने ई भेल जे अखन तक गाम-समाजमे जे सपकटिया लोक जीबो करै छला आ मरबो तँ करिते छला। एहेन कटारि तँ जीवन-मृत्युक बीच अछिए। ओना, आनो रोग तँ कमो-बेस सएह छीहे। अही बीचमे मदारी सभक खेल सेहो अछि। अपना ऐठाम साँपक जे संख्या अछि, तइमे पाँच-सात प्रतिशत विशेष जहरीला साँप अछि जेकर प्रभावसँ बहुतो लोक मरैए। जेकर इलाज 'विषस्य विषमौषधम्'। सभकेँ बुझल अछिए। मुदा ओ तँ दृष्टिपात केलाक पछातिये पेब सकै छी। ओना, अपना ऐठाम करीब दू दर्जनसँ बेसी पद्धति इलाजक माने रोग-निवारणक अछि, तइमे एलोपैथ सेहो एकटा छी।

अप्पन भगवानक रूप देखि डॉ. राधारमण भायकेँ मनमे शान्ति एलैन, मुदा खसैत जिनगी ओइ शान्तिकेँ अशान्त कऽ देलकैन। अपने मनमे उठलैन, नोकरीक समयमे जे सिनेह परिवारसँ छल, जेकरा ले दिन-राति मेहनत केलौं ओ आइ केतए अछि? उमेरोक हिसाबसँ आ विचारोक हिसाबसँ डॉ. राधारमण भाइक आत्मज्ञान

बढ़ि गेबे कएल छैन, तँए जखन आइक अप्पन रूपपर नजैर दइ छैथ, तखन विद्रूपोसँ विद्रूप बुझि पड़ि रहल छैन। जइ सहोदर भाइक संग रातिक-राति दू बजे तक, परिवार-समाज आ जिनगीक गप-सप्प सिनेहसँ करै छेलौं, जेहेन जीवन जिनगीक साठि बर्खसँ रहल ओ आइ केना कुसिनेह भऽ गेल? आँखिक सोझमे सहोदर भाए कहै छैथ जे 'राधारमण सन बेइमान ऐ दुनियाँमे दोसर नहि अछि!'

विचारक कटारि लग अबिते डॉ. राधारमणक दुनू आँखि नोरा गेलैन। मुदा आरो दत्तचित भऽ अप्पन जिनगीक अनुसन्धान करब आवश्यक बुझलैन। तँए, जहिया विद्यालयमे प्रवेश केलैन तहियेसँ अप्पन खोज-बीन शुरू केलैन।

❑ पोस्टमार्टम

किसानी जीवन रहितो शोभित भाय एकान्त-प्रिय लोक छैथ। एकान्त प्रिय बनैमे शोभित भायकेँ अपनो विवेक काज कऽ रहलैन अछि आ समाजक कुप्रभाव सेहो संग देने छैन। समाजक कुप्रभाव ऐ रूपेँ संग देने छैन जे समाजमे ओहन लोकक संख्या बेसी अछि जे छह-पाँच करै पाछू भरि दिन लागल रहैए। जखन समाज एहने छह-पाँच करैबलाक अछि तखन तँ कियो अप्पन इज्जत तखने ने बँचा सकै छी जखन अप्पन जीवनक सभ क्रियाकेँ पकैड़, एकान्त प्रिय बनि अपना काजक पाछू लागि जाइ।

फगुआसँ तीन दिन पहिनहि शोभित भाय अप्पन बीतल सालक लेखा-जोखा ऐ दुआरे करए लगला जे अखन तक सालक अन्तिम मास 'फागुन'केँ आ सालक अन्तिम पर्व 'फगुआ'केँ बुझै छैथ, तँए अप्पन बीतल सालक लेखा-जोखा, आने साल जकाँ कइये लेब नीक बुझलैन। अप्पन मालिक आकि अप्पन भगवान, अपना ऐठाम भगवानकेँ मालिको कहल जाइ छैन, अपने ने छी। अहाँ कहब जे सरकारी हिसाबक किताब बनैए मार्चमे आ अहाँ फागुनमे बनबै छी? ..सरकारी कारोबार डोल-पत्ता करैए, फगुआ सन पाबैनकेँ गोटे साल मार्चमे आ गोटे साल अप्रैलमे काटिकऽ कबीरदासक मृत शरीरकेँ जहिना बँटैले लोक सभ अपना-अपनीकेँ तैयार भेल जे कबीर बाबा हम्मर छिआ, तँ हम्मर छिआ, तेना जँ फागुनक फगुआकेँ होइत तँ दिव्य हेबे करैत मुदा से तँ भेल नहि अछि। बेपारी सभ कातिक मासकेँ अप्पन बही-खाताक साल बनौने छैथ, ऐठाम ई नइ बुझब जे जिनका संग कारोबार चलै छैन माने किसानक संग, तिनका सभ-ले सभसँ अधलाह (दुखद) मास कातिके छी, ऐठाम एतबे कहै छी जे अपना ऐठामक जे बेपारी छैथ ओसभ दिवालीकेँ शुभ बुझि सालक अन्तिम पाबैन मानि नव सालक शुरुआत कातिकसँ

मानै छैथ। फगुआक धुनिमे जहिना किसान तहिना जोगीजी सभ सेहो जोगीरा गबै छैथ आ डम्फाक धुनपर नचबो तँ करिते छैथ। भलेँ हाथक काज छीन रमताजोगी किए ने बना देल गेल होइन। तेतबे नहि, रेडियो स्टेशनक धुन तँ तहूसँ बेसी डम्फाक अवाजपर नाचि रहल अछि। एक दिस कहैए, माने रेडियो स्टेशनसँ प्रसारित-प्रचारित होइए जे 'बटशावित्री जेठ मासक अमावसियाकेँ होइए', आ लगले दोसर दिस बजैए जे 'आजुक तिथि बैशाख मासक उनतीसम दिन छी.!' तँए, ऐठाम जहिना सालकेँ तहिना महीनाकेँ टुकड़ी-टुकड़ी काटि बँटवारा भऽ गेल अछि। खाएर जे भेल अछि तइसँ शोभित भायकेँ कोन मतलब छैन, मतलब छैन अप्पन बीतल सालक जीवन धारमे बहैत सुख-दुखक मात्र हिसाब जोड़बसँ।

किसानी जीवन रहितो शोभित भाय एकान्त-प्रिय लोक छैथ। एकान्त-प्रिय बनैमे शोभित भायकेँ अपनो विवेक काज कऽ रहलैन अछि आ समाजक कुप्रभाव सेहो संग देने छैन। समाजक कुप्रभाव ऐ रूपेँ संग देने छैन जे समाजमे ओहन लोकक संख्या बेसी अछि जे छह-पाँच करै पाछू भरि दिन लागल रहैए। जखन समाज एहने छह-पाँच करैबलाक अछि तखन तँ कियो अप्पन इज्जत तखने ने बँचा सकै छी जखन अप्पन जीवनक सभ क्रियाकेँ पकैड़, एकान्त-प्रिय बनि अपना काजक पाछू लागि जाइ। एहने परिस्थितिक उपज शोभित भाय छैथ। समाजमे देखिते रहला अछि जे एक्कोअना लोक ने सोल्होअना सत् बजैए आ ने सोल्होअना फुइस। त्रिशंकु जकाँ अकास-धरतीक बीच जहिना दू देशक मध्य डिमार्केशन लाइन होइत, जेतए लोक पूर्ण स्वतंत्र होइए, तहिना ने सभ पूर्ण स्वतंत्र अछिए।

❑ ऐ सालक नाह बुड़ि गेल

“बौआ, परिवारक इज्जत छी, शंकरदेव जहाँ-तहाँ बाजल घुमैए जे ‘पितेजीक कुचालिसँ गुरुजी नइ बनलौं। तेसर बरख छी, जँ से भेल रहैत तँ अखन हमहूँ अहिना चौक-चौराहापर ढहनाएल घुमितौं आकि पैंतीस-चालीस हजार रूपैआ महीनाक लोक बनि गेल रहितौं।’ परिवारक बीचक बात छी, सबहक बीचमे बजा कऽ पुछहक।”

आइ दस बर्खसँ शंकरदेव नोकरी पाछू फिफिआ रहल अछि मुदा नोकरी नइ भेलइ। तेकर अनेको कारण अछि, मुदा देनिहारसँ बेसी लेनिहार अछि जे सबहक आँखिक सोझेमे अछि, तखन पूरत केना। देखिते छी जे धरमशल्लो सभमे कम्मले आकि सिङ्गहरे-लिट्टी बँटनिहार पाँच गोरे रहैए आ पाँच साए हाथ लेनिहारक आगूमे पसरल रहैए, तैठाम केना पार लागत? खाएर, शंकरदेवक मनमे ई थोड़े अछि। मनमे अछि जे जँ किछु लेनियो-देनी करए पड़त सेहो करब। मुदा जहिना साकेत महाकाव्यमे गुप्त भाय कहने छैथ जे ‘तेरे घर के द्वार बहुत हैं, किन द्वारों से आऊं मैं? हर द्वारों पर भीड़ मची है, कैसे भीतर जाऊं मैं?’ एकछाहा विचार तँ गुप्त भाइक जरूर छैन मुदा कहैमे एकटा बात छुटि गेलैन जे नीकोमे भीड़ अछि आ अधलोमे तँ तहिना भीड़ अछि। ने एक्केटा घूसखोर अछि आ ने एक्के रंगक घूस देनिहार अछि। खाएर जे अछि।

शंकरदेवकेँ एकबेर शिक्षकक नोकरीमे जोगार बैसल। लाखक लेन-देन छल, कोनो महग नइ बुझि पड़लै। देखिते छी जे लोक दस-दस, पनरह-पनरह सालक दरमाहा बरबैर घूस दैये रहल अछि।

गप-सप्प पक्का-पक्की भेला पछाइत शंकरदेव देवी काकाकेँ लगमे आबि कहलकैन- “बाबू, एक लाख रूपैआक खगता अछि।”

मुँह खोलिकऽ शंकरदेव ऐ दुआरे नइ बाजल जे लेनिहार दिससँ तरपेशकी मनाही कऽ देल गेल छेलै जे केकरो लग बाजब नहि। जहिना अखन गाम-समाजमे देखै छी जे बहरबैया बेपारी सभ घरमे राखल, माने लोकक घरक, सोनाकेँ पीतैर आ चानीकेँ गिलट-अल्मुनिया कहि लूटि-लूटि लऽ जा रहल अछि। कनफुसकी एते भारी अछि जे जहिना ढौँढ़ साँपक बीख एक्के मंत्रमे उतैर जाइए तहिना गाम-घरक सुधवा-बुधवा स्त्रीगणकेँ जखने कानमे दइए जे 'केकरो लग बाजब नहि!' भऽ गेल ओ महिला अप्पन बेटाक कोन बात जे पतियोकेँ नहि कहै छैथ। यएह तँ छी मिथिलाक पतिव्रत धारणा। खाएर जे अछि, देवी काका बजला-

"केहेन खगता छह?"

देवी कक्काक अप्पन मन पूर्ण रूपेँ भरल छैन। भरल ई छैन जे जेठ बेटाकेँ एक्को पाइ कारोबार करैले नहि देने छेलखिन। महादेव अप्पन श्रमक बलपर अप्पन परिवारकेँ गामक गनल नीक परिवारमे रखने अछि।

शंकरदेव असमंजसमे पड़ल, जँ नोकरीक भेद खुजि जाएत तखन जीवनक सभ किछु हेरा जाएत, तँए देवी काका लग बजैसँ हिचकिचाइ छल। एहने तँ पिता-पुत्रक बीच परिवेश बनल अछि। देखिते छी जे गाम-गाममे रंग-बिरंगक विद्यालयक निर्माण भऽ रहल अछि। हवा एहेन बनौल जा रहल छै जे सभ किछु नीके अछि। सैंयो नीक बेटबो नीक, किरिया केकर लोक खाएत।

शंकरदेव पिताकेँ खोलिकऽ नहि कहैन जे जखने भेद खुजि जाएत तखने अभेद भऽ जाएत। लाखे रूपैआक काज अछि। आजुक समयमे लाख रूपैआ कोनो भारी-भरकम थोड़े भेल। साधारण मूड़न-उपनैनमे लोक दस लाख, बीस लाख खर्च करैए। मुदा जे देवी काका एक-एक पाइक मूल्य बुझै छैथ ओ लाख रूपैआ बिनु बुझने केना दइतैथ। केता दिनक घमर्थनक पछाइत शंकरदेव मुँह खोलि बाजल-

"बाबू, लाख रूपैआ लगलासँ नोकरी भऽ जाएत।"

शंकरदेवक विचार सुनि देवी काका अकचकेला नहि, किए तँ दिन-राति एहेन समाचार चलिये रहल अछि जे घुसखोरी-भ्रष्टाचारपर प्रतिबन्ध लगि गेल, मुदा भ्रष्टाचारी सत्ताकेँ चुसि कऽ सिट्ठी बना रहल अछि। देवी काका पुछलखिन-

"बौआ, लाख रूपैआ लगाकऽ नोकरी कोन करबह?"

देवी काका, जहिना हीरामे राखल ओहन गुण जे लोहाक कोन बात जे शीशोकेँ धुन्नी-धुन्नी काटि दइए, तेहेन विचार मनमे रोपनहि छैथ। वाणीकेँ सोझ बुझि शंकरदेव बाजल-

“शिक्षकक नोकरी करब।”

शंकरदेवक विचार सुनिते देवी काकाकेँ जेना जवाब विचारले रहैन तहिना बजला-

“जखन घूस दऽ कऽ अपने शिक्षक बनबह तखन बच्चा सभकेँ पढ़ेबहक की?”

दुविधामे शंकरदेव फँसि गेल। ने देवी काका पाइ देलखिन आ ने शंकरदेवकेँ नोकरी भेल।

चौक-चौराहापर बैसनिहार शंकरदेव बनियेँ गेल अछि। शिखर-परागक चहैट सेहो लगिये गेल छइ। परोछमे माने पिताक परोछमे, शंकरदेव मुँह खोलि-खोलि बाजए लगल जे ‘बाबूएक चलैत गुरुजी नइ बनलौं।’

एक्के-दुइये मुहसँ सुनि देवी काका विचारलैन जे अखन तक अपना एतबो कुव्वत नइ बनल अछि जे अपनो परिवारकेँ सम्हारिकऽ रखि सकब.! मनमे विचार केलैन जे परिवारक सभ एकठाम बैस शंकरदेवकेँ पुछबै। ओना, देवी कक्काक विचारमे परिवार तँ एलैन मुदा परिवारक सीमा-सरहद बुझैमे भौक भऽ गेलैन। भौक ई भऽ गेलैन जे पिताक परोछ भेने माने मृत्यु भेने, माइयो आ मामो बाल-बच्चाक ओली बनैक अधिकार रखै छैथ, माने पितातुल्य जवाबदेह बनैक हकदार होइ छैथ। जेना खेतक लेन-देनमे माइयक संग मामो ओली बनिते छैथ।

देवी काका पत्नी आ जेठ बेटाकेँ, माने लालमणि आ महादेवकेँ कहलैन-

“बौआ, परिवारक इज्जत छी, शंकरदेव जहाँ-तहाँ बाजल घुमैए जे ‘पितेजीक कुचालिसँ गुरुजी नइ बनलौं। तेसर बरख छी, जँ से भेल रहैत तँ अखन हमहूँ अहिना चौक-चौराहापर ढहनाएल घुमितौं आकि पैंतीस-चालीस हजार रूपैआ महीनाक लोक बनि गेल रहितौं।’ परिवारक बीचक बात छी, सबहक बीचमे बजा कऽ पुछहक।”

शुरूमे महादेवक मनमे दुविधा उठल जे जखन माता-पिता दुनू सोझामे छैथ, तखन हम की बाजब। मुदा लगले अप्पन मन धिरकारि कहलकैन जे अखन जँ बाबू परोछ भऽ जाथि, माने मरि जाथि, तखन माए तँ स्त्रीगण कहि परिवारक जवाबदेहीसँ हटि जेती, मुदा अपने केना हटि सकै छी। वंशक भार तँ हमरे ऊपर अछि। अप्पन पुरुषार्थ जगबैत महादेव बाजल-

"बाबू, पहिने शंकरदेवकेँ पुछब नीक हएत जे जे बात सुनि रहल छी ओ कहाँ धरि सत्य अछि। किए तँ देखिये रहल छी जे लुच्चा-लम्पटसँ गाम भरल अछि, के कखन सत् बाजत आ कखन फूसि, तेकर केकरो ठेकाने ने अछि। मुदा शंकरदेव तँ जहिना अहाँक सन्तान छी तहिना हमरो ने सहोदर भाए छी, तँए ओकरो जीवनकेँ अपने जीवन जकाँ ने बनबैक अछि।"

❑ सामंजस्य

आने गाम जकाँ जखन महींसवारो गाम गामे छी आ लोको लोके छैथ, तखन आने गामक लोक जकाँ आगू बढ़ि किछु करैक शक्ति सेहो हेबे करतैन किने।

लोकक नाम जहिना अनगिनत अछि तहिना गामोक अछिए। कहब जे मरदुमशुमारीमे गिनतीमे सभ लोको आ सभ गामो आबिये जाइए तखन अनगिनत केना भेल? अहूँक विचार अपना हिसाबे ठीके अछि, मुदा अहीं कहू जे घरबैया-बहरबैयाक हिसाब रहने कम-बेसी हएत की नहि। तहूमे लोक तँ लोके छी, बाजसँ चालबाज धरि अछिए। मुदा अपना सभ तँ से नहि छी, कोन जरूरी चालक अछि आकि झूठ बाजक। चालक जरूरी तँ माटिक मूर्तिक लेल अछि, मनुक्खक लेल किए रहत। देखिते छी जे बिनु माटिमे गाड़ल दूटा पएर अछि तैपर अपना भरे ठाढ़ छी। आन कोनो दूटा अपना भरे ठाढ़ भऽ सकैए? से तँ नहियेँ होइए। औरक बात छोड़ू जे बाँसक दूटा टोने वा जड़िये-छीपकेँ ठाढ़ करब तँ ओ थोड़े अपना भरे ठाढ़ हएत? तइले कम-सँ-कम तीनटाक जरूरत होइते अछि। ओहू तीनमे रस्सीक जँ सहयोग नइ भेटत तखन सेहो ने हएत।

लोकक नामक अनगिनत होइक दोसरो कारण अछि, ओ अछि जे जहिना जन्म लइक ठेकान नहि अछि तहिना मरैयोक ठेकान नहियेँ अछि, माने कखन के जन्म लेत आ कखन के मरत, तेकर कोन ठेकान अछि। तँए, मनुक्खक गिनती बेठेकान भइये जाइए। एकर माने ई नइ बुझब जे जन्मक ठेकान नहि अछि। सभ जनिते छी जे दू साए सत्तैर दिनपर गाइये जकाँ माइयोकेँ होइते छैन। एकर माने ई नइ बुझब जे कुत्ता-बिलाइक पाँचे मास माने डेढ़े साए दिनपर जेरक-जेरकेँ जन्म नइ होइत अछि।

ओना, कहैकाल कहा गेल जे लोकक नामे जकाँ गामोक नाम अछि मुदा तेतबे टा नइ अछि। जनितो छी आ देखितो तँ छीहे जे अपना ऐठाम फलक राजा आम छी, मुदा कोन आम राजा छी तेकरो ने बुझब अछि। जनिते छी आ देखितो

छीहे जे एकदिस सुपारी सन बड़बरिया आम अछि आ दोसर दिस मालदह, कृष्णभोग आम सेहो अछि। मानि लिअ जे मालदह आम आमक राजा भेल। तइले बम्बैइये-कृष्णभोग आकि कलकतीएकेँ किए मनमे कुवाथ हएत। मनुक्खक सेवाकेँ धर्म बुझि समर्पित अछिए। ऐठाम वुद्धदेवक विचार नइ बुझब जे माटिक मूर्तिक नहि बुइधिक समर्पण होइए। आब आउ मालदहपर। आमक गाछक एहेन गुण-धर्म अछिए जे पुरान गाछक डारिसँ दोसर नव गाछकेँ जोड़लासँ नव गाछ सेहो होइए आ दोसर दिस फलक बीआ सँ सेहो गाछ होइए। ऐठाम प्रश्न अछि जे डारिसँ डारिक जोड़क जे गाछ अछि ओकर वंश एक्के रहल मुदा बीजसँ बनल गाछक वंश तँ बदलबे करत। वंश बदलबाक दोसर कारण ईहो अछि जे कलमी मालदहे हुअए कि कृष्णभोगे आकि फैजलीए किए ने हुअए, मुदा डारिक गाछ आ बीआक गाछक फलमे अन्तर सेहो भइये जाइए।

मानि लिअ जे कलमीए आकि सरहीए कोनो आम अछि, बीआसँ बीआक जे गाछ हएत ओकर रूपो आ गुणोमे किछु-ने-किछु अन्तर हेबे करत मुदा डारिसँ बनल गाछमे अन्तर नइ होइए। ई तँ भेल जेकरा अपन देहो आ फलोक बीआसँ जन्म देबाक गुण अछि, मुदा सभ फलो तँ एहेन नहियेँ अछि जेकरा दुनू गुण-धर्म होइ। किछु एहनो तँ अछिए जे डारिसँ जन्म नइ लइए आ बीएटा सँ जन्म लइए। ओना, एहेन गुण आमे टा फलमे नहि अछि, अल्हुआ मे सेहो अछि। जखन कि आमक गाछ वृक्ष कहबैए आ अल्हुआक गाछ लत्ती। गाछ तँ गाछ भेल, जेकर नाम गुण सभमे छै, माने अमुक चीजक गाछ, मुदा सभ गाछ वृक्षे नइ होइए, लत्तियो तँ होइते अछि। धान किए ने भलेँ धने कहबए। ऐठाम लोकक नाम आ गामक नामक चर्च अछि तँए आम-कटहर आकि अल्हुआ-सुथनीक गपकेँ कम करू। आमे जकाँ अल्हुओक बढ़वारि दू-दिसिया अछिए। माने गाछोसँ गाछ आ लत्तीयोसँ लत्ती होइए। खाएर फल जेतए रहह मुदा गाममे रहनिहार भलेँ गामक नाम लऽ अपन परिचय किए ने दैथ मुदा लोक तँ लोके भेला किने, चाहे जइ गामक होइथ।

सभ गामक लोक तँ लोके भेला, मुदा गामोक माटि-पानिकेँ तँ अप्पन-अप्पन गुण-धर्म अछिए। ओना, भौगोलिक रूपमे सेहो आ सामाजिक रूपमे सेहो अछिए। देखिते छी जे कोसी-कमलाकातक इलाकाक गाममे मनेजर -झौआक बोन

लगल रहैए आ ठेहा परक गाम एहनो तँ अछिए, जैठाम आम सन राजा फल, धान सन राजा अन्न, गेन्दा-गुलाब आकि बेला-बेली-जूही सन फूलक बोन नहि अछि, सेहो अछिए।

कमलाकातक एकटा गामक नाम महींसवारक गामसँ जानल जाइए। ओना, कोसियो इलाकामे आ कमलो-बलानक इलाकामे अनेको गाम एहेन अछिए जैठामक जीविकाक मुख्य साधन महींस पोसव छी। एकर दुनू कारण अछि, अन्नक खेती पानिसँ मरा जाइए, जइसँ पशुपालन जीविका मुख्य साधन अछि। दोसर कारण ईहो अछि जे बरसातक अतिरिक्त मौसममे घास-पात जमीनमे उगिकऽ चारागाह बनि जाइए, जइसँ पशुपालन सेहो सुगम भइये जाइए। मनुक्खकेँ जीबैले किछु जरूरतक पूर्ति करए पड़ै छैन। ओना, जीवनक मूल आवश्यकता जीवनक संग सेहो बदैलते अछि, सभ बुझै छी जे गरीब लोक अन्न बेसी खाइए आ धनीक लोक फल-फलहरी, दूध-दही। एकरा छोड़ू।

आने गाम जकाँ जखन महींसवारो गाम गामे छी आ लोको लोके छैथ, तखन आने गामक लोक जकाँ आगू बढ़ि किछु करैक शक्ति सेहो छैन्हे। चाहे रिक्शाबला होथि कि खेतक कदबामे लेटाइत खेतिहर होथि आकि कोयलाक कारीखमे नहाएल खदानी होथि, सभकेँ अप्पन-अप्पन मन छैन आ सभकेँ अप्पन-अप्पन शक्ति सेहो छैन्हे, तँए सभकियो अपन जीवनकेँ बिसैर पारिवारिक जीवनकेँ सार्थक जीवन बनबए चाहिते छैथ। देखिते छी जे रिक्शोबलाक इच्छा-शक्तिसँ ओहन पुत्र पैदा होइए जे शक्तिशाली होइए, रिक्शेबलाक किए कहबै जे खेतहरियो आ खदानियो अप्पन-अप्पन संकल्प शक्तिसँ पुत्रक संकल्प शक्तिकेँ जगबैत एक-सँ-एक महामानव पैदा नहि केलैन वा नइ करै छैथ सेहो केना नइ कहल जाएत। हँ, एते जरूर अछि जे अनुपातक दृष्टिये कहले जा सकैए जे अनुपातक ग्राफ कम छैन।

❑ महींसवारक गाम

इज्जत जोड़ैले ने आबि रहला अछि, से तँ बड़बढ़ियाँ मुदा अखन तक जे गामक इज्जत लेलैन, तेकर पहिने जुरवाना लेब, तखन आगू बढ़ब।

महींसवार गाममे एहने संकल्पशील परमेसर काका छैथ जेहेन संकल्प केनिहार हेबा चाही। परमेसर काका अप्पन हड़तोड़ मेहनतक बलेँ अप्पन परिवारक निमरजना समाजक आने-आन परिवार जकाँ अप्पन जिनगी परिवारक जीवनक संग गुदस करैत चलि आबि रहल छैथ। देखो-देखी आ सुनो-सुनीक प्रभावसँ सीखो-सीखी सेहो किछु-ने-किछु मनुक्खपर पड़िते अछि। गाम-गामक माटि-पानिक एहेन गुण-धर्म सभ दिनसँ रहबे कएल अछि। जहिना हजारो रंगक अन्न, हजारो रंगक फल-फूल इत्यादिक जन्मभूमि मातृवत तँए मातृभूमि, आइये नइ अदौसँ रहल अछि। जहिना हजारो रंगक, ऐठाम एकटा गामक चर्च अछि तँए हजारेमे, नइ जँ दुनियाँक चर्च रहैत तँ लाखो नइ, करोड़ो नइ, अरबक चर्च होइत। जहू गाममे विद्यालय वा महाविद्यालय नइ अछि, तहू गाममे गोटि-पंगरा वैज्ञानिक कि डॉक्टर आकि इंजीनियर, प्रोफेसर, वकील नइ भेला अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए, सेहो भेबो केलाह अछि आ भइयो रहला अछि। तखन एते अन्तर तँ होइते अछि जे जइ गाममे बेसी डॉक्टर भेला, ओइ गामकेँ चौबगलीक गाम, गामक नाम बदैल, डॉक्टरक गाम कहबे करैए। तहिना वृत्तिक अनुकूल सेहो गामक नाम पड़िते अछि।

ओना, वृत्ति-वृत्तिमे सेहो आ भावनात्मक रूपमे सेहो बदलाव अछिए। जेकर प्रभाव जीवनपर पड़िते अछि। सामाजिक परिवेशमे मध्यम श्रेणीक, आर्थिक रूपमे पछुआएल, लोकक जीवन जे बौद्धिक रूपमे सेहो पाछू पड़ल, ओहन लोकक वृत्तिक रूपमे पशुपालन अपनौल गेल। ओना, पशुओक रूपमे आ मनुक्खक विकासक रूपमे सेहो अन्तर अछिए, से अखन नहि, अखन बस एतबे जे मध्यम वर्गक किसानक वृत्ति, ओना, मध्यम वर्गक किसाने टा नहि, जिनकर पारिवारिक जीवन किसानी नइ छैन सेहो परिवार, पशुपालनक वृत्तिकेँ अदौसँ अपनौने चलि आबि रहला अछि।

जेठुआ लगन धुर-झाड़ चलि रहल अछि। जहिना हिन्दू परिवारमे बिआह-सँ-मूड़न धरि तहिना मुसलमान परिवारमे बिआहसँ खँतना धरिक लगन चलि रहल अछि। गाममे अपन परिवारकेँ पढ़ै-लिखैक दौड़मे जँ किनको अगुएलैन तँ परमेसर कक्काक अगुएलैन। महींसक सेवाकेँ अपन जीवन-वृत्ति बना परिवार चलबैत अप्पन तीनू बेटाकेँ इंजीनियरिंग, डॉक्टरी आ एग्रीकल्चरिंगमे पढ़बै छैथ। जेठ बेटा डॉक्टरीक अन्तिम परीक्षा दऽ चुकल छैन। रिजल्ट नइ निकललैन अछि। जहिना साधु-महात्मा सभ कहै छैथ जे जँ केतौ भण्डार पबिऐ तँ कमसँ एक गिरह हरदियोक सहयोग ओइमे जरूर करिऐ। जखन बिआहक धुर-झाड़ लगन चलि रहल अछि तखन कि परमेसर काका ले चैत पड़ि जानि सेहो केहेन हएत। अही टोहमे परमेसर काका ऐठाम विदा भेलौं। हमरा पहुँचैसँ पहिने किसुनलाल भाय पहुँच गेल छला, मुदा प्रणाम-पाती छोड़ि दोसर कोनो गप नहि केने रहैथ। प्रणाम-पाती करैत हमहूँ चुपचाप बैसलौं।

एक तँ ओहुना बेटाधन पेब परमेसर कक्काक मन भरि गेल छैन, तैपर आजुक परिवेशमे पशुपालन करैत तीनू बेटाकेँ उच्च सीमापर जे पहुँचा रहला अछि तइसँ आरो मन गदगर भइये गेल छैन। परमेसर काका बजला- “किसुन, काल्हिखन ठेहा परक ठेहियाएल पाँचटा घटक औता, से मुस्ताइज रहिहह।”

किसुनलाल भाय बुझिकऽ चुप रहला आकि कोनो आरो आदेश सुनैक खियालसँ चुप रहला, से तँ ओ जानैथ, मुदा चुप्पे रहला। अपने ‘ठेहा परक ठेहियाएल’क माने नइ बुझलौं, तँए बजलौं- “की ठेहियाएल कहलिऐ, काका?”

परमेसर काका बजला- “बौआ, अपना गामक चौबगलीक जे गाम सभक जाति-बेरादर छैथ, ओ अपना गामकेँ महींसवारक गाम कहि भोज-भातसँ लऽ कऽ बिआह-दान धरिमे घेरा दऽ देने छैथ, मुदा आइ ओ टुटि रहल अछि।”

मनमे भेल जे कहिऐन इज्जत जोड़ैले ने आबि रहला अछि, मुदा अखन तक जे गामक इज्जत लेलैन, तेकर पहिने जुरवाना लेब, तखन आगू बढ़ब। मुदा बजलौं किछु ने।

❑ महींसवारक गाम

“भाय साहैब.! आइये नहि, अदौसँ समाजक बीच बोलीमे चलैन आबि रहल अछि जे श्राद्ध-कर्मक दैछनामे दसअना महापात्रक आ छहअना नौआक माने हजामक हिस्सा छिऐन। मुदा आइ जे लाखक कारोबार क्रिया-कर्म चलि रहल अछि, तइमे नौआकेँ की हिस्सा भेटै छैन।”

“अहाँ एहेन बात अबिते किए बजलौं जे भने अहाँ गाममे नइ छेलौं, नइ तँ मारि खइतौं। गाममे हमरा रहने अहाँकेँ अकच्छ लगैए जे एना बजलौं। जँ सएह लगैए तँ खोलिकऽ बाजू।”

ठोराहि स्त्रीगणकेँ जहिना ठोरेपर बरी पकैए तहिना सुकुमारि भौजीकेँ सेहो पाकि गेलैन, बजली- “हमरा किए अकच्छ लागत। सत्यवान सन पुरुखक संग जखन सावित्री अप्पन सेवा धर्म माने पतिक सेवा धर्म, निमाहलैन तखन कि हम ओइसँ भिन्न छी।”

पत्नीक विचार सुनि श्रीकान्त भायकेँ टुटल बोखार जकाँ थर्मामीटरक पारा एकाएक हहैरकऽ निच्चाँ उतैर गेलैन। बजला- “गाममे किछु भेल हेन की.!”

पतिक बातपर मोलामा चढ़बैत सुकुमारि भौजी बजली- “जहिना धारक पानि, चाहे ओ बीच धारक हुअए आकि किनछरिक, दिन-राति चलिते रहैए तहिना ने समयक गतिक संग गामो चलिते अछि, तँए किछु-ने-किछु तँ हेबे करत किने।”

पत्नीक गपक क्रम देखि श्रीकान्त भाय मने-मन आँकि लेलैन जे हिनका माने पत्नीकेँ, गप-सप्प करैक रंग चढ़ल छैन, मुदा अपने तँ आठ दिनक काजक झमारल छी, तँए आराम करैक मन अछि। मुदा पत्नीक जिज्ञासाकेँ पूर्ति केने बिना जँ आराम करए जाएब सेहो केहेन हएत। संयोग बनल, तहीकाल गुलटेन पहुँच गेल। गुलटेनसँ सुकुमारि भौजी धखाइ छैथ, किए धखाइ छैथ से तँ वएह जनती।

किए तँ देखै छी जे जइ गाम-समाजमे भैंसूर-भावोक दूरी छाँहो सँ बेसी मानल जाइए तैठाम हक-हिस्सा ले फाँड़ बान्हि भावो भैंसूरक संग पटका-पटकी करैले तैयार भइये रहल छैथ। मुदा सुकुमारि भौजी गुलटेनसँ किए धखाइ छैथ से नहि कहि। ओना, गाम-घरमे सरकारी खुपिया विभाग जकाँ खुपिया विभाग तँ अछि नहि मुदा एक-एक लोकक चालि-ढालि एक-एक लोक नइ जनै छैथ, सेहो बात नहियेँ अछि, सभक-सभ जनिते छैथ तँए भऽ सकैए जे कोनो तेहने सन किछु रहल होइन। गुलटेन बाजल- "श्रीकान्त भाय, बहुत समय लागल?"

गुलटेनक बात सुनि श्रीकान्त भाय बजला- "गुलटेन, अखन एबे केलौं हेन, कपड़ो-लत्ता देहमे ओहिना अछि, तँए पाँच मिनट समय दएह। पहिने कपड़ा बदैल लइ छी, पछाइत निचेनसँ सभ गप-सप्प करब।"

श्रीकान्त भाय कपड़ा बदलए गेला। सुकुमारि भौजी सेहो उठिकऽ चलि गेली। असगरे गुलटेन बैसल रहल। गुलटेनक मनमे उठल, भरिसक श्रीकान्त भाय सभ काज निपटौनहि एला अछि। मने-मन गुलटेन विचारि रहल छल कि श्रीकान्त भाय कपड़ा बदैल आबि बजला- "गुलटेन, हाइ कोर्टमे की केना भेल आकि केना की केलौं से पछाइत गप-सप्प करब। पहिने गामक गप कहह जे किछु भेल-तेल हेन ने ते?"

गुलटेन आ श्रीकान्त भाइक बीच जीवनक सम्बन्ध छैन, तँए श्रीकान्त भाइक मुहसँ सुनिते गुलटेन बाजल- "भाय, अजीव खेल ऐ बीचमे एकटा भऽ गेल। दुनू पार्टी दिससँ अहींकेँ पँच मानल गेल अछि। अहीं दुआरे सभ काज रूकल छइ।"

गुलटेनक बात सुनि श्रीकान्त भाय बजला- "आ जँ हम पाँच दिनक पछाइत अबितौं तखन की होइत।"

अप्पन माथ परक मोटा पटकैत गुलटेन बाजल- "से जे होइत, मुदा अखन तक अहींपर पनचैती अँटकल अछि।"

गुलटेनक विचार सुनि श्रीकान्त भाइक जिज्ञासा आरो बढ़लैन। बजला-

"कनी फरिछा कऽ बाजह जे अजीव खेल की भेल। देखिते छहक जे अखन खेले-तमासा राजसत्तासँ समाजसत्ता धरिक प्रमुख कर्तव्य भऽ गेल अछि। मुदा जखन ताशोक पत्तामे ठिकरीक बादशाह बेगमक डरसँ हाथ जोड़ने रहैए जे कहीं

भेद ने खुजि जाए जे बादशाह कनाह अछि, तखन आनक कोन बात।”

श्रीकान्त भाइक विचार सुनि गदगदाएल मने गुलटेन बाजल- “तहूसँ बेसी भऽ गेल अछि भाय साहैब.!”

श्रीकान्त भाय बजला- “अनेरे समय दुरि नइ करह। जे भेल तेकरा झाड़िकऽ बाजह।”

जहिना श्रीकान्त भाय तगेदा करैत बजला तहिना गुलटेन बिना कोनो लागि-लपेट क बाजल- “मुकुन्द बाबाक खोपड़ी माने मृत्युक पछातिक क्रिया-कर्मक खोपड़ी, बड़की पोखरिक पुबरिया महारपर बनल छैन। क्रिया-कर्मक पछाइत ओहीठाम महापात्रक संग ठकाइ ठाकुरकेँ थूकम-थूक भेल।”

जिज्ञासा करैत श्रीकान्त भाय बजला- “थूकम-थूक कथी ले भेलैन?”

गुलटेन बाजल- “दैछना ले।”

श्रीकान्त भाय बजला- “की दैछना ले?”

गाम-घरक लोक रहितो गुलटेनकेँ समयक आभास छइहे। बाजल-

“भाय साहैब, मोन अछि कि बिसैर गेलिऐ जे रामखेलौन आ हरिनारायणक बीच बटैया हिस्सा ले जहिना पटका-पटकी भेल रहैन, बुझू जे तहिना दुनू गोरेक बीच, माने महापात्रो आ ठकाइओ ठाकुरकेँ भेलैन।”

एकाएक श्रीकान्त भाइक मनमे उठलैन, बटैया हिस्सा तँ 1888 इस्वी सँ 1903 इस्वीक बीच अंगरेजेक कएल सर्वेमे सिकमी बटेदारक नाम दगा गेल आ कानूनो बनल, मुदा श्राद्ध कर्मक तँ कोनो नक्शा-खतियान नइ अछि, तँए कनी दिक्कत तँ अछिए। ओना, कोनो रस्ताक एक गामक सीमाक अन्त होइते दोसर गामक सीमा शुरू भऽ जाइए, तँए असम्भव नहियेँ अछि। मुदा गामोक तँ समाज समाजे छिया, गाछ परक घोरन जकाँ जखन पकड़त माने काटत, तखन भलेँ अपने किए ने अधडरेरेपर सँ टुटि जाए मुदा मुँहक हवक देहमे धेनहि रहैए। पाप-पुन कहियौ आकि धर्म-अधर्म, झूठ-सच कहियौ आकि दिन-राति, सबहक गति दू-दिशिया अछिए, मुदा अही दुनू गतिक बीच ने मनुक्ख अपन रास्ता बनबैत जीवनक धार पार करै छैथ। श्रीकान्त भाय बजला- “जखन महापात्रो आ ठकाइओ ठाकुर

पटका-पटकी करए लगला तखन ओइठामक लोक सभ तमाशा देखैत रहैथ आकि जखने बात-चीत माने लेन-देनक हिसाब-बारी, शुरू भेल तखने ने बीच-बचाउ करितैथ।”

गुलटेनक मनमे जेना भीतरे-भीतर खुशी होइत रहै तहिना चेहराक रंग-रूप सेहो चमैकिये रहल छेलइ। गुलटेन बाजल- “भाय साहैब, सभ दिन सुनै छी जे शिकारी अबैए, जाल बिछबैए, दाना-पानी छिड़ियबैए, लोभसँ ओइमे फँसी नहि। मुदा एक्के-दुइये फँसि जाइए सभ। यएह तँ खेल दुनियाँमे चलि रहल अछि।”

जहिना गुलटेनकेँ बुझल रहै तहिना श्रीकान्त भायकेँ सेहो अपनो काने आ लोकक मुहेँ सुनले बात छेलैन, तँए मिसियो भरि देह नइ सिहरलैन। शान्त-चित्तसँ बजला- “कनी सोझरा कऽ गुलटेन बाजह। अखन कि कोनो मंचपर ठाढ़ छह जे अलंकार-सवैया आबि बरहमासाक ढंगसँ बजबह। अखन तँ दुनू भाँइ एकठाम बैस अपना घरमे बतियाइ छी।”

श्रीकान्त भाय असथिरसँ बजला मुदा जहिना केकरो मन अगिआइए तँ नाकक साँस तेज भऽ जाइ छै, जइसँ बोली-वाणीमे उष्णता आबिये जाइए, तही स्वरमे गुलटेन बाजल- “भाय साहैब.! आइये नहि, अदौसँ समाजक बीच बोलीमे चलैन आबि रहल अछि जे श्राद्ध-कर्मक दैछनामे दसअना महापात्रक आ छहअना नौआक माने हजामक हिस्सा छिऐन। मुदा आइ जे लाखक कारोबार क्रिया-कर्ममे चलि रहल अछि, तइमे नौआकेँ की हिस्सा भेटै छैन।”

❑ दसअना छहअना

❑❑❑

❑❑

❑

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक

रचना संसार

(कथा, कविता, गीत, एकांकी, नाटक, उपन्यास सहित)

उपन्यास- 01. मौलाइल गाछक फूल, 02. उत्थान-पतन, 03. जिनगीक जीत, 04. जीवन-मरण, 05. जीवन संघर्ष, 06. नै धाड़ैए, 07. बड़की बहिन, 08. भादवक आठ अन्हार, 09. सधवा-विधवा, 10. ठूठ गाछ, 11. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 12. लहसन, 13. पंगु, 14. आमक गाछी, 15. सुचिता, 16. मोड़पर, 17. संकल्प, 18. अन्तिम क्षण, 19. कुण्ठा, 20. सुनयना बेटी।

एकांकी- 21. कल्याणी, 22. सतमाए, 23. समझौता, 24. तामक तमघैल, 25. बीरांगना।

नाटक- 26. मिथिलाक बेटी, 27. कम्प्रोमाइज, 28. झमेलिया बिआह, 29. रत्नाकर डकैत, 30. स्वयंवर।

आलेख- 31. अवतारवाद, 32. संस्कार आ संस्कार गीत, 33. वर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाजक संघर्ष, 34. अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन गुवाहाटी, 35. सगर राति दीप जरयक 100म कथागोष्ठीक मादे, 36. वेब प्रोग्राम, 37. महाकवि लालदास, 38. भाय राजनन्दन लाल दासजीक जीवन यात्रा, 39. मैथिली भाषाक दशा ओ दिशा, 40. उपन्यासमे ग्रामीण चित्रण।

पद्य (गीत/कविता)- 41. मन-मणि, 42. चल रे जीवन, 43. धोब घाट, 44. सासु-पुतोहु वार्ता, 45. बौड़ाएल बटोही, 46. अपनेपर हँसै छी, 47. धोबि पाट, 48. साँझ, 49. सात्त्विक भाव, 50. दिव्य शक्ति, 51.

उड़ियाएल चिड़ै, 52. रणभूमि, 53. सान-धार-धारा, 54. पपीहाक गीत, 55. विषधरक बीख, 56. मिथिला केहेन, 57. मौसमक मुस्की, 58. आशा, 59. आँखि, 60. मधुरस, 61. बीआ, 62. महजाल, 63. बाट, 64. डभियाएल डगर, 65. लज्जैत, 66. गीत, 67. गंग स्नान, 68. फनकी, 69. सभ किछु छै जालेमे, 70. गंगा नहाइ, 71. गोधन पूजा, 72. माटिक फूल, 73. झगड़ा, 74. नजैर, 75. कमलाधार, 76. बाल कविता, 77. विभूत, 78. झूठ-साँच, 79. नव दुनियाँ, 80. पुरुषार्थ, 81. सरस्वती वन्दना, 82. भीड़-भार, 83. सरस्वती हमर, 84. अगहन, 85. केना मेटत गरीबी, 86. संघर्ष, 87. साँझ-भोर, 88. समय, 89. जिनगीक मोड़, 90. अकलबेड़ा, 91. धूप-छाँह, 92. माए, 93. साथी, 94. घरक लोटिया बुड़ले अछि, 95. जुग बदलल जमाना बदलल, 96. फँसरी, 97. गरीबी, 98. दबाइए रोग, 99. मुँहक झालि, 100. किछु सीखू किछु करू, 101. पत्नी, 102. चेतन चाचा, 103. पौरुष, 104. घोड़ मन- 1, 105. घोड़ मन- 2, 106. घोड़ मन-3, 107. घोड़ मन- 4, 108. अलकक चान, 109. शिशवोनी, 110. फगुआ, 111. शील, 112. प्रिय, 113. अपनेपर, 114. डायरी, 115. गाछक रंग बदैल रहल छै, 116. मुँहक हँसी केहेन, 117. झोंक जुआनी झोंकए, 118. बैसले-बैसल नाचि, 119. गुमकीमे वौआए, 120. भूत बनि भुतियाएल, 121. सुखले मे सभ पिछैड़ रहल छै, 122. दीनक दिन केना, 123. कोढ़ पकैड़, 124. जाल समाज, 125. मीत यौ, देहक पानि, 126. आश प्रेम संग, 127. विषय दस, 128. धर्मक फूल, 129. किछु ने करै छी, 130. अपने पाछू, 131. उठी-बैसी, 132. गर-मुड़, 133. मनक बेथा, 134. रहल नै, 135. पकैड़ समय, 136. सतरंग ऐ, 137. दुनियाँक जेहने, 138. चढ़ि अन्हार, 139. एक विष, 140. पेटक ताप, 141. जेहेन मुँह, 142. धार संग नाह, 143. मन मशीन, 144. खट-मीठ, 145. झोंकमे, 146. पबिते पैग, 147. हेल-मेल जाधैर, 148. कौशल जखैन कोसल बनै छै, 149. उमकीमे उमैक, 150. जिनगीक कुंज, 151. सत-चित, 152. केकरो फूल,

153. काज पसैर, 154. धार बीच, 155. फेरो हम, 156. रंगिते काजक, 157. चोरकट चालि, 158. डुमा-डुमी, 159. छाती चढ़ि, 160. ससुरामे जा कऽ धीया, 161. जिनगीक ताक, 162. गोर मुँह, 163. कतरा आम, 164. सुखल पोखरिक, 165. श्रोता कहि, 166. जड़ि जंजालक, 167. उगिते लाज, 168. ओन्हा चालि, 169. गिरैत घर, 170. अना गाहिंस, 171. सुखल पोखरिक, 172. लत्ती जेना, 173. पाटि, 174. गोहि बनि, 175. जेहेन जे, 176. चेत चेता, 177. अन्हर जाल, 178. डायरीक, 179. बरहबटू, 180. चोटी छुबए, 181. खेल-खेलाड़ी, 182. ककोड़बा, 183. सोर बनि, 184. सेज-सिंगार, 185. जएह लूरि, 186. जोति हर, 187. हर हलक, 188. परदेश जेतै, 189. ओज ओझरी, 190. पानि बीच, 191. बंसी धार, 192. जिनगी जखन, 193. राति-दिन, 194. तेहरौनी, 195. गेल उमरिया, 196. कर-करनाम, 197. मनुख कहाँ, 198. चान कौसिकीय, 199. घट-घट, 200. ओल ओड़ि, 201. निरजन वन, 202. हरबाह, 203. हर हलक, 204. सालक विदाइ, 205. मोनि मन, 206. सेड़ाइते, 207. आँखि मिचौनी, 208. अलकक चान, 209. समाज सजल, 210. सभ मिलि, 211. सोच सकार, 212. अबिते अगहन, 213. उपजल खेत, 214. धूल चरण, 215. उनटन, 216. जान विचार, 217. चालैन-सूप, 218. मरम देखि, 219. वेद-भेद, 220. भक-इजोतमे, 221. जेठुआ गरे, 222. निर्जन वन, 223. छगुन्तामे, 224. पड़ल छी, 225. सुआगत की लए, 226. सुआगत अपनेक, 227. वृद्ध केना, 228. समय केर, 229. भगवती गीत, 230. हाल-बेहाल, 231. शीला शील, 232. रंग सियाही, 233. दिन घटतै, 234. उठिते आगि, 235. छप्पर किए, 236. गामसँ किए, 237. बेढब रूप, 238. संग जिनगी, 239. सबहक जिनगी, 240. सुन मैया गे, 241. पकैड़ तान, 242. भोरे कनी जगा देब, 243. पकैड़ पग, 244. संच-मंच रहए कहाँ दइए, 245. ओस बनि, 246. बाढ़िमे सभ, 247. हेराएल-ढेराएल, 248. मीत यौ अहींकेँ कहै छी, 249. अजीब-अजीब, 250. अपने ताले, 251. पग-पग, 252. मीत यौ, 253. निरमोही बौआ, 254. अपना गतिये,

255. भजार यौ, 256. हे बहिनी, 257. हे बहिना, 258. सुक्खक अतृप्त, 259. नढ़ड़ा हेल हेलै छी, 260. अहीं कहू, 261. चलू उचितपुर देश, 262. कानि कलैप, 263. बुधिये बाट, 264. जुग-जुग, 265. घात लगौने, 266. देहमे नमहर, 267. अपन बल, 268. जीवन धार, 269. लाजे मेटा गेल, 270. खढ़ पोस पानि, 271. परता माटि, 272. शिकारी, 273. जीवन, 274. जिनगीक बीच जिनगी, 275. दिन रातिक खेल, 276. सतबेध, 277. किछु ने बुझै छी, 278. गुरुत्तर, 279. जिनगीक मोड़, 280. मरहन बाट, 281. कविता, 282. घाट-बाट, 283. चलैत पंखाक, 284. सुमति-कुमति, 285. हँसि हंस, 286. खचरमणि, 287. किसानक देश, 288. भारत, 289. जिनगीक संगीत, 290. सुगति, 291. संगीत, 292. ब्रह बाट, 293. रस्तेमे लसका गेलिऐ, 294. एक दस मंत्र छै, 295. वंचित धार, 296. पाइक मोल, 297. हे दुनियाँक केर भाग-विधाता, 298. कलेससँ कलैशते भैया, 299. चुनौती, 300. मानव गुण, 301. छुटि गेल, 302. मरल घाट, 303. हल्लुक काज, 304. बीघा भरि चास-बास, 305. पट्टा छीमी, 306. बदरीहन, 307. बालि वध, 308. अनेरुआ वन, 309. फँसरी, 310. विचलित मन, 311. गुड़ घाव, 312. एकटा बताह, 313. हुसि गेल, 314. अखड़ा जिनगी, 315. बिटगरहा, 316. बाल गीत, 317. गाछी भुताहि, 318. अंडीक छाहैर, 319. परदेशी, 320. अन्हराएल छी, 321. ओ दिन, 322. सती-वेश्या, 323. दूजा भाव, 324. जीबैले लड़ए पड़ै छै, 325. पगलखना, 326. बाढ़िक सनेस, 327. अगो-लोढ़ा, 328. हथियाक झटकी, 329. रहसा चौरी, 330. बेरोजगारी, 331. लीढ़ी पोखैर, 332. बकरी भेराड़ी, 333. महगी, 334. जरनबिछनी, 335. नव-फल, 336. पू-भर, 337. चौरीक, 338. धनकटनी, 339. किसान, 340. टुटैत जिनगी, 341. कविता, 342. बुड़िबकी, 343. गाछी भुताह, 344. वोनक आगि, 345. बीतल बर्खक विदाइ, 346. संगी, 347. बेथा, 348. धब्बा, 349. पितृपक्षक भोज, 350. ठनका, 351. झपासा, 352. शिवचरन, 353. चौरचनक छाँछी, 354. भरदुतिया, 355. फुसि, 356. चिक्कैन माटि, 357. झारू-बाढ़ैन,

358. मेवाक फल, 359. चपरासी भाय, 360. नोत, 361. लटुआ, 362. एकैसम, 363. सदीक देश, 364. मधुमाछी, 365. जुआनी, 366. तरंग, 367. ऐ पढ़बसँ मुरखे रहितौं, 368. कामधेनु, 369. जिनगीक कुंज, 370. सत-चित, 371. पड़िते पएर पवन पोखैर, 372. अहाँ किए रूसल छी, 373. घट-घट घोंट, 374. जहिना बारह दिन बजै छै, 375. दुनियाँ घोड़ाएल छै निशाँमे, 376. बहैल बहील बहिला कहै छै, 377. हलचल जिनगी हलैस-कलैश, 378. टकटक ताक, 379. भीख मांगि (नचारी) , 380. बकरी खुट्टी, 381. अमरा अँचार, 382. घरे-घरे, 383. बेटी किए, 384. मनक भाव, 385. सिरजन सिर, 386. कलश पल्लव भरैत रहै छै, 387. मारी-बेमारी, 388. हिम-गिरि, 389. भुवन भुचल, 390. खुजिते आँखि, 391. मुड़जन मनुहर, 392. गोधुलि-बेल, 393. दौड़ि-दौड़, 394. चोट-चाट, 395. चाइन चेन, 396. दीनक दोख, 397. सगर समनदर, 398. चप-चप चपा गेलिऐ, 399. संगे-संग, 400. आभा मण्डल, 401. संग जिनगी खेल होइत एलैए, 402. नजैर कहाँ बदलल, 403. देख टराटक पड़ल रहै छी, 404. माइक माइपन, 405. इच्छा- 01, 406. इच्छा- 02, 407. मन मथनी, 408. केकरा कहब नवदिन सगुन?, 409. अप्पन दिन कहिया औतै, 410. बलकस चास, 411. अपनेपर हँसै छी, 412. केकरा कहब नव दिन सगुन, 413. बन्ध-बन्धन, 414. नँगरकट घोड़ा, 415. गीत, 416. फुलबतिया, 417. करैलाक फूल, 418. गिरहकट्टा, 419. पैछला गणित, 420. कॉमन सेन्स, 421. चास-बास, 422. ढहल गाम, 423. सघन वन, 424. मानब धारण धड़ैत एलैए, 425. नजैर-नजैरमे तफरका भैया, 426. अपने मन ठकैए, 427. केकरो गारि सुगारि, 428. साँझ-भोर, 429. समाजक बान्ह छेक, 430. दियादी, 431. ओइ पोखरिक मानियेँ की?, 432. नवका बास, 433. जिनगीमे जे, 434. हे बहिना केनाकऽ जेबै ओइ, 435. घरिया, 436. हे आशुतोष, 437. मनक फूल, 438. फूल मनक, 439. बेकाल-काल, 440. जेहेन जेकर, 441. समय-साल, 442. संग मान-समान, 443. जेहने शक्तिक रंग रहै छै, 444. खेल खेलौना, 445. प्रेमी पिया, 446. बिसैर गेल, 447.

आबो कनी विचारू, 448. सुआगत अपनेक, 449. वृद्ध केना, 450. समय केर, 451. भगवती गीत, 452. आनक बोझ, 453. अड़कन-मरकन, 454. हाल-बेहाल, 455. आजादीक उमंग, 456. बुधिये भोतिया गेल, 457. घर-घरा, 458. जा बौआ, 459. लत-लत लत्ती, 460. पीड़ित रीति, 461. अकार-सकार, 462. टेनशन बीच पड़ल छी, 463. आन्ही-अन्हर, 464. सुफल काज, 465. मनक बात हेरा गेल, 466. नचैत मोन पड़ाइत गेल, 467. मौसम बदैल गेल, 468. दोहरा-दोहरा पुछबे करतै, 469. भाव-अभाव कुभाव बनैत गेल, 470. संग छोड़ि पड़ाइत गेल।

कथा- 471. भैंटक लावा, 472. बिसाँढ़, 473. पीरारक फड़, 474. अनेरुआ बेटा, 475. दूटा पाइ, 476. बोनिहारिन मरनी, 477. हारि-जीत, 478. ठेलाबला, 479. जीविका, 480. रिक्साबला, 481. चुनवाली, 482. डीहक बटबारा, 483. भैयारी, 484. बहिन, 485. घरदेखिया, 486. पछताबा, 487. डाक्टर हेमन्त, 488. बाबी, 489. कामिनी, 490. स्रष्टाक समग्र रचना, 491. प्रतिभा, 492. मर्म, 493. अधखरूआ, 494. समैयक बेरबादी, 495. पहिने तप तखनि ढलिहेँ, 496. खलीफा उमरक सिनेह, 497. जखने जागी तखने परात, 498. अस्तित्वक समाप्ति, 499. खजाना, 500. उग्रघारा, 501. बेवहारिक, 502. समर्पण, 503. उत्थान-पतन, 504. देवता, 505. पाप आ पुण्य, 506. परख, 507. आलसी, 508. प्रेम, 509. हैरियट स्टो, 510. बुझैक ढंग, 511. श्रमिकक इज्जत, 512. वंश, 513. तियाग, 514. सद्विचार, 515. साहस, 516. बरदास, 517. भूल, 518. धैर्य, 519. मनुखक मूल्य, 520. मदति नै चाही, 521. मेहनतिक दरद, 522. मैक्सिम गोर्की, 523. मूलधन, 524. कपटी मित, 525. भीख, 526. भगवान, 527. एकाग्रचित, 528. सीखैक जिज्ञासा, 529. अनुभव, 530. आसिरवादक विरोध, 531. धर्मक असल रूप, 532. सौन्दर्य, 533. स्तब्ध, 534. एकता, 535. विधवा बिआह, 536. देश सेवाक व्रत, 537. आत्मबल-1, 538. स्वाभिमान, 539. कलंक, 540. बुलकी, 541. भद्रपुरुष, 542. झूठ नै बाजब, 543. आर्दश माए, 544. नारी सम्मान, 545. अनुशासन,

546. सादा जिनगी, 547. विचारक उदय, 548. पुष्ट इकाइसँ समर्थराष्ट बनैत, 549. डर नै करी, 550. आसिरवाद उलैट गेल, 551. रत्न गमेवाक दुख, 552. निशाँ, 553. सामना, 554. शिष्टाचार, 555. ठक, 556. पत्नीक अधिकार, 557. शिनीची सिनेह, 558. सिखबैक उपय, 559. कर्तव्यपरायन सुगा, 560. तस्वीर, 561. मितक प्रयोजन, 562. स्वार्थपूर्ण विचार, 563. संगीक महत, 564. उपहास, 565. महादान, 566. भाग्यवाद, 567. सद्वृति, 568. आश्रम नहि सोभाव बदली, 569. पुरुषार्थ, 570. नैष्ठिक सुधन्वा, 571. सद्गृहस्त, 572. सद्भाव, 573. आलस्य वनाम पिशाच, 574. स्वर्ग आ नर्क, 575. यथार्थक बोध, 576. विद्वताक मद, 577. अनन्त, 578. हँसैत लहास, 579. अनगढ़ चेतना, 580. सत्य विद्या, 581. समता, 582. जेते चोट तेते सक्कत, 583. परिष्कार, 584. कथनी नै करनी, 585. शालीनता, 586. मजूरी, 587. जीवन यात्रा, 588. ज्योति, 589. पवनक विवेक, 590. आत्मबल-2, 591. खुदीराम बोस, 592. शिष्यकेँ शिक्षेटा नै परीक्षो, 593. लौह पुरुष, 594. जंग लगल, 595. जीवकक परीछा, 596. तप, 597. उल्टा अर्थ, 598. जाति नहि पानि, 599. ऊँच-नीच, 600. पागलखाना, 601. दोहरी मारि, 602. केना जीब?, 603. नवान, 604. तिलासंक्रान्तिक लाइ, 605. भाइक सिनेह, 606. प्रेमी, 607. बपौती सम्पैत, 608. डंका, 609. संगी, 610. ठकहरबा, 611. अतहतह, 612. अर्द्धांगिनी, 613. ऑपरेशन, 614. धर्मनाथ, 615. सरोजनी, 616. सुभद्रा, 617. सोनमाकाका, 618. दोती बिआह, 619. पड़ाइन, 620. केतौ नै, 621. बिहरन, 622. मायराम, 623. गोहिक शिकार, 624. मातृभूमि, 625. भबडाह, 626. परिवारक प्रतिष्ठा, 627. फॉगु, 628. लफ साग, 629. तिलकोरक तरुआ, 630. एकोटा ने, 631. धोतीक मान, 632. साझी, 633. सतभैंया पोखैर, 634. न्याय चाही, 635. पनियाहा दूध, 636. कर्ज, 637. परदेशी बेटी, 638. मान, 639. मनोरथ, 640. कियो ने, 641. सूदि भरना, 642. जन्मतिथि, 643. इमानदार घूसखोर, 644. पटियाबला, 645. सनेस, 646. उलबा चाउर, 647. बलजोर, 648. बेटी हम अपराधी छी, 649.

बगबाइर, 650. मुइलो बिसेबैन, 651. सड़ल दारीम, 652. चुप्पा पाल, 653. मइटुग्गर, 654. शम्भुदास, 655. फाँसी, 656. कचोट, 657. काँच सूत, 658. बुधनी दादी, 659. खिलतोड़, 660. मुँह-कान, 661. अनदिना, 662. अपन काज, 663. दूरी, 664. पुरनी भौजी, 665. छुटि गेल, 666. काल्हि दिन, 667. अप्पन हारि, 668. कनफुसकी, 669. मुँहक बात मुहेँमे, 670. कनीटा बात, 671. गति-गुद्दा, 672. बिसवास, 673. कचहरिया भाय, 674. गोहाइर, 675. शिवजीक डाक-बाक्, 676. सोग, 677. पनचैती, 678. कनमन, 679. अजाति, 680. पटोर, 681. फुसियाह, 682. गति-मुक्ति, 683. चौकीदारी, 684. झगड़ाउ-झोटैला, 685. घबाह ट्यूशन, 686. दादी-माँ, 687. पटोटन, 688. मुसाइ पण्डित, 689. भरमे-सरम, 690. देखल दिन, 691. फज्झैत, 692. अकास दीप, 693. बुधि-बधिया, 694. पहाड़क बेथा, 695. उमकी, 696. बजन्ता-बुझन्ता, 697. चर्मरोग, 698. शंका, 699. ओसार, 700. छोटका काका, 701. सीमा-सरहद, 702. रमैत जोगी बोहैत पानि, 703. गंजन, 704. सजए, 705. घटक बाबा, 706. आने जकाँ, 707. दान-दछिना, 708. उड़हैड़, 709. मत्हानि, 710. मेकचो, 711. झुटका विदाइ, 712. मुँहक खतियान, 713. कोसलिया, 714. हूसि गेल, 715. पोखला कटहर, 716. सरही सौबजा, 717. तेरहो करम, 718. डुमैत जिनगी, 719. चोर-सिपाही, 720. दूधबला, 721. टाइपिस्ट, 722. समदाही, 723. बुढ़िया दादी, 724. एक धाप जमीन, 725. ओझरी, 726. मुसहैन, 727. केलवारी, 728. स्वरोजगार, 729. घूर, 730. कनियाँ-पुतरा, 731. वारंट, 732. गामक मुँह फेर देखब, 733. पेटगनाह, 734. जनक हाथे खेती, 735. मूसक घटक, 736. ग्लानि, 737. गरियबैक समय, 738. दोस्ती नै धाड़ैए, 739. कलंक, 740. भभटपन, 741. खाँटी तेल, 742. दोस्ती, 743. ओटघन पाबैन, 744. बौआ कक्काक ढौआ, 745. अठन्नी, 746. गुण, 747. गढ़ैनगर हाथ, 748. सासुरक गारि, 749. खिचड़ी मोछ, 750. पाइक मोल, 751. चोरूक्का झगड़ा, 752. अपसोच, 753. पतझाड़, 754. झीसीक मजा, 755. मति-गति, 756. रिजल्ट, 757.

अपन सन मुँह, 758. सुमति, 759. फेर पुछबैन, 760. माघक घूर, 761. खर्च, 762. अखरा-दोखरा, 763. पेटगनाह, 764. बड़की माता, 765. धरती-अकास, 766. बकठाँइ, 767. चैन-बेचैन, 768. हथियाएल खुरपी, 769. अलपुरिया बरी, 770. नीक बोल, 771. सुआद, 772. गंगा नहेलौं, 773. भोँटक गहमी, 774. भँसैत नाह, 775. पान पराग, 776. सिरमा, 777. नौमीक हकार, 778. फोंक मकड़, 779. केते लग केते दूर, 780. अभिनव अनुभव, 781. खोंटकर्मा, 782. किछु ने, 783. झकास, 784. अप्पन-बीरान, 785. सजमनियाँ आम, 786. अर्जुन रोग, 787. गरदैन कट्टा बेटा, 788. नैहराक धाड़, 789. अवाक, 790. पोखैरक सैरात, 791. दनियाँ डाबा, 792. धरम काँट, 793. पल भरि, 794. किरदानी, 795. सगहा, 796. अकाल, 797. उझट बात, 798. कर्जखौक, 799. उनटन, 800. रेहना चाची, 801. बुधनी दादी, 802. अउतरित प्रश्न, 803. हारि, 804. सोनाक सुइत, 805. मरूभूमि, 806. असगरे, 807. पुरनी नानी, 808. कटा-कटी, 809. केते लग केते दूर, 810. गलती अपने भेल, 811. चोरक चोरबती, 812. घर तोड़ि देलिऐ, 813. सजल स्मृति, 814. सनेस, 815. सए कच्छे, 816. एक मुठी घास, 817. करिछौंह मुँह, 818. पुरस्कार, 819. गावीस मोइस, 820. मनकमना, 821. घरवास, 822. समधीन, 823. चापाकलक पाइप, 824. कलम हानि कऽ, 825. लतियाएल जिनगी, 826. गामक शकल-सूरत, 827. जितिया पाबैन, 828. सुखाएल सूरत, 829. भैयारी हक, 830. ठकुआएल भुसवा, 831. खुदियाएल, 832. खटहा आम, 833. ढकरपेँच, 834. असहाज, 835. समरथाइक भूत, 836. विदाइ, 837. खलओदार, 838. मनुखदेवा, 839. उमेद, 840. गलगर भैंस, 841. जाड़ फाटि गेल, 842. सुरता, 843. असुध मन, 844. धरमूदासक अखड़ाहा, 845. ठोररंगू, 846. लगबे ने कएल, 847. उकड़ू समय, 848. चास-बास दुनू गेल, 849. चौरचनक दही, 850. अपन मन अपन धन, 851. टुटली मरैया, 852. हकार, 853. दहेजुआ गाए, 854. मेटाइत जिनगी, 855. धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!, 856. लेहाज, 857. विचार हेरा गेल, 858. ओ दिन,

859. उरीन, 860. नहरकन्हा, 861. बटखौक, 862. पसेनाक धरम, 863. जेठुआ गरदा, 864. हँसीएमे उड़ि गेलौं, 865. बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक, 866. हमर बाइनिक विचार, 867. नोकरिहारा, 868. घसवाहि, 869. तेतर भाइक कविता, 870. छूआ, 871. दोसराइत, 872. लछनमान, 873. हमर कोन दोख, 874. मौसी, 875. नटकिया गति, 876. खाए चाहैए, 877. मधुमाछी, 878. दनगर घास, 879. सझिया खेती, 880. मुफतिया माल, 881. मथाहाथ, 882. पहपैट, 883. इजोरिया राति, 884. तीन जुगिया भाय, 885. अँगनेमे हेरा गेलौं, 886. डकरा हाल, 887. जेतए जे हौउ, 888. गठूलाक गारि, 889. कनी हमरो सुनू, 890. गामक बान्ह, 891. गुड़ा खुद्दीक रोटी, 892. सीरक गाछ, 893. हरदीक हरदा, 894. जाम, 895. गण्डा, 896. हाथी आ मूस, 897. मुसरी आ घोड़ा, 898. फलहार, 899. भोरक झगड़ा, 900. क्रियाशील, 901. आइ एम शॉरी, 902. ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल, 903. मीनी भ्रष्टाचार, 904. गजपट खेती, 905. समुद्री विद्या, 906. राकशे रहि गेलौं, 907. निनिया देवीक आराधना, 908. बताहे बताह बनौलक, 909. धोखा, 910. खसैत गाछ, 911. वैष्णवी भगवती, 912. प्रीगर शत्रु, 913. एगच्छा आमक गाछ, 914. माघ नहाइले जाएब, 915. एक घोंट पानि, 916. एते दिन अपना-ले आब अनका-ले, 917. माइक वचन, 918. पान, 919. आजुक जिनगीक आइ परीक्षा, 920. शुभचिन्तक, 921. करिछौन लाली, 922. मोहरा, 923. अपन पुरखाक डीह, 924. जेना हाथी रही, 925. कठफल, 926. गामे उपैट गेल, 927. झूठे, 928. लाही, 929. परतीहा खढ़, 930. उजगी, 931. हाथक जिनगी, 932. गाछपर सँ खसला, 933. केतौ ने रहलौं, 934. अपने केलहा, 935. बत्तु, 936. कछमछी, 937. गैत-वीध, 938. दियरबा-भैंसुर, 939. एक दिन, 940. दुधियाएल बरखा, 941. गलफूलू, 942. बिटगरहा, 943. आब नइ आगि लगैए, 944. कटौज, 945. बाल बोध, 946. डभियाएल गाम, 947. एकबोलिया दादी, 948. मरियाएल मन, 949. त्राहि-कृष्ण, 950. कन्हा भँट्टा, 951. जिगेसा, 952. गुलेती दास, 953. भोलानाथ बाबा,

954. दुरकाल, 955. कलंक, 956. अड़िकट्टा चोर, 957. बगदल गाम, 958. बत्तीसोअना, 959. कचहरिया रोग, 960. दिन घटि गेल, 961. मुड़ियाएल घर, 962. गामक सुरता, 963. खतियाएल घर, 964. बात-कथा सुनौलक, 965. अनका बेर ओंघी, 966. देव उठान, 967. नमहर घरक चोरि, 968. भोरक सपना, 969. बालमण्डली, 970. धोखा केतए भेल, 971. माघक चाह, 972. भँसियाएल बाल-बोध, 973. माघक घूर, 974. पाही पट्टी, 975. बीरांगना, 976. स्मृति शेष, 977. मनकेँ फुसलबै छी, 978. चहकल विचार, 979. विदाइ-दैछना, 980. बीरांगना, 981. पकिया चेला, 982. कान फुटल कप, 983. वर्थ डे, 984. जानक मोल, 985. गामक कटान, 986. कर्ज, 987. बेटीक लिलसा, 988. अपन गारि अपन दुआरि, 989. बेटीक पैरुख, 990. बेटीक कुभेला, 991. अपन रोपल गाछी भुताहि, 992. बलधकेल कटौज, 993. जारैनक दुख मेटा गेल, 994. पढ़ल सुगा बौक, 995. हरवाहि, 996. क्रान्तियोग, 997. उचितवक्ता, 998. खेतक बँटवारा, 999. विघटन, 1000. टुटल मनक जुटान, 1001. बाबा बेलेश्वरनाथ, 1002. भुतलग्गू आकि भविसलग्गू, 1003. मर्माहत, 1004. गुणहीन, 1005. समझौता, 1006. जेकर चुन तेकर पुन, 1007. त्रिकालदर्शी, 1008. नमहर फेरा, 1009. आशापर पानि पड़ल, 1010. कोढ़िया सरधुआ, 1011. बेटपन, 1012. छातीक हार, 1013. उमेरक लेहाज, 1014. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 1015. पुरान साड़ी, 1016. गाम बिसैर गेल, 1017. ऐँठ साड़ी, 1018. किछु ने फुरैए, 1019. महिरम, 1020. बेर परहक भदवा, 1021. सड़क-कातक खेत, 1022. दोहरी हाक, 1023. पाइक इज्जत, 1024. सेहन्ता, 1025. राक्षसक झड़, 1026. बेरपर, 1027. केकरा-ले केलौं, 1028. स्वाभिमानी जिनगी, 1029. बाबाक बाग-बगिया, 1030. अब-तब, 1031. अगिलह, 1032. कुकुरपन, 1033. हेराएल जिनगी, 1034. आशापर पानि फेर गेल, 1035. देखल दिन, 1036. इज्जत उतैर गेल, 1037. संकट, 1038. एकतीस मार्च, 1039. गेल माघ उनतीस दिन बाँकी, 1040. बापक चलैत, 1041. बेटाक चलैत, 1042. प्रवल इच्छा,

1043. ठका गेलौं, 1044. हारि-जीत, 1045. पनचैती पनपना गेल, 1046. कुघाटक मृत्यु, 1047. एक तम्मा सिदहा, 1048. कियो ने पुछैए, 1049. केकरो कियो ने, 1050. गपक पियाहुल लोक, 1051. उदय-प्रलय, 1052. हमरा नीक नहि लगैए, 1053. भारीपन भार बनि गेल, 1054. मानसरोवरक यात्रा, 1055. करतब, 1056. अनचोकक अन्हार, 1057. अपन बुधियारी अपने खेलक, 1058. चटवाह, 1059. भगैतिया, 1060. अधमरू साँपक फुफकार, 1061. यादास्त, 1062. हमर मेला चोरि भऽ गेल, 1063. गरदैन हलैल गेल, 1064. दिवालीक दीप, 1065. हारि केना मानब, 1066. अप्पन गाम, 1067. परिछन, 1068. झूठ सपना, 1069. जिनगीक अन्तिम फल, 1070. चरणबाबूक टैक्सी, 1071. पुस्तकालय, 1072. विचारभेद, 1073. एकरवा बानर, 1074. फकीरबा स्थान, 1075. रंगमे भंग, 1076. खिलतोड़ भूमि, 1077. बैगनक बगान बनरा गेल, तूँ मुँह तकै छह, 1078. मटरक अजोह दाना, 1079. फुइसिक रग्गड़, 1080. उखमज, 1081. एकभग्गू बेटा, 1082. अगुताइ भेल, 1083. थैंक्यू पापा, 1084. किसुनपुराक हाट, 1085. धनखेतीक बैगन, 1086. चितवनक शिकार, 1087. बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं, 1088. धुआ साड़ी, 1089. राजरोग, 1090. संकल्प, 1091. एकटा नमहर दुख मेटा गेल, 1092. काजक मोल, 1093. एतए बसव कठिन अछि, 1094. स्वनिर्मित जिनगी, 1095. कपटलालक मृत्यु, 1096. गामक ढहल समाज, 1097. लजगर लोक, 1098. खरिहाँन उपैट गेल, 1099. पगलपन, 1100. छलाननक सराध, 1101. छाती बज्जर केलौं, 1102. नाँहकमे दोख, 1103. सग्गा पिऔज, 1104. गाछसँ नमहर फड़, 1105. जिनगीमे जान आएल, 1106. जे संग नइ औत ओकरा संग नइ जेबै, 1107. चौरस खेतक चौरस उपज, 1108. सिकिया नेता, मजदूर दिवस, 1109. मुँह खुजिते नाक कटि गेल, 1110. जेकरे भर तेकरे डर, 1111. ललियाएल चेहरा करियाएल मन, 1112. पुरुखक भर, 1113. भकमोड़मे पड़ि गेलौं, 1114. अपन इमान मरि गेल, 1115. गामक रूप बदैल देब, 1116. कुभेला, 1117. देखौंस, 1118.

समयसँ पहिने चेत किसान, 1119. काजक मेहपन, 1120. पनरह किलोक कदीमा, 1121. फेर नढ़रो बेल तर जेती, 1122. काजक धुनि, 1123. सोरहामे सुर्रा लगि गेल, 1124. अगराही, 1125. जेकरे-ले चोरि केलौं सएह कहैए चोरा, 1126. भौक, 1127. मनतरक पावर, 1128. हाल-चाल, 1129. अधमरु साँपक डँस, 1130. के मानत?, 1131. दियादीक फेड़, 1132. वाह रे आदत, 1133. कटबी सुइद, 1134. तिलकौआ छत्ता, 1135. अपने जिनगी भार बनि गेल, 1136. कलेश, 1137. गामक आशा टुटि गेल, 1138. आब इज्जत नइ बँचत, 1139. अँगनाक बीरार, 1140. भेँट-घाँट, 1141. कोसा, 1142. दहेजक गाए, 1143. चलती, 1144. तीन बुड़िवान, 1145. एकाधिकारी जाति, 1146. अपन करखन्ना, 1147. लड़कपन, 1148. कुदृष्टि, 1149. हकार, 1150. दलखिच्चड़मे घी, 1151. दोहरी दहार, 1152. पसेनाक मोल, 1153. बुढ़ापा, 1154. पुरना घराड़ी, 1155. जगरनथिया भोज, 1156. कृषियोग, 1157. काजक रोप, 1158. खटसमाद, 1159. जीबठपन, 1160. गोटी लाल, 1161. अपनाकेँ चिन्हैत चलिहह, 1162. दहेज, 1163. जेहेन मति तेहेन गति, 1164. केते लग केते दूर, 1165. अपन कर्तव्य आकि उपकार, 1166. जिनगी भौर भेलह हेन, 1167. वसन्त पंचमी, 1168. चुटका सुतरल, 1169. हारल चेहरा जीतल रूप, 1170. अग्नि परीछा, 1171. आसीरवचन, 1172. दहिबरी, 1173. सघन बन, 1174. हुसैत लोक, 1175. हुसि गेलौं, 1176. झूठक झालि, 1177. दुष्टपन, 1178. रहै जोकर परिवार, 1179. परिपक्व निरलज, 1180. अप्पन काज अपने चिन्हू, 1181. लजाउ काज, 1182. सीमावद्ध जीवन, 1183. कर्ताक रंग कर्मक संग, 1184. जिनगीक हिसाब, 1185. अपना जनैत, 1186. सुदृढ़ जिनगी, 1187. मुराम जगह, 1188. गामक सूरत बदैल गेल, 1189. दोसर रस्ता नहि, 1190. विचारधाराक भथान, 1191. परिवार बिलैट गेल, 1192. अनचोकक इजोत, 1193. केलहा सभ पानिमे गेल, 1194. पएर तरक धरती डोलि गेल, 1195. जबुरिया कागज, 1196. बेटाक बिआह, 1197. जीवनमे जान आएल, 1198.

पोसलाक फल, 1199. अन्तिम परीक्षा, 1200. गाम आब ओ गाम रहल!, 1201. जिनकर जीत तिनकर माला, 1202. नवका लोक, 1203. काजक उत्तर काज, 1204. घरक खर्च, 1205. समाजक भागे, 1206. बाबा हाथक कोदारि हल्लुक, 1207. परिवारक विघटन, 1208. हारल विचार, 1209. परिवारे गजपटा गेल, 1210. समयक थपेड़मे, 1211. की सत्त की फुइस?, 1212. कुभाँज समयक भाँजमे, 1213. देखल गाम, 1214. अपना ले, 1215. तीन धक्का, 1216. अजीब खेल, 1217. नीक ठकान ठकेलौं, 1218. केकरो भरोस, 1219. बाड़ी भेल धनहर, 1220. सुदृढ़ जीवन, 1221. सागवानक बागवानी, 1222. बिनु खुट्टाक गाए, 1223. जीवनक कर्म जीवनक मर्म, 1224. घरैया मूस, 1225. टुटि कऽ खसि पड़लैन, 1226. मृत्युसजियापर पड़ल विवेक बाबा, 1227. संचरण, 1228. जिनगीसँ प्रेम, 1229. परिवारे बगैद गेल, 1230. जिनगी पिछैड़ गेल, 1231. श्रमहीन, 1232. समुद्रलंघन, 1233. परिवारक भार, 1234. हीन-हीनाइत विवेक, 1235. चेहराक निखार, 1236. भरि मन काज, 1237. विचारे मरि गेल, 1238. मृत्युक भय मेटा गेल, 1239. घरक बात, 1240. अप्पन दलान, 1241. कंजूसपन, 1242. आएल आशा चलि गेल, 1243. अकारण, 1244. अछोप, 1245. अप्पन बेइमानी, 1246. उनटन, 1247. अर्द्धांगिनी, 1248. बहवाँइर, 1249. पाक मास्टर, 1250. साइंस टीचर, 1251. इज्जत लऽ लेलक, 1252. निसगर पान, 1253. विरोध, 1254. जीवन दान, 1255. बाग-बगिया, 1256. विश्वास पात्र, 1257. विचारक टिटकारी, 1258. लत, 1259. जीवन खटाइमे पड़ि गेल, 1260. कर्ज, 1261. बहादुरी, 1262. हमरो खगता छै, 1263. सपना, 1264. संगे-संग एलौं संगिया मरि गेल हम भुतिआइ छी, 1265. उवाणि, 1266. विचारक प्रबलता, 1267. अपन रचित रचना, 1268. थाहल संगी, 1269. आत्मबल, 1270. विश्वासहीन, 1271. बुलन्दी, 1272. अप्पन साती, 1273. खिच्चड़ि, 1274. भंगतराह कवि, 1275. भंगतराह कवि, 1276. कनियेँ-मनियेँ पूँजी, 1277. पुरुखढौह, 1278. सिमानक झगड़ा, 1279. जिनगी भार बनि गेल,

1280. परिवारक योग, 1281. मनुक्ख खौक, 1282. साहित्यकारक विवेक, 1283. भाषाक बेथा, 1284. बुझबे ने केलिऐ, 1285. जीवनक सम्बन्ध, 1286. गैंचाह लोक, 1287. जिनगीकेँ पटैक भगलौं, 1288. अन्तिम आशा, 1289. गजपट मारि, 1290. कन्हजोड़, 1291. अनहोनी, 1292. होनी, 1293. भवितव्य, 1294. ओसचट बीमारी, 1295. पुत्र परीक्षा, 1296. अप्पन मन बुझाएब, 1297. जड़ौर, 1298. अलोपित, 1299. कुमहरक बतिया, 1300. सिमानक आड़ि, 1301. नब बनक नब फल, 1302. सुमारक, 1303. अन्तिम भेँट, 1304. अनहरिया, 1305. निरन्तर, 1306. शॉर्टकट रास्ता, 1307. अपेछा टुटि गेल, 1308. आब नइ जीब, 1309. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल, 1310. धुरफन्ना लोक, 1311. घरदेखी, 1312. बासभूमि, 1313. इज्जतपर पड़ि गेल, 1314. अहीं जीतलौं, 1315. गामसँ गाए उपैट गेल, 1316. भारक बड़बड़िया, 1317. रूपेँ बदैल गेल, 1318. वंशक धर्म, 1319. उपराग, 1320. केकरा भगाउ आ केकरा बसाउ, 1321. खीरा लत्तीमे रोजगार, 1322. टकुआटान, 1323. पोस्टमार्टम, 1324. ऐ सालक नाह बुड़ि गेल, 1325. सामंजस्य, 1326. महींसवारक गाम, 1327. दसअना छहअनाए, 1328. वाह रे हम, 1329. एक जूम तमाकुल, 1330. चपरासीक गाम, 1331. बनरफाँस। ❑❑

Notes

नाम : उमेश मण्डल, **जन्म :** 31 दिसम्बर 1980, बेरमा, जिला- मधुबनी (बिहार), **माता-पिता :** श्रीमती रामसखी देवी, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, **पत्नी :** श्रीमती पुनम मण्डल, **सन्तान :** पल्लवी मण्डल, तुलसी कुमारी, मानव अनीश मण्डल, **शिक्षा :** प्रारम्भिक शिक्षा ग्रामीण माहौलमे। बी.ए. (प्रतिष्ठा) 2001 इस्वीमे, एल. एन. जनता कॉलेज- झंझारपुर (मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा) सँ, एम.ए. 2012 इस्वीमे आ राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) 2015 इस्वीमे तथा शोध–पीएच.डी.–'मैथिली साहित्यमे जगदीश प्रसाद मण्डलक रचनामे परिवर्तनक स्वर', 2021 इस्वीमे, बी.आर. अम्बेदकर बिहार विश्व विद्यालय- मुजफ्फरपुरसँ। **प्रकाशित कृति :** (1) निश्तुकी (पद्य संग्रह, 2009), (2) संस्कार गीत (मिथिलाक सभ जाति-धर्मक लोकमे प्रयुक्त मैथिली लोकगीतक सङ्कलन, 2010)। (3) 'मिथिलाक जीव-जन्तु', (4) 'मिथिलाक वनस्पति' आ (5) 'मिथिलाक जिनगी' (डिजिटल सचित्र ऑनलाइन संस्करण, 2011)। (6) विदेह मैथिली लघुकथा संग्रह, (7) विदेह मैथिली बीहनि कथा संग्रह, (8) विदेह मैथिली पद्य संग्रह, (9) विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध समालोचना, (10) विदेह मैथिली नाट्य उत्सव तथा (11) विदेह मैथिली शिशु उत्सव (संग सम्पादन कार्य, 2012 इस्वीमे)। (12) टुटैत मनक जुड़ाव (कथा संग्रह, 2018), (13) पंचदेव (100 खण्ड-ग्रन्थ, श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक बीछल कथाक सङ्कलन, 2018), (14) भारतीय मुसलमान आ भारतीयता (हिन्दीसँ मैथिलीमे अनुवाद, 2018, मूल लेखक- श्री गीतेश शर्मा), (15) दुध-पानि फराक-फराक (कथा-पाण्डुलिपि-छाया-संस्करण, 2018), (16) देवाश्रम (35 खण्ड-ग्रन्थ, विचारोत्तेजक पाम्फलेट सङ्कलन, 2019), (17) मुक्तपुरुष (शोध आलेखक संग्रह, 2021)। (18) हेन्डबुक सँ फेसबुक धरि (2021), (19) समस्या सँ समाधान धरि (2022), (20) निर्विकल्प (2022), (21) अभ्यन्तर (2022), (22) जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी (2022) तथा (23) कियो करए आप-ले माए-ले ने बाप-ले (2023)- विचारोत्तेजक गद्यांश सङ्कलन। (24) जगदीश प्रसाद मण्डलक काव्य संसार (अनुसन्धान विश्लेषण, 2022), (25) अन्तर्ध्वनि (कथा संचयन, 2023)। **संस्थापक :** पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल), **योगदान :** प्रसिद्ध साहित्यकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक 09 दर्जन पोथीक मुद्रण एवम प्रकाशनक अलावे अनेको अन्य रचनाकारक सात दर्जनसँ ऊपर ग्रन्थक अक्षर संयोजन अवैतनिक। 'सगर राति दीप जरय'क 80म, 88म, 100म (शतांक) आ 107म गोष्ठीक संयोजनक अलावे दर्जनो परिचर्चा-संगोष्ठीक आयोजन। ठाम-ठाम दर्जनो मैथिली पोथी-प्रदर्शनी। **सम्मान/पुरस्कार :** (1) विदेह युवा पुरस्कार (2013 इस्वीमे, निश्तुकी पद्य संग्रह लेल), (2) सहयोग पुरस्कार (2021 इस्वीमे, शकुन्तला-भुवनेश्वरी मैथिली-संस्कृत सम्वर्द्धन न्यास-हैदरावादसँ) तथा (3) लोकचिन्तन विशिष्ट सेवा सम्मान- 2022

स्थायी पता: ग्राम+पोस्ट- बेरमा, वार्ड नं.: 03, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी, बिहार। **सम्प्रति :** तुलसी भवन, जे. एल. नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार- 847452, **मो.न.:** +91 9931654742, (2) +91 6200635563, **ई-पत्र:** *umeshberma@gmail.com*

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

मूल्य- 199/-

ISBN: 978-93-93135-44-5

9 789393 135445

कियो करए आप ले माए ले ने बाप ले (विचारोत्तेजक गद्यांश) संकलन/सम्पादन : डॉ. उमेश मण्डल पल्लवी प्रकाशन